हीरेकी खानि

(एक सुप्रसिद्ध अङ्गरेज़ी उपन्यासके आधार

काले अफरिकाकी एक बड़ी हृ

काली घटना

सेवक

हीरेकी खानि ।

(एक सुप्रसिद्ध अङ्गरेजी उपन्यासके आधारपर)

भयानक अफरिकाकी एक बड़ी ही भयानक घटना ।

काशी
मानूरगञ्ज, 'हिन्दी-नावेल'के अपने 'हिन्दी-प्रेस'
द्वारा मुद्रित और प्रकाशित ।
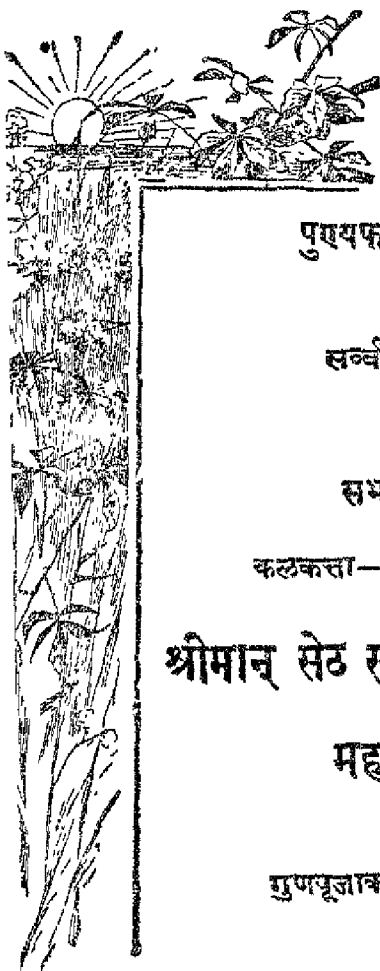
पुण्यफलस्वर्गके इन्द्र

सर्व्वगुण-आधार

सभीके प्यारे

कलकत्ता—६१ हेरिसनरोडके

श्रीमान् सेठ सूरजमल नागरमल

महाशयकी

गुणपूजाका एक छोटासा

फूल।

प्रस्तावना ।

यह उपन्यास एक ऐसे अङ्गरेजी उपन्यासके आधारपर लिखा गया है, जिसकी सारी दुनियाने बड़ी ही भक्तिके साथ पूजा की है। हर साल इसके सैकड़ो संस्करणमें लाखों प्रतियां छपीं और हाथोहाथ विक चुकी हैं। भारतकी और किसी भी भाषामें यह उपन्यास अबतक अनुवादित नहीं हुआ है। हिन्दीमें इस उपन्यासके आधारपर यह पहली पुस्तक है।

इस उपन्यासमें जिस कुकुवाना देशका हाल लिखा गया है, वह अब वही रहस्यमय कुकुवाना देश नहीं। युरोपीयोंके गोली-गोलेने उस देशका दर्वाजा खोल दिया है। अङ्गरेजी इतिहासके 'मातावेली' ही इस उपन्यासके कुकुवाने हैं। सुलेमानकी खानि भी खुल गई है। युरोपीय उससे सोना भी निकालते हैं; हीरे भी निकालते हैं। कुकुवाने बैठे-बैठे मुंह देखते और मजदूरी करते हैं।

इस उपन्यासका युरोपीयोंका अदम्य उत्साह; वीरत्व; कर्त्तव्यपरायणता और धैर्य्य देखने और सीखने लायक है। यह बात और भी मनन करने लायक है, कि युरोपीय किस छल, बल और कौशलसे अजनबी देशोंमें जाके अपना मन्त्र सिद्ध किया करते हैं।

काशी,
२० वीं जनवरी १९२९

जौहर।

हीरेकी खानि।

पहला बयान।

भेंट।

मेरा नाम अलान है। मेरे बाप बड़े ही नामी और भले गोरे पादरी थे। दक्षिण-अफरिकाके नेटाल देशके दरबन नगरमें मैं पैदा हुआ था और वहीं मेरा घर है। अपने बचपन हीसे मैं जङ्गली जानवरों और हाथियोंका शिकार करता और उनके चमड़े और दांत बेचके अपना संसार चलाता हूं। अपने इस पेशेमें इस भयानक और अंधेरे अफरिका महादेशमें मुझे ऐसा-ऐसा खूना खरातोंसे सामना करना पड़ा है, जिनका देखना तो दूर रहा; सुननेसे भी आदमीको कंपकंपी आ जाये।

एकबार मैं ट्रान्सवाल देशके उत्तर बामनग्वाटोके जङ्गलमें हाथियोंका शिकार खेलनेके लिये गया। यह यात्रा कुछ ऐसे बुरे समयमें हुई, कि मुझे शिकार भी न मिला और मैं बीमार भी हो गया। मैं अपनासा मुंह लेके केप टाउन बन्दर गया और वहांसे विलायती डाकके जहाज 'एडिनबर्ग केसेल'से अपने घर दरबनका ओर लौटा।

राहमें अपने साथके दो जहाजी मुसाफिरोंको देखके मुझे बड़ा कौतुक हुआ। इनमें एक कोई तीस सालका एक जवान था। उसके बाल पीले; आंखें बड़ी-बड़ी; भुजायें लम्बी; छाती चौड़ी और

ऊंचे थी। ऐसा सुन्दर, बली और लम्बा-चौड़ा जवान मैंने पहले कभी देखा न था। दूसरा मुसाफिर नाटा, मोटा, साफ-सुथरा था और कोई पेंशन पानेवाला जहाजी फौजका अफसर जान पड़ता था। उसकी एक आंखपर एक गोल चश्मा चढ़ा रहता था; उसके दांत नकली थे। उम्र पचासके लगभग होनेपर भी उसके चेहरेपर सुन्दरता थी। यह दोनों अङ्गरेज थे; एक साथ सैर-फिरी कर रहे थे। इनमें उस जवानका नाम सर हेनरी और उस अधेड़का नाम गुड या कप्तान गुड था।

एक दिन सन्ध्याको जहाजकी भोजनकी कोठरीमें जिस टेबुल पर मैं खाना खानेके लिये बैठा था; उसीपर वह दोनों अङ्गरेज भी आ बैठे। कप्तान गुडने मुझसे शिकारकी बातें छेड़ीं। बात ही बातमें हाथीके शिकारकी चर्चा चली। इसपर मेरे पीछे बैठके खाना खाते हुए किसी आदमीने गुडसे कहा,—"अच्छी चर्चा चलाई आपने। यह अलान साहब हाथियोंके बहुत बड़े शिकारी हैं, इस शिकारका सारा हाल आपको समझा देंगे।"

मेरा नाम सुनते ही चुपचाप बैठे हुए सर हेनरी चौंक पड़े। उन्होंने मुझे कुछ देरतक देखके पूछा,—"क्या आप हीका नाम अलान साहब है?" मेरे 'हां' करनेपर उस समय उन्होंने सिवा 'वाह'के और कुछ न कहा। लेकिन खाना समाप्त होते ही वह उठे और मुझे बड़े आदरके साथ अपनी जहाजी कोठरीमें लिवा ले गये। वहां एक टेबुलके गिर्द हम तीनों बैठे। ह्विस्कीके ग्लास सामने चुने गये; सिगरेट जलाये और पिये जाने लगे।

कुछ देरतक चुप रहनेके बाद सर हेनरीने पूछा,—"क्यों साहब! क्या गये साल भी आप बामनग्वाटो गये थे?"

मैं। गया तो था; लेकिन—

गुड। सौदागरीके लिये?

मैं। वहांके देशी लोगोंमें अपने लायक एक गाड़ी माल भी अपने साथ ले गया था, जिसे कपड़े और हाथीदांतपर बेच दिया।

सर हेनरीने बड़ी ही बेचैनीके साथ पूछा,—"वहां नेविल्ले नामके किसी आदमीसे आपकी भेंट भी हुई थी?"

मैं। हुई थी। वह कहीं दूर जाया चाहते थे। अपनी गाड़ीके बैलोंको ताजा बनानेके लिये कोई पन्द्रह दिनोंतक मेरे पड़ावको बगलमें ही पड़ाव डालके पड़े रहे। इस घटनाके कोई तीन महीने बाद लण्डनके किसी वकीलने मुझसे नेविल्लेका हाल पूछा। मुझे जो बात मालूम थीं, वह मैंने उन्हें लिख भेजीं।

हेनरी। वह वकील मेरे ही थे और मेरा ही हित साधनेके लिये उन्होंने आपको वह चिट्ठी भेजी थी। आपने जबाबमें लिखा था, कि मई महीनेके आरम्भमें नेविल्ले—गाड़ीवान और अपने एक देशी नौकरके साथ—बामंग्वाटोसे इन्याती देशको ओर चले गये। वहां उन्होंने किसी पुर्त्तगीज सौदागरके हाथ अपनी गाड़ी बेच दी और अपने नौकरके साथ पैदल उस दिशाको ओर चले गये, जिस दिशाका हाल दुनियाको मालूम नहीं।

मैं। ठीक है।

हेनरी। अलान साहब! आपको इस बातकी खबर तो न होगी, कि नेविल्ले उस घोर दिशाको ओर किस लिये गये!

मैंने कुछ रुक-रुकके कहा,—"थोड़ी बहुत खबर है क्यों नहीं।"

मेरा यह जबाब सुनके सर हेनरी और गुड दोनो एक दूसरेको मतलबभरी निगाहोंसे देखने लगे। इसके बाद हेनरीने मेरी तरफ देखके कहा,—"मेरे वकीलने मुझसे आपकी बड़ी तारीफ की है। कहा है, कि आप बड़े ही विश्वासी और भले आदमी हैं।"

मैंने कोई जवाब न दिया; बल्कि अपनी निगाहें मोड़ लीं।

हेनरी। तो सुनिये; नेविल्ले मेरे सगे छोटे भाई हैं।

यह सुनके मैं चौंक पड़ा। अब मुझे दिखाई दिया, कि सच-मुच ही सर हेनरी और नेविल्लेके रङ्गरूपमें बड़ा मेल था। वही आंखें; वही चेहरा; वही आवाज; फर्क था, तो डील-डौलमें।

हेनरी। इङ्गलेण्डके कानूनके अनुसार पुश्तैनी जायदादका वारिस अगर वसीयतनामा बिना लिखे मर जाये, तो उसका बड़ा लड़का ही जायदादका वारिस होता है। छोटे लड़के या लड़कोंका जायदादपर कोई हक नहीं होता। इसी कानूनके अनुसार, जब हमारे पिता बिना वसीयतके मर गये, तो मैं अपनी जायदादका वारिस हुआ। इसके बाद ही, अबसे कोई पांच साल पहले, नेविल्लेसे मेरा बड़ा झगड़ा हुआ और वह मारे क्रोधके अपने पासकी कुछ सौ अशरफियां लेके अपना नसीब आजमानेके लिये इङ्गलेण्डसे दक्षिण-अफरिका चले आये। इसके बाद जैसे-जैसे दिन बीतने लगे; वैसे-वैसे मैं अपने भाईके लिये व्याकुल होने लगा। मेरी आंखों और मनमें नेविल्ले दिन-रात नाचने लगे।

मैं। फिर?

हेनरी। फिर तो मैं ऐसा बेचैन हुआ, कि अपने भाईका मुंह देखने या उनका कुशल-समाचार पानेके लिये अपनी आधी जायदाद दे देनेपर तय्यार हो गया। मैंने उनकी बड़ी खोज की और इसी सिलसिलेमें आपको अपने वकीलकी चिट्ठी भिजवाई। आपके जवाबसे नेविल्लेका कुछ पता लगा सही; लेकिन उससे मुझे सन्तोष न हुआ। अन्तमें मैंने स्वयं अपने भाईके ढूंढनेको कमर कसी और अपने मित्र इन कप्तान गुडके साथ दक्षिण-अफरिकाकी ओर चल पड़ा।

गुड। अब; अगर आपको तकलीफ न हो, तो यह बताइये, कि आप नेविल्लेके बारेमें क्या जानते हैं ?

दूसरा बयान।

खानिका हाल।

मैंने कुछ देरतक सोचके कहा,—"मैंने यह बात अबतक किसीसे नहीं कही; आज आपलोगोंसे ही कहता हूं। मैंने सुना, कि नेविल्ले सुलेमानकी हीरेकी खानिकी ओर जाया चाहते थे।"

दोनोंने चकित होके पूछा,—"वह खानि कहां है ?"

मैं। नहीं जानता। हां; कुछ लोगोंने बताया था, कि वह अमुक दिशामें है। एकबार लोगोंने किसी पहाड़की चोटी भी दिखाई थी और कहा था, कि वह पहाड़ हीरेकी खानिके देशके किनारे है। लेकिन मुझमें और उस पहाड़के बीचमें कोई साठ कोस लम्बा रेतका मैदान था, जिसे सिवा एकके और किसी भी युरोपियनने पार किया न था। यदि आपलोग किसीसे न कहनेका वचन दें, तो मैं आपलोगोंको एक अचम्भेकी बात सुनाऊं।"

दोनोंने कहा,—"निश्चन्त होके सुनाइये।"

मैं। हीरेकी खानिका नाम पहले-पहल मैंने अबसे कोई तीस साल पहले सुना था। इसके कोई बीस साल बाद मैं हाथियोंके शिकारके लिये सीतान्दा क्राल पहुंचा। क्राल देशी भाषामें बेड़ेसे घिरी हुई झोपड़ोंकी बस्तीका नाम है। बड़ा ही मनहूस था सीतान्दा क्राल। न शिकार दिखाई देते थे; न खानेका सामान ही मिलता था। मुझे बहुत जोरका बुखार आ गया। एक दिन मैं चारपाईपर पड़ा था; ऐसे समय एक अधगोरे नौकरके साथ एक बहुत ही भला पुर्त्तगीज मेरे पास आया। उसका नाम सिलवेस्त्री था। दूसरे

दिन उसने मुझसे विदा होते समय कहा,—"भगवान् चाहेंगे, तो मैं आपसे फिर मिलूंगा और उस समय आप मुझे मामूली आदमी नहीं; दुनियाका सबसे बड़ा धनकुबेर पायेंगे।" उसकी यह बात सुनके मुझे हँसी तो आई; लेकिन मैं मारे कमजोरीके हँस न सका। उसके जानेपर मैं लेटे-लेटे सोचता रहा, कि इस आदमीका माथा ठीक है या नहीं; भला यह इस उजाड़-बयाबानमें जाके कौन सा धन कमा लेगा।

गुड। फिर—फिर?

मैं। फिर यह, कि कोई एक अठवारे बाद अपना बुखार उतरनेपर एक दिन सन्ध्याको मैं अपने खीमेके दरवाजेपर बैठके सिगार पी रहा था, ऐसे समय मुझे कोई तीन सौ गज दूर अपने सामनेके एक टीलेपर एक युरोपियन दिखाई दिया। वह कुछ कदम लड़खड़ाके चलनेपर गिर पड़ा। मैंने अपना एक आदमी उसे सहारा देके लानेके लिये दौड़ाया। जानते हैं, कि किसे उठाके मेरा आदमी मेरे सामने लाया?

गुड। सिलवेष्टरको।

मैं। हां; सिलवेष्टरको, या उसकी ठठरीको। वह बुखारसे सूखके कांटा हो गया था। उसकी आंखें निकल आई थीं; जीभ सूखके तालूसे चिपक गई थी। उसने आते ही पानी मांगा और मेरे दूध-पानी देनेपर उसे इसतरह पी गया; मानो कई दिनोंसे उसने पानीको सूरततक देखी न हो। पानी पीनेके बाद ही उसे बहुत जोरका बुखार आया और वह बिछौनेपर पड़ा-पड़ा लगा सुलेमान पहाड़ और हीरेकी खानि इत्यादिकी बातें बड़बड़ाने। रात ग्यारह बजे जब वह शान्त हुआ; तब मैं भी सो गया। दूसरे दिन सवेरे जब मैं उठा, तब सिलवेष्टरको अपने बिछौनेपर बैठे पाया। सूरज निकल रहे थे। जैसे ही उनकी किरनें कोई पचास कोस दूरके एक

पहाड़की चोटीपर चमकी; वैसे ही उसने कहा,—"वही है, वही है! लेकिन मैं अब वहां तक पहुंच न सकूंगा। शायद कोई भी वहांतक पहुंच न सकेगा।" इसके बाद वह कुछ देरतक सोचके बोला,—"दोस्त! मेरी आंखोंमें अंधेरा आ रहा है। शायद मैं मर रहा हूं। लेकिन मरनेसे पहले मैं तुम्हारी नेकियोंका बदला चुका जाया चाहता हूं।"

गुड। लेकिन उस समय उसके पास था क्या?

मैं। सुनिये तो सही। यह कहके उसने अपने फटे हुए कोटके नीचेसे एक चीथड़ा निकाला, जिसमें एक बड़ा ही पुराना कागज था। वह कागज उसने मेरी ओर फेंकके कहा,—"कोई तीन सौ साल हुए मेरे एक सम्बन्धी पुर्तगालसे भागके अफरिका आये। वह अपने एक गुलामको उस पहाड़के इसपार छोड़के पहाड़पर गये और वहीं मर गये। वह गुलाम उन्हें ढूंढता हुआ पहाड़पर गया और उनकी लाशके पाससे यह कागज उठाके हमारे कुटुम्बके लोगोंके पास लाया। तबसे अबतक यह कागज मेरे घरानेमें था। मेरे कुटुम्बके और किसी आदमीने इसे पढ़नेका विचार न किया; अन्तमें मुझे इसके पढ़नेका शौक हुआ और उसी पढ़ाईकी वजह आज मैं जान दे रहा हूं। मैंने सफलता नहीं पाई, तो क्या हुआ; लेकिन मुझे विश्वास है, कि तुम अवश्य वहां जाओगे। इस कागजको किसीको न देना; पढ़ना और जाना, तो तुम्हीं जाना।" इतना कहनेके बाद वह कुछ देरतक छटपटाके मर गया। मैंने उसे अपने हाथों कबरमें उतारा।

हेनरी। लेकिन वह कागज?

मैं। मेरे मकानमें है; लेकिन उसकी नकल मेरे पास है। इसमें एक नकशा भी है। लीजिये आप स्वयं देखिये!

यह कहके मैंने अपने पाकेटबुकसे उस कागजकी नकल निकालके उन लोगोंके सामने रखी। वह इसतरह थी:—

हीरेकी खानिकी राह।

"मैं जोसे, शैबा-लान पहाड़की दाहनी चोटीकी एक गुफामें बैठके सन् १५९० ई०में हड्डीका कलम बनाके अपने खून-की रोशनाईसे यह कागज लिख रहा हूं। भूख मेरी जान ले रही

है। यदि मेरा गुलाम मुझे ढूंढता हुआ यहां आये और यह कागज मेरे घर पहुंचाये, तो मेरे कुटुम्बियोंको चाहिये, कि वह इसे पुर्त्तगाल-राजके पास पहुंचा दें और उनसे कहें, कि वह हीरेकी खानि जीतनेके लिये एक जबरदस्त फौज भेजें। यह फौज अगर जीते जी रेतका मैदान पार कर लेगी और वीर कुकुवानोंको जीत लेगी और अगर इस फौजके साथ आनेवाले पादरी कुकुवानोंके जादू-टोनेका नाश कर देंगे, तो हीरेकी खानि पुर्त्तगाल-राजको दुनियाका सबसे बड़ा राजा बना देगी। सफेद मौतके पीछेके कमरेमें भरे हुए हीरोंका खजाना मैं अपनी आंखों देख आया हूं। जादूगरनी गगूलकी दगाबाजीके कारण मैं सिर्फ अपनी जान बचाके लौट सका हूं। यहां जो आये, वह ऊपरके नकशेके अनुसार आये। शीबा-पहाड़के बायें स्तनकी बरफपर इतना चढ़े, कि भुदनीतक पहुंच जाये। वहां उत्तर सुलेमान बादशाहकी बनवाई हुई राह दिखाई देगी, जो तीन दिनमें कुकुवानोंकी राजधानी लूतक पहुंचा देगी। गगूलको पहले ही मारना चाहिये। मेरी आत्माके लिये आशीर्वाद करो। विदा।

जोशे।"

यह कागज पढ़ा जानेके बाद कुछ देरतक सन्नाटा छाया रहा। अन्तमें कप्तान गुडने कहा,—"भाई साहब! बरसोंतक मैंने जहाजी फौजकी अफसरी की; दो बार सारा पृथिवीका चक्कर भी लगा आया; सैकड़ों जहाजियोंसे हजारों गपोड़े भी सुने; लेकिन ऐसा लच्छेदार गपोड़ा यह पहले ही पहल सुननेमें आया।"

हेनरी। हां अलान साहब! है तो कहानी कुछ ऐसी ही। कहीं आप हमलोगोंसे हंसी तो नहीं कर रहे हैं?

अपनी बातका इतना अविश्वास देखके मुझे बड़ा दुःख हुआ। मैंने उठके कहा,—"अगर आपलोगोंका ऐसा ही विचार है, तो इस बातका सिलसिला यहीं तोड़ दीजिये।"

सर हेनरीने मेरे कन्धेपर अपना हाथ रखके कहा,— "बैठिये-बैठिये, अलान साहब! माफ कीजिये। मुझे साफ दिखाई दे रहा है, कि आप हमें धोका नहीं दिया चाहते हैं; फिर भी, आपकी बात इतनी अनूठी है, कि उसपर सहजमें विश्वास नहीं होता।"

इसमें शक नहीं, कि उनका शुबहा मुनासिब था। मैंने भी कुछ डरके होके कहा,—"दरबन पहुंचके मैं खूनसे लिखा हुआ वह असली कागज भी आपको दिखा दूंगा। मैंने यह कहानी आपलोगोंका जी बहलानेके लिये नहीं कही है। इसके कहनेका मतलब यह है, कि आप उस खानिका पता जान लें, जिसकी खोजमें आपके भाई साहब गये हैं।"

हेनरी। अलान साहब! मैं अपने भाईका पता लगाके ही दम लूंगा। इसके लिये मुझे अगर शीबा-पहाड़ या उसके पार भी जाना पड़े, तो जाऊंगा। क्या आप भी मेरे साथ चलेंगे?

मैं सङ्कोची स्वभावका आदमी यह सवाल सुनके डर गया। मुझे जान पड़ा, कि सर हेनरीके साथ जाना मौतके मुंहमें जाना था। मेरे एक बेटा था; विलायतमें डाक्तरी पढ़ रहा था; ऐसे अवसर-पर मौतके मुंहमें घुसना मुझे भला जान न पड़ा। मैंने हेनरीसे साफ कह दिया,—"मुझे माफ कीजिये, साहब! मैं आपके साथ जा न सकूंगा। मेरी उम्र भी इस दौड़-धूपके लायक नहीं। सिवा इसके मैं अपने बेटेको पढ़ा रहा हूं।"

मेरा जवाब सुनके हेनरी और गुड दोनोंका चेहरा उतर गया। अन्तमें सर हेनरीने कहा,—"अलान साहब! भगवान्‌ने मुझे धन दिया है और मैं चाहता हूं, कि इस काममें जितने धनका प्रयोजन हो, उतना धन लगाया जाये। आप मेरे साथ चलनेके लिये सोच-समझके जितना धन मांगेंगे; उतना धन आपको पेशगी दिया जायेगा।

सिवा इसके मैं ऐसा बन्दोबस्त भी कर दूंगा, कि इस सफरसे आप और हमलोग अगर न भी लौटें, तो आपके बेटेको धनकी कोई तकलीफ न हो। मेरी इन बातोंसे आप यह समझ सकते हैं, कि मुझे आपको साथ ले जानेकी कितनी आवश्यकता है। फिर; अगर हमलोग हीरेकी खानितक पहुंच ही गये और हमें हीरे मिल गये, तो वह मेरे नहीं; आधोआध आपके और गुड साहबके होंगे। राहमें मिलनेवाले हाथीदांतको भी आप ही लोग आपसमें बांट लीजियेगा। आने-जानेमें जो राहखर्च लगेगा, वह मैं दूंगा। अब कहिये आपका क्या जवाब है ?"

मैं। सर हेनरी! आप जैसी उदारता दिखा रहे हैं, वैसी उदारता मैंने जन्ममें कभी नहीं देखी है। एक गरीब शिकारी इसतरह आई हुई लक्ष्मीको लात मार नहीं सकता। फिर भी; यह सफर बड़ा ही कठिन है, इसलिये मुझे जवाब देनेके लिये थोड़ा समय दीजिये। दरबन पहुंचनेसे पहले ही मैं आपको अपना फैसला सुना दूंगा।"

उस दिन इस बारेमें इतनी ही बातें हुईं। मैं हीरेकी खानिके बारेमें सोचता-विचारता हुआ अपनी जहाजी कोठरीमें वापस आया।

तीसरा बयान।

उकोपाका साथ।

हमारा जहाज पांचवें दिन सन्ध्याको सूरज डूबनेके बाद बन्दरके सामने पहुंचा। उस अँधेरेमें छोटी-छोटी नावोंकी सवारीसे किनारे जाना कठिन था। हमलोग खाना खाके जहाजकी ऊपरी छतपर पहुंचे। मेरे सिगरेट सुलगाते ही सर हेनरीने पूछा,—"क्यों अलान साहब! आपने मेरी उस सफरकी बातपर विचार किया ?"

मैंने अपने सिगारकी राख साफ करनेके बाद कहा,—"ह साहब, मैं आपके साथ चलूंगा; लेकिन अपनी कुछ शर्तोंके त हो जानेपर। मैं चाहता हूं;—

"१—आने-जानेका सारा खर्च आपका; और राहमें हाथीदां या और जो दामी माल मिल जाये, उसमें आधा मेरा और आध कप्तान गुडका।

"२—जबतक जान है, तबतक इस सफरमें मैं आपका साथ दूंगा। इसके बदले आप मुझे साढ़े सात हजार रुपये दें; और वह भी पेशगी।

"३—सफरसे पहले आप पक्का इकरारनामा लिख दें, कि मेरे मर जाने या निकम्मा हो जानेपर लगातार पांच सालतक आप मेरे डाक्टरी पढ़ते हुए बेटेको तीन हजार रुपये साल देंगे।

"अब कहिये; मेरी इन शर्त्तोंपर आपको क्या कहना है?"

हेनरी। यही, कि मैं खुशीसे मंजूर करता हूं। रह गई आपकी मांगी हुई पेशगी रकम। उसे मैं और भी बढ़ाके दूंगा।

मैं। और मैं उसे धन्यवादके साथ स्वीकार भी कर लूंगा। सर हेनरी! अबतक मैंने जवाब इसलिये न दिया था, कि मैं आपको परख रहा था। आप मुझे बहुत ही पसन्द आये हैं और मेरा विश्वास है, कि इस सफरमें हमलोगोंके मेलमिलापमें कोई रुकावट न आयेगी। लेकिन यह बात न भूलिये, कि यह सफर बड़ा ही टेढ़ा है। मुझे भय है, कि शेबा-पहाड़ पार करनेपर हम तीनोंमें कोई भी जीता हुआ लौट न सकेगा। अबसे तीन सौ साल पहले सिलवेस्ट्री-के पूर्वपुरुष जोशेका क्या हाल हुआ? बीस साल पहले सिलवेस्ट्रीका क्या हाल हुआ? कौन बता सकता है, कि आपके भाई ही कहां हैं? जो हाल इन सबका हुआ; वही हाल हमारा भी होगा।

कप्तान गुडके चेहरेसे जरा बेचैनी दिखाई दी; किन्तु हेनरीने अपने उसी धीर-गम्भीर भावसे कहा,—"जो होना है, वह होगा ही !"

मैं। रह गया मैं। मौत सामने देखके भी मेरे जानेके दो कारण हैं—एक, अपना ऋण चुकानेके लिये धन कमाना; दूसरा, अपनी मौतके बाद पांच सालतक अपने बेटेके पालनेका सामान करना।

हेनरी। समझा, अलान साहब! आप चाहे जिस कारणसे हमारा साथ देते हों; किन्तु मैं तो यही समझता हूं, कि आप हमारा उपकार करते हैं। इसमें शक नहीं, कि सफर टेढ़ा है; देखना है, कि हमलोग बचके वापस आ सकते हैं या नहीं। फिर भी, इतना कह रखनेमें हर्ज नहीं, कि मैं मरूंगा भी, तो भेड़-बकरीकी तरह न मरूंगा।

गुड। और क्या! हम तीनों ही खतरोंका सामना करना जानते हैं। इसलिये इस सफरको पीठ दिखानेके बदले हमें मुंह दिखाना चाहिये। चलिये सर हेनरी और अलान साहब! जरा नीचे कमरेमें चलके इस सफरकी कामयाबीके जाम पी लीजिये।

दूसरे दिन सवेरे सर हेनरी और कप्तान गुडके साथ मैं किनारे पहुंचा। अपने इन दोनों नये मित्रोंको मैंने अपने छोटेसे मकान या घरोंदेमें ठहराया। मेरे मकानमें तीन ही कमरे थे; इसलिये मैंने इहातेके अन्दर नारङ्गीके पेड़ोंके बीच दो छोटे-छोटे खेमे सर हेनरी और कप्तान गुडके लिये खड़े करा दिये। सफरकी तय्यारी होने लगी।

सबसे पहले मैंने सर हेनरीसे पक्का इकरारनामा लिखाया। इसके बाद कोई बाइस फीट लम्बी बड़ी ही मजबूत एक बैलगाड़ी खरीदी। इसके अगले भागमें कोई बारह फीट लम्बा, बैठने-उठने और माल-असबाब रखनेके लिये, एक सायबान था। पिछले भागमें

दो कोठरियां थीं, जिनमें चारपाइयों और छोटे-मोटे सामानकी जगह थी। दक्षिण-अफरिकामें दूर-दूरके सफर ऐसी ही गाड़ियोंमें किये जाते हैं। अट्ठारह सौ पछत्तर रुपये इस गाड़ीका दाम था। मेरा समझमें इतने दामपर भी यह गाड़ी सस्ती ही थी।

गाड़ी खरीदनेपर मैंने बीस जूलू बैल खरीदे। एक गाड़ी खींचनेके लिये सोलह बैलोंकी जरूरत होती है। समय-कुसमयके विचारसे मैंने चार बैल अधिक खरीद लिये। जूलू देशके बैल देखनेमें छोटे; लेकिन बड़े ही कामके होते हैं। अफरिकाके और देशोंके बड़े-बड़े बैल जिस जगह भूखों मर सकते हैं; उस जगह यह जूलू बैल झाड़ियोंके पत्तियां चरके आनन्दसे मुटाते हैं और मामूली बोझसे लदी हुई गाड़ी बड़ी ही आसानीसे दिनमें बाईस कोस खींच ले जाते हैं। सिवा इसके यह बैल समूचे दक्षिण-अफरिकामें ही जानेके कारण हर जगहकी आबोहवामें रह सकते हैं; नहीं तो दक्षिण-अफरिकाकी कितनी ही जगहोंका लाल पानी बैलोंको मार डाला करता है।

कप्तान गुड जहाजी फौजमें दाखिल होनेसे पहले डाक्टरी किया करते थे; इसलिये दवाओंके खरीदनेका बोझ उन्हींपर रखा गया। रह गये नौकर और हथियार। हथियारोंमें हाथियोंके शिकारके लायक दो बड़ी-बड़ी बन्दूकें; तीन दोनली एक्सप्रेस बन्दूकें; एक दूरका निशाना मारनेवाली दोनली नम्बर १२; तीन बार-बार फैर करनेवाली विनचेष्टर हलकी बन्दूकें और तीन कोल्ट तमन्चे खरीदे गये। मेरी सलाहसे हथियार ऐसे खरीदे गये, जिनमें एक ही पैमानेके कारतूस लगाये जा सकें।

रह गये नौकर। स्थिर हुआ, कि पांच नौकर रखे जायें, जिनमें एक गाड़ीवान एक राह दिखानेवाला और तीन खिदमतगार हों। गाड़ीवान और राह दिखानेवाला बड़ी ही आसानीसे मिल गया।

खिदमतगारोंके ढूंढनेमें बड़ी दिक्कत हुई। हमें विश्वासी और वीर आदमियोंकी जरूरत थी; क्योंकि इस भयानक सफरमें जानका खतरा था। बड़ी मुशकिलसे दो आदमी मिले। इनमें एक जातिका होटेण्टट था वेल्टवोगेल कहलाता था;—दूसरा जूलू था; खोवा उसका नाम था। खोवा अङ्गरेजी खूब बोल लेता था। वेल्टवोगेल यों तो बड़ा ही मिहनती और चालाक था; लेकिन उसे शराब पीनेकी लत थी। शराब देखते ही उसकी नीयत डोल जाती थी। यह ऐब अफरिकाके सभी देशियोंमें है। फिर भी; कुशल इतनी ही थी, कि हम ऐसी जगह जानेको थे, जहां शराबका मिलना कठिन था।

तीसरा आदमी बहुत ढूंढनेपर भी न मिला। लाचार; हमलोगोंने इन चार ही आदमियोंके साथ सफर करनेका फैसला किया। सफर करनेसे एक दिन पहले सन्ध्याको ऐन हमारे खानेके समय जूलू खोवाने हमें खबर दी, कि एक काफिर मुझसे मिला चाहता है। अफरिकाके अधिवासियोंको मुसलमान—उनकी देखा-देखी सभी विदेशी—'काफिर' कहा करते हैं। मैंने उसे वहीं बुला लिया। बड़ा ही लम्बा-चौड़ा और सुन्दर काफिर था। जूलू जाति कोयलेजैसी काली होती है; लेकिन उस काफिरका रङ्ग भूरा था। उसने अपने बर्छेसे हम तीनोंको सलाम किया और एक किनारे उकड़ूं बैठ गया।

मैं उसे देखके भी न देखनेका बहाना करता रहा। इन देशियोंको देखते ही अगर बातचीत करने लगो, तो वह सर चढ़ जाते हैं। मैंने देखा, कि वह अपनी जातिका 'केशला' था। अफरिकामें केशला उसे कहते हैं, जो सर्दारी पाने या कोई मार्केका काम करनेपर अपने बालोंके जूड़ेपर चर्बीसे चमचमाता हुआ गोंदका मुंदरा लगाता है। मुझे ऐसा जान पड़ा, मानो मैंने उसे कहीं देखा हो।

अन्तमें मैंने पूछा,—"तुम्हारा नाम ?"

वह। उम्बोपा !

मैं। जान पड़ता है, कि मैंने तुम्हें कहीं देखा है।

वह। आपका कहना ठीक है। जूलुओंको लड़ाईसे पहले रातको आपने मुझे ईषान्धलवनमें देखा था।

मुझे भी याद आया। जूलुदेशके ईषान्धलवन स्थानमें जब खिष्टानों और देशियोंके बीच भयानक लड़ाई हुई थी, तब मैं लार्ड चेम्सफोर्डके गाइड या राह दिखानेवालेका काम करता था। उस लड़ाईमें खिष्टानी फौजें हारी थीं; देशी जूलुओंकी फौजें जीती थीं और उन सबने खिष्टानोंको मारनेके बाद उनकी लाशें पकाके भक्षण की थीं। उस समय उम्बोपा खिष्टानोंकी देशी फौजोंमें कुछ सिपाहियोंका अफसर था। लड़ाईकी सन्ध्याको मुझसे भेंट होनेपर उसने मुझसे कहा था, कि खिष्टानी फौजकी छावनी बहुत ही कमजोर है और उसको मजबूतीका कोई बन्दोबस्त होना चाहिये। इसपर उस समय मैंने उसकी बात अनसुनी कर दी थी; लेकिन लड़ाई हो चुकनेके बाद कई बार मुझे उसकी वह चेतावनी याद आई थी।

मैंने कहा,—"मुझे भी याद आया। तुम यहां किस लिये आये हो ?"

वह। साहब ! मैंने सुना है, कि तुम जहाजसे आनेवाले इन साहबोंके साथ उत्तर दिशाका सफर किया चाहते हो; क्या यह सच है ?

मैं। सच है।

वह। क्या यह भी सच है, कि तुमलोग सीरा-पहाड़की तरफ या उससे भी आगे जाया चाहते हो ?

मैंने कुछ चिढ़के कहा,—"इससे तुम्हें क्या ?"

रह। इससे मुझे यह, गोरे आदमी! कि अगर तुमलोग शवा पहाड़-तक या उससे आगे जाया चाहते हो, तो मैं तुम्हारे साथ चलूंगा।

काले आदमी हम गोरोंको 'साहब' या 'इङ्गलिस' इत्यादि कहा करते हैं। उस काफिरके मुंहसे इन सब शब्दोंके बदले 'गोरे आदमी' सुनके मैं और भी चिढ़ा। मैंने कुछ नाक-भौं चढ़ाके कहा,—"तुम या तो अपनेको भूल गये हो; या जो कुछ कहते हो, उसे समझते नहीं। हमलोगोंसे इस ढङ्गसे बातें नहीं की जातीं। तुम कौन हो; तुम्हारा क्राल कहां है? हमें भी मालूम हो जाना चाहिये, कि तुम कैसे आदमी हो।"

उम्बोपा। मेरी उत्पत्ति जूलुओंसे है; फिर भी, मैं जूलू नहीं। मेरा देश बहुत दूर उत्तर दिशामें है। हजारों साल हुए जूलू उस देशसे निकलके दक्षिण-अफरिकाके जूलू-देशमें आये थे। मेरा कोई क्राल नहीं। कई सालसे मैं भटकता फिरता हूं। जिस समय मैं जूलू-देशमें आया; उस समय मेरी उम्र बहुत थोड़ी थी। कई सालतक मैं जूलू राजाओंकी फौजोंमें सिपाहीका काम कर चुका हूं। इसके बाद मैं जूलू-देशसे भागके नेटाल आया; क्योंकि जूलु-ओंका रहन-सहन जान चुकनेपर गोरे आदमियोंकी रीति-नीति जाननेकी मेरी इच्छा हुई। इसके बाद मैं खिष्टानी फौजके साथ रहके जूलू-राजा केटिवेयोकी फौजसे लड़ा। उस लड़ाईमें खिष्टानी फौजकी हार होनेके बादसे मैं नेटालमें तरह-तरहके काम किया करता था। अब मुझे काम नहीं भाता और मैं फिर अपने घर उत्तर जाया चाहता हूं। इस देशमें मेरा जी नहीं लगता। मैं तनख्वाह नहीं चाहता; फिर भी, तुम्हारे साथ रहके जो कुछ खाऊं-पिऊंगा; समय आनेपर उसका बदला चुका दूंगा। मैं हिजड़ा नहीं; वीर हूं; और मुझे साथ रखनेसे तुमलोगोंका भला ही होगा। बस यही मेरा कहना है।

मैं उस आदमी और उसकी बातोंका ढङ्ग देखके हैरान हुआ इसमें शक नहीं, कि उसने जो कुछ कहा, वह सच कहा; लेकिन उसका रङ्ग-ढङ्ग मामूली देशियोंके रङ्ग-ढङ्गसे निराला था। उसके तनखाह न लेनेकी बात मुझे और भी खटकी। मैंने यह मुशकिल सामने पाके उम्बोपाकी कही हुई सारी बातें कप्तान गुड और सर हेनरीके सामने अङ्गरेजीमें दुहरा दीं।

सर हेनरीने कहा, कि उम्बोपासे खड़ा होनेके लिये कहो। वह खड़ा हुआ। उसका लम्बा फौजी कोट उसके बदनसे खिसकके नीचे गिर गया। उसके बदनपर सिवा 'मूचा' नामक-तहमद और शेरपञ्जेकी एक मालाके और कुछ रह न गया। कितना गठीला और लम्बा-चौड़ा जवान था! उससे पहले मैंने वैसा देशी कभी देखा न था। उसकी उंचाई कोई छः फीट तीन इञ्चकी होगी। छाती चौड़ी; अङ्ग-प्रत्यङ्ग सांचेमें ढले हुए। उस धुंदली रोशनीमें भी उसका रङ्ग भूरा दिखाई देता था; उसकी छाती और भुजाओंपर क्योंकि जखमोंके काले-काले दाग थे। सर हेनरी बड़ी ही बेताबीसे उसके पास चले गये और उसका सांचेमें ढला हुआ शरीर और सुन्दर घमण्डी चेहरा जी भरके निरखने लगे।

गुड। अच्छा जोड़ा है। जैसा बदन हेनरीका है, वैसा ही इस काले आदमीका भी।

अन्तमें सर हेनरीने कहा,—"मिष्टर उम्बोपा! मैं तुम्हारी निगाहें और देह देखके सन्तुष्ट हुआ। आजसे तुम मेरे नौकर हुए।"

उम्बोपा अङ्गरेजी समझता था। उसने तुरन्त जूलूमें जवाब दिया,—"बहुत अच्छा।" इसके बाद सर हेनरीको सिरसे पैरतक देखके कहा,—"गोरे आदमी! तू भी पूरा मर्द मालूम होता है।"

चौथा बयान।

राहमें।

दरबनसे लूकाङ्गा और कालूकावा नदीके सङ्गमपर बसे हुए सीताङ्गा कालतकके सफरका समूचा हाल लिखनेकी जरूरत नहीं। सिर्फ इतना ही कह देना बहुत है, कि यह सफर कोई पांच सौ कोसका था और अन्तिम कोई डेढ़ सौ कोसमें हमें 'त्सित्सी' मक्खियोंने बहुत तङ्ग किया। यह कमबख्त काटके आदमियोंको तो सिर्फ हैरान ही करती हैं; लेकिन जानवरोंको मार ही डालती हैं।

जनवरीके अन्तमें हम दरबनसे चले थे और मईके दूसरे हफ्तेमें हमने सीताङ्गा कालके पास अपना डेरा डाला। राहमें छोटी-मोटी बहुतेरी घटनायें हुईं; किन्तु उनका हाल लिखना, पाठकोंको उकता देना है। ऐसी-ऐसी घटनायें सभी शिकारियोंके शिकारमें हुआ करती हैं। सिर्फ एक घटना बड़ी ही अनोखी थी; इसलिये उसका हाल लिख देना मुनासिब जान पड़ता है।

राहके मातावेलो देशके इनयाती स्थानमें हमें अपनी बैलगाड़ी और बैलोंको छोड़के पैदल चलना पड़ा। इनयाती पहुंचते-पहुंचते हमारे बीस बैलोंमें सिर्फ बारह बैल रह गये थे। एक बैलको नागने डस लिया; तीन बैल पानी न पानेकी वजह मर गये बाकी तीन बैल 'तूलिप' नामकी जहरीली घास चरनेकी वजह लोट गये।

गाड़ी और बैलोंके साथ-साथ हमने अपने विश्वासी गाड़ीवान और राह दिखानेवाले दोनोंको छोड़ दिया। उस उजाड़-खण्डमें एक पादरी साहब रहते थे। उनसे कह दिया, कि वह उन दोनोंको देख-रेख रखें। इसके बाद टम्बोपी, खीवा, वेण्टवो-गेल और किरायेके छः कुलियोंके साथ हम पैदल आगे चले।

मुझे वह सबेरा अच्छी तरहसे याद है। गाड़ी छोड़के पैदल चलते समय हम सबके मन कुछ भारी हो गये थे। हरेक आदमी यह सोचता था, कि देखें लौटके फिर गाड़ी देखना नसीबमें बदा है या नहीं। मैं तो यही समझता था, कि अब हम कहां और गाड़ी कहां। कुछ दूरतक हमलोग चुपचाप आगे बढ़ते गये। इतनेमें उम्बोपाने, जो हम सबके आगे-आगे चल रहा था, एक जुलू गाना छेड़ दिया। उस गानेका अर्थ यह था, कि बहुतेरे आदमी नई चीज देखने या जान देनेके लिये एक वीरानेमें घुसे; वहां उन्हें मौतके बदले प्यारी स्त्रियां, मोटे मवेशी और अच्छे शिकार हाथ आये।

उसका यह गाना सुनके हम सबको हंसी आ गई। हमारी यात्रा शुभ हो गई। उम्बोपा गम्भीर और रोबीला होनेपर भी बड़ा ही हंसोड़ था। जब वह अपनी चिन्ता हटाके हमलोगोंके हंसाने-पर कमर कसता था; तो हंसाते-हंसाते लुटा देता था। हम सभी उसे प्यार करने लगे थे।

अब उस घटनाका हाल सुनिये। इनयातीसे कोई पन्द्रह दिनोंकी राहपर हमें एक बड़ा ही सुन्दर हरा-भरा जङ्गली देश मिला। पहाड़ियोंकी गहरी तराइयां 'इदोरो' नामकी घनी झाड़ियोंसे ढकी हुई थीं। जगह-जगह 'मेचेबेल'के सुन्दर पेड़ खड़े थे, जो पीले-पीले स्वादिष्ट फलोंसे लदे थे। यह पेड़ हाथियोंका बड़ा ही प्यारा खाद्य है। हाथी वहां आ भी चुके थे; क्योंकि जगह-जगह उनके पैरोंके निशान दिखाई देते थे। उन सबने बहुतेरे पेड़ तोड़ भी डाले थे, कितने ही पेड़ोंको जड़से उखाड़ दिया था। हाथी खाते समय पेड़ोंका बड़ा नुकसान किया करते हैं।

सन्ध्या समय हम एक बड़ी ही सुहावनी जगह पहुंचे। झाड़ि-योंसे ढंकी हुई एक पहाड़ीकी तराईमें एक नदी थी; जो सूख गई थी;-फिर भी, उसमें जगह-जगह निर्मल पानीके डबरे भरे हुए

थे, जिनका चारों ओर तरह-तरहके जङ्गली जानवरोंके खुरों और पञ्जोंके निशान बने हुए थे। इस पहाड़के सामने—नदीके किनारे—लम्बे जैसा विशाल मैदान था, जिसमें जगह-जगह घनी झाड़ियां और छतनारे पेड़ थे।

यह मैदान पार करनेपर जैसे ही हमलोग नदीमें घुसे; वैसे ही वहांसे जिराफोंका एक झुण्ड सड़कके एक ओर भागा। उनकी टापोंकि शोरसे वहांका गहरा सन्नाटा टूट गया। वह सब हमसे कोई ढाई सौ गज दूर थे; इसलिये उन्हें गोलीका निशाना बनाना कठिन था। फिर भी; कप्तान गुडने आव देखा न ताव; उठाके एक्सप्रेस बन्दूक; दाग ही तो दी उनपे। इत्तफाकसे गोली एक जवान जिराफकी गर्दन और पीठको जोड़पर पड़ी। उसकी रीढ़ टूट गई और वह मुँहके बल गिरा। बड़ी ही विचित्र और अचूक चोट थी।

गुडने उछलके कहा,—"वह मारा!"

काफिर कुलियोंने कहा,—"ओ, बोगवान! ओ! ओ!" यानी आह चश्मेवाले आदमी! वाह, वा!

सर हेनरीने भी कहा,—"ओह बोगवान!" उसी दिनसे कप्तान अच्छे शिकारी मान लिये गये। काफिरोंमें उनकी और भी इज्जत हुई। लेकिन असलमें गुड निशाना साधनेमें बड़े ही कच्चे थे; जिराफका शिकार इत्तफाकका बात था।

कुछ काफिरोंको मारे गये जिराफका गोश्त काटनेमें लगाके हमलोग अपना पड़ाव या 'सचेर्म' बनानेमें लग गये। उनसे दाहने कोई एक सौ गज दूर एक बड़े डबरेके किनारे पड़ावकी जगह चुनी गई। बहुतेरी कंटीली झाड़ियां काटी और इस जगहको चारों ओर गोलाईमें रखी गईं। इसके बाद उस घेरेके अन्दरकी जगह साफ की गई और उसके बीचमें सूखी हुई लम्बीको घास बिछौनों

जगह बिछा दी गई। घेरेके अन्दर जगह-जगह आग जला दी गई। पड़ाव तय्यार हो गया।

पड़ाव तय्यार होते-होते चांद निकल आया और जिराफका गोश्त भुन और उबलके तय्यार हो गया। कितना स्वादिष्ट गोश्त था। चांदकी रोशनीमें कप्तान गुडके निशानेकी तारीफ करते हुए हमलोगोंने अपना खाना समाप्त किया। इसके बाद हमलोग आगके गिर्दागिर्द लेट और बैठके लगे तम्बाकू पीने और तरह-तरहकी कहानियां कहने। इसमें शक नहीं, कि उस समय हम लोगों बड़े ही विचित्र दिखाई देते होंगे। मैं नाटा और छरेरा था; मेरे कच्चे-पक्के मोटे बाल सरपर घासकी तरह खड़े दिखाई देते थे। सर हेनरीकी सुनहरी जुल्फें उनकी गर्दनसे नीचे कन्धेतक लहरा रही थीं। कप्तान गुडका निराला ही वेश था। वह एक चमड़ेके हेण्डबेगपर बड़ी ही साफ-सुथरी पोशाक पहने हुए बैठे थे। उनकी हजामत बनी हुई थी; चश्मा चमक रहा था; नकली दांत दमक रहे थे; जूतेपर पालिश फिरी हुई थी। मानो वह भयानक अफरिकाके वीरानेमें नहीं; किसी सभ्य देशमें बैठे हों।

मेरे उनकी सफाईकी तारीफ करनेपर उन्होंने कहा,—"भाई! बहुत ही थोड़ी मिहनतसे आदमी साफ-सुथरा रह सकता है और सच तो यह है, कि मुझे सफाई और भलेआदमीकी तरह रहना बहुत ही पसन्द है।" बेचारे गुडको क्या खबर थी, कि आगे चलके उनकी सफाईका क्या हाल होनेको था।

हमसे कुछ ही दूरपर आगके गिर्दागिर्द हमारे काफिर भी बैठे हुए बातचीत कर रहे थे और सींगके बने हुए नलोंमें 'दकचा' नामक गांजेजैसा नशीला पदार्थ पी रहे थे। धीरे-धीरे उन्हें नींद आई। बारी-बारीसे वह सब अपने कम्बलोंपर सो गये। सिर्फ उम्बोपा एक किनारे बैठा रहा। वह अपने हाथपर ठुड्डी रखके

कुछ सोच रहा था। वह कुली काफिरोंसे सदा अलग-थलग रहा करता था।

ऐसे समय हमारे पड़ावके पीछेकी झाड़ियोंसे किसी पशुकी डरावनी गुर्राहट सुनाई दी। 'सिंह! सिंह!' कहके मैं उठ खड़ा हुआ; मेरे दोनों साथी भी उठ खड़े हुए। हम तीनों लगे उसी झाड़ोंकी तरफ देखने। इतनेमें कोई एक सौ गज दूरके एक डबरेके किनारेसे हाथीकी चिग्घाड़ सुनाई दी। हमारे साथी काफिरोंकी नींद उचट गई और वह सब लगे 'हाथी-हाथी' चिल्लाने। कुछ ही क्षणके बाद हमें हाथियोंके बड़े-बड़े शरीर दूर और नजदीकके पानीके डबरोंके किनारेसे मैदानकी ओर आते हुए दिखाई दिये।

उन्हें देखते ही कप्तान गुड उछल पड़े। जिराफ मारनेके बादसे उनपर शिकारका भूत सवार हो गया था। जैसे ही उन्होंने बन्दूक उठाई, वैसे ही मैंने उनकी बांह पकड़के आहिस्तेसे कहा,—"इससे कोई फायदा नहीं। इस समय उन्हें न छेड़ो।"

हेनरी। अलान साहब! यहां तो शिकार ही शिकार हैं। अगर आपलोग भी चाहें, तो कल शिकार खेलनेके लिये यहां ठहर जायें।

कप्तान गुड तो यही चाहते थे। मेरे मुंहमें भी पानी भर आया। मैंने कहा,—"ऐसा ही हो। लेकिन अगर हाथियोंका शिकार करना है, तो तड़के गजरदम पड़ावसे निकल चलना चाहिये। आइये अब हमलोग विश्राम करें।"

हम सबने सोनेके लिये कपड़े आदि उतारे। गुडने अपने कपड़े उतारके पहले झटकारे; फिर तह किये। अपने नकली दांत और चश्मा उतारके पतलूनकी जेबमें रखे। इसके बाद अपने सब कपड़े ओससे बचानेके लिये बरसाती कोटकी तहमें

रखे । हम तीनो अपने-अपने कम्बलोंमें घुसके लेटे । दिनभरकी थकावटकी वजह लेटते ही लगे खर्राटे भरने ।

किन्तु यह कैसा शोर ! हम तीनो नींदसे उठे, तो हमें पानीकी ओरसे भयानक रेल-पेल होनेकी आवाज सुनाई दी । दूसरे ही क्षण लगातार कई दहाड़ें सुनाई दीं । ऐसी भयानक दहाड़ सिंहको छोड़के और किसी पशुकी हो न सकती थी । हम तीनो आंखें गड़ा-गड़ाके पानीकी तरफ देखने लगे । हमें काले और पीले रंगकी दो सूरतें एक दूसरेसे लिपटी हुई अपने बेड़ेकी ओर लोट-पोटके बढ़ती हुई दिखाई दीं । हम तीनोंने लपकके अपनी बन्दूकें उठाईं; नर्म चमड़ेके जूते पहने और अपने बेड़ेसे निकलके उन बढ़ती हुई सूरतोंकी ओर झपटे । उनके समीप पहुंचते-पहुंचते वह दोनों लोटती हुई सूरतें एक अन्तिम जोर लगा चुकनेपर स्थिर हो गईं ।

पास पहुंचनेपर हमें सारी बातें मालूम हो गईं । घासके ऊपर एक बहुत बड़ा पीले रङ्गका हिरन मरा हुआ पड़ा था और उसकी टेढ़ी-मेढ़ी सींगोंमें छिदा हुआ काले अयालोंका एक विशाल सिंह पड़ा था । वह भी मर चुका था । जान पड़ा, कि जिस सिंहकी गुर्राहट हमलोगोंने सुनी थी, वह यही सिंह था और यह जिस पानीके डबरेके किनारे शिकारकी घातमें बैठा हुआ था; उसका पानी पीनेके लिये वह हिरन आया । हिरनके पानी पीते समय उसपर वह सिंह उछला और वह हिरनकी सींगोंमें छिद गया । ऐसी घटना पहले भी एकबार मैं देख चुका था । फंस चुकनेके बाद वह सिंह लगा हिरनकी पीठ और गर्दन नोचने । हिरन भी मारे डर और दर्दके तबतक भागता गया, जबतक वह मरके गिर न गया ।

उन दोनों पशुओंको अच्छी तरहसे देख चुकनेपर हमने अपने काफिरोंके हाथों अपने बेड़ेमें भेज दिया। इसके बाद हम दुबारा सोये और सबेरेतक चैनसे सोते रहे।

पौ फटते ही हम उठे और शिकारके लिये तय्यार होने लगे। हमने अपने साथ तीन बड़ी-बड़ी बन्दूकें; बहुतेरे कारतूस और अधगर्म चायसे भरी हुई पानीकी बोतलें ले लीं। शिकारकी थकावटमें ऐसी चाय बड़ी ताजगी लाती है। थोड़ा नाश्ता निगलके हमलोग चल पड़े। उम्बोपा, खीवा और वेण्टवोगेलको हमने अपने साथ ले लिया। बाकी काफिरोंको सिंह और हिरनका चमड़ा उतारने और भोजन बनानेके काममें लगा दिया।

हमें बड़ी ही आसानीसे हाथियोंके पैरोंके निशान मिल गये। वेण्टवोगेलने इन निशानोंको जांचके बताया, कि इस राहसे आनेवाले दलमें बीससे लेके तीसतक हाथी हैं। अधिकांश हाथी बहुत बड़े-बड़े हैं। हमलोग बड़ी ही बेचैनीके साथ आगे बढ़ते गये; लेकिन हाथियोंका दल न मिला। शायद रातको बहुत दूर निकल गया था। दिन कोई नौ बजे जब सूरजकी किरनें बहुत गर्म हो गईं; तब हमें टूटे पेड़; छिली हुई पत्तियां और छाल इत्यादि दिखाई देने लगे। अब हमलोगोंको विश्वास हो गया, कि हाथियोंका झुण्ड कहीं पास ही है।

कुछ ही आगे बढ़नेपर हमें हाथी दिखाई दिये। वेण्टवोगेलके कहनेके अनुसार उनकी संख्या बीस और तीसके बीच थी। यह सब अपना सबेरेका भोजन समाप्त करनेपर एक नीची जमीनकी ठण्डकका आनन्द लेते हुए खड़े-खड़े अपने पंखेजैसे बड़े कान हिला रहे थे। हमलोग उनसे कोई दो सौ गजकी दूरीपर थे। मैंने हवाका रुख जाननेके लिये एक मुट्ठी सूखी घास लेके उड़ा दी। मुझे भय था, कि अगर हवा हमारी ओरसे

उनकी ओर बहती होगी, तो वह हमारा गन्ध पाते ही बिना शिकार हुए निकल भागगे। सौभाग्यसे हवा हाथियोंकी ओरसे हमारी ओर बह रही थी। हमलोग झाड़ियोंकी आड़ पकड़ते हुए बेधड़क आगे बढ़ने लगे और हाथियोंसे कोई चालीस गजके फासिलेपर पहुंच गये। हमारे सामने ही तीन बड़े हाथी खड़े थे; इनमें एकके दांत बहुत ही बड़े थे। मैंने चुपकेसे अपने साथियोंसे कहा, कि मैं बीचके हाथीपर गोली चलाऊंगा, सर हेनरीने बायेंके और कप्तान गुडने दाहनेके हाथीको चुना।

बन्दूकें छतियाई गईं; निशाना साधा गया। मैंने कहा,—"दागो!"

दांय! दांय! दांय! तीन फैरें हुईं। सर हेनरीका हाथी कलेजेपर गोली खाके वहीं ढेर हो गया। मेरे हाथीने चोट खाके घुटने टेक दिये। मैं समझा, कि गिरा चाहता है; किन्तु दूसरे ही क्षण वह गिरनेके बदले उठा और हवाकी तरह दौड़ता हुआ हमलोगोंके पाससे चला। अपने पास पाके मैंने दो गोलियां उसकी पसुलियोंमें मारीं। अब वह गिरके तड़पने लगा। मैंने एक अन्तिम गोली उसके माथेपें मारके उसका काम तमाम किया। अब मैंने कप्तान गुडकी ओर ध्यान दिया। उनका वह बड़ा हाथी उनकी गोलीकी चोट खाके उन्हीं-पर टूट पड़ा। गुडने भागके जान बचाई और वह क्रोध और क्लेशसे अन्धा बना हुआ जख्मी हाथी दौड़ता हुआ हमारी छावनीकी ओर चला गया। इस अवसरमें हाथियोंका दल भयसे अधीर होके एक दूसरी ही ओर भागा।

अब यह प्रश्न उत्पन्न हुआ, कि हमें उस जख्मी हाथीका या भागे हुए हाथियोंके दलका पीछा करना चाहिये। अन्तम हमें हाथियोंके दलके ही पीछे जाना उचित जान पड़ा। तपते हुए सूरजकी कड़ी धूपमें कोई दो घण्टेतक भुनते हुए; हाथियोंके पैरोंके निशानपर चलते हुए हमलोग उस झुण्डके पास पहुंचे।

सिवा एकके, बाकी सब हाथी एक जगह खड़े थे। वह सब बड़े ही चञ्चल थे। अपनी सूंड़ें उठाके बार-बार हवा सूंघ रहे थे। उनमें एक बड़ा हाथी अपने झुण्डसे कोई पचास गज दूर खड़ा होके मानो सन्तरीका काम कर रहा था। वह हमलोगोंसे कोई साठ गज दूर होगा। आगे बढ़ना कठिन था; क्योंकि उस अकेले हाथीकी चारों ओर बिना झाड़ीका मैदान था। ऐसी दशामें और आगे बढ़नेका विचार छोड़के हम तीनोंने उस हाथीको ओर अपनी बन्दूकें सीधी कीं और मेरे इशारेपर दाग दीं। तीनों गोलियां निशानेपर पड़ीं और वह हाथी मरके गिर पड़ा। बन्दूकोंकी आवाजें होते ही हाथियोंका झुण्ड फिर भड़कके भागा। कोई एक सौ गज दूर उसे एक सूखा और गहरा नाला मिला; वह झुण्ड उसी नालेमें धंस पड़ा।

हमलोग झपटके नालेके किनारे पहुंचे। हमें दिखाई दिया, कि नीचे नालेमें हाथियोंमें बड़ी रेलपेल चल रही थी। उनमें हरेक हाथी यही चाहता था, कि वह भागके आगे निकल जाये। वह सब एक दूसरेको धक्के दे रहे थे। चोट खानेसे चीख रहे थे। सूंड़ फटकार रहे थे। अब हमलोगोंको शिकारका अवसर मिला। हम फैरपर फैर करने लगे। देखते-देखते पांच हाथी लोट गये। बाकी हाथी आगे बढ़नेका विचार छोड़के पलटे और जिस ओरसे आये थे; उसी ओर पलटके नालेसे निकल भागे। हमलोग कुछ थक भी गये थे और हत्या करते-करते हत्या करनेसे घिना भी गये थे। हमने भागते हुए हाथियोंका पीछा न किया। सवेरेसे दोपहरतक आठ हाथियोंका शिकार कोई मामूली बात न थी। थोड़ा आराम करने और दो हाथियोंके कलेजे दोपहरके भोजनके लिये निकाल लेनेके बाद हमलोग हंसी-खुशी अपने पड़ावकी ओर लौटे। हाथी-दांतके लिये काफिर भेजे

जानेको थे। चलते-चलते जब हम उस जगह पहुंचे, जिस जगह हमने पहले दो हाथियोंका शिकार किया था, तो हमें साँभर दिखाई दिये। उन्हें मारना बेफायदा था; क्योंकि हमारे पास गोश्तकी कमी न थी। कप्तान गुडको साँभरोंको नजदीकसे देखनेका शौक हुआ। आप अपनी बन्दूक उम्बोपाको देके खीवाके साथ उनके झुण्डकी ओर चले। हमलोग थके तो थे ही; लगे वहां बैठके कप्तान गुडके लौटनेका इन्तजार और विश्राम करने।

इतने हुए सूरजकी धूप लाल पड़ चुकी थी। उस लाल धपमें चारों ओरके हरे-भरे वृक्षोंको देखके मैं और हेनरी आनन्दित हो रहे थे; ऐसे समय हमें हाथीकी चिग्घाड़ सुनाई दी और इसके बाद ही लाल सूरजके सामने एक विशाल हाथीकी देह सूंड उठाये और पूंछ समेटे हुई झपटके आगे बढ़ती हुई दिखाई दी। इसके बाद हमें कप्तान गुड और खीवा दिखाई दिये। यह दोनों अपनी जानें लेके हमारी ओर भागे आ रहे थे और वह हाथी उनका पीछा कर रहा था। हमलोगोंने बन्दूक उठाई; लेकिन कप्तान गुड या खीवाके जख्मी होनेके डरसे चला न सके। देखते-देखते एक भयानक दुर्घटना हो गई। कप्तान गुड अपने सभ्य युरोपियन कपड़ेके प्रसादसे ज्यादा दौड़ न सके, उनका पैर फिसला और वह मुंहके बल गिर पड़े। अगर उन्होंने हम दोनोंकी तरह पतलून छोड़के जांघिया और मोजे पहने होते, तो वह इसतरह न गिरते। पहले तो उनके पतलूनने उन्हें दौड़नेसे रोका और थकाया; फिर, जब वह हमसे कोई साठ गजके फासिलेपर पहुंचे, तब उनका बूट सूखी घासपर फिसला और वह तीरकी तरह दौड़ते हुए हाथीके ठीक सामने मुंहके बल ढेर हो गये।

हम दोनों सूख गये; क्योंकि कप्तान गुडकी मौत हमें सुनिश्चित दिखाई दी। फिर भी; हम अपनी बन्दूकें लेके बड़ी ही तेजीसे

उसकी ओर झपटे। तीन पलमें कुल झगड़ेका फैसला हो गया। जुड्डू खोवा अपने मालिकका गिरना देखते ही पलटा और उसने अपने हाथका भाला तानके उस दौड़ते हुए हाथीके मुंहपर मारा। वह भाला जाके उस हाथीकी सूंडपर बैठा।

क्रोधसे पागल हाथीने बड़ी ही डरावनी ध्वनि की और अपनी सूंडको एक ही चोटसे खोवाको जमीनपर पटकके उसकी पीठपर अपना खम्भेजैसा पैर रख दिया; साथ ही खोवाको ऊपरी देहका पकड़ और तोड़-मरोड़के कमरसे जुदा कर दिया।

त्राससे पागल बने हुए हम दोनो उस हाथीके पास पहुंचे और लगे दनादन गोलियां चलाने। दो ही चार गोलियां खानेके बाद वह जखमी और खूनी हाथी खोवाको बेजान देहपर गिरा और मर गया। इस अवसरमें कप्तान गुड भी उठे और अपने लिये जान देनेवाले वीर खोवाके लिये अफसोस करने लगे। मेरी भी आंखोंसे आंसू निकल आये। उमबोपाने मरे हुए खोवाको कुछ देरतक देखनेके बाद सिर्फ इतना कहा,—"मर्दकी मौत मरा!"

पांचवां बयान।

बयाबान।

नौ हाथियोंके दांत जमा करनेमें दो दिन लग गये। इतने बड़े-बड़े और सुन्दर दांत मैंने बहुत कम देखे थे। हरेक टुकड़ा कोई बीस या पचास सेर वजनका होगा। खोवाको मारनेवाले हाथीके दांतका जोड़ा दो मनसे भी ऊपरका होगा। हमने इन सब दांतोंको दूरसे दिखाई देनेवाले एक अकेले पेड़की जड़में गाड़ दिये। विचार था, कि भगवान् यदि उस भयानक सफरसे लौटायेंगे तो वह दांत निकाल लिये जायेंगे।

खीवाको गाड़नेके बाद तीसरे दिन हमलोगोंने अपना सफर फिर आरम्भ किया और बहुतेरी मुसीबतोंके बाद अन्तमें लुकाङ्गा नदीके पास सीतान्दा क्राल पहुंचे। इसी जगहसे हमारा असली सफर आरम्भ होनेको था। सीतान्दा क्रालका दिखावा मुझे अब-तक याद है। हमारे दाहने नदीके किनारे क्राल या देशियोंकी बसती थी; उससे लगा हुआ और पत्थरके ढोंकोंसे घिरा हुआ गाय-बैलका क्राल था। उससे भी आगे कुछ खेत थे, जिससे क्रालके जङ्गली अधिवासी अपने गुजारे लायक थोड़ा-बहुत अन्न उत्पन्न कर लिया करते थे। हमारे दाहनेसे अनन्त बयाबान आरम्भ होता था, जिसमें पानीका एक बूंद भी मयस्सर न होता था। सीतान्दा क्राल मानो उस ओरको आदमियोंकी बसतीकी हद था।

क्रालके पास एक साफ और समतल भूमिमें हमने अपना पड़ाव किया। सामनेके बयाबानके दूसरे किनारे सूरज डूब रहे थे। उनकी रङ्ग-बरङ्गी किरनें उस भयानक वीरानेको रङ्गीन बना रही थीं। कनान गुडको पड़ावके इन्तजामके लिये छोड़के मैं सर हेनरीके साथ पासके एक टीलेपर चढ़के बयाबानपर अपनी निगाह दौड़ाने लगा। हवा बहुत ही साफ थी। दूर—अति दूर—हमें शीवा-पहाड़की नीली चोटियां दिखाई दीं।

मैं। उसी पहाड़के पीछे हीरेकी खानि है। लेकिन परमात्मा ही जानें, कि हमलोग वहांतक पहुंच सकेंगे या नहीं।

हेनरी। मुझे विश्वास है, कि मेरा भाई वहीं है और उसे ढूंढनेके लिये जैसे बनेगा; मैं वहांतक पहुंचूंगा!

“देखूं क्या होता है” कहके मैं जैसे ही छावनीकी ओर पलटा, वैसे ही मुझे दिखाई दिया, कि वहां सिर्फ हमीं दोनो आदमी न थे, हमारे पीछे भीमकाय उम्बोपा भी खड़ा होके उस दूरके पहाड़को देख रहा था। हमारे देखनेपर उसने सर हेनरीसे कहा,—

क्यों तुम, इनकिउबू! हीरेकी खानिके उस देशमें जाया चाहते हो?" यह कहते हुए उसने अपने बर्छेकी नोक शैबा-पहाड़की ओर उठाई।

* अफ्रिकाके काले आदमी 'इनकिउबू' शब्द अपने बराबरवालों के लिये व्यवहार किया करते हैं। उसके यह शब्द सर हेनरीके लिये व्यवहार करनेर मैंने उससे कड़कके पूछा, कि क्या तुझे अपने मालिकके लिये ऐसा ही शब्द मुंहसे निकालना चाहिये था। मेरी बात सुनके उम्बोपा कुछ हंस दिया; जिससे मुझे क्रोध आ गया। यह देखके उसने कहा,—"तू कैसे जानता है, कि मान-मर्य्यादामें मैं सर हेनरीके बराबर नहीं। उनके डील-डौल हीसे जान पड़ता है, कि वह किसी ऊंचे घरानेके आदमी हैं। मुझे देख! क्या मैं भी किसी बड़े घरानेका; राज-घरानेका आदमी हो नहीं सकता? मकान साहब! कुछ देरके लिये दुभाषियेका काम करो! जो कुछ मैं जूलूमें कहता हूं; उसका अङ्गरेजी तर्जुमा मेरे मालिक सर हेनरी-को सुनाओ!"

मेरे क्रोधका ठिकाना न रहा। मैं काफिरोंसे इस ढङ्गकी बातें सुननेमें अपना अपमान समझता हूं। फिर भी; उसकी बातोंने मुझपर असर डाला। दूसरे; मैं यह भी जानना चाहता था, कि वह कहा क्या चाहता है। इसलिये मैंने उसकी बात सर हेनरीसे कह दी और यह भी कह दिया, कि उम्बोपाने यह सवालकर बहुत बड़ी गुस्ताखी की है।

हेनरी। हां उम्बोपा! मैं हीरेकी खानिके देशमें जाया चाहता हूं।

उम्बोपा। बयाबान बड़ा ही चौड़ा है और उसमें पानी नहीं मिलता। पहाड़ ऊंचा है और उसका माथा बरफसे ढंका हुआ है। कोई आदमी यह नहीं जानता, कि उसके उस पारके देशमें क्या

है; ऐसी दशामें तू, इनकिउबू! वहांतक कैसे पहुंचेगा और ? वहां जाता ही किसलिये है?"

मेरा तर्जुमा सुनके सर हेनरीने कहा,—"मुझे खबर मिली है कि मेरा एक सम्बन्धी—मेरा सगा भाई—उस देशमें गया है और मैं उसे ढूंढनेके लिये वहां जाऊंगा।"

उम्बोपा। हो सकता है। कोई दो हफ्ते हुए मुझसे एक होटेण्टाटने एक गोरे आदमीके अपने एक देशी नौकरके साथ उस पहाड़की तरफ जानेका समाचार दिया था। वह दोनों अबतक लौटके नहीं आये हैं।"

हेनरी। तुम यह कैसे जानते हो, कि वही गोरा मेरा भाई था।

उम्बोपा। यह मैं नहीं जानता। फिर भी; उसने उस गोरेका जो स्वरूप बताया था, उससे तेरा स्वरूप मिलता है और जो देशी नौकर उसके साथ था, उसका नाम जिम था।

मैं। मैं भी उसे जानता हूं।

हेनरी। मेरा भाई बड़ा ही हठी है। अगर उसने शीबा-पहाड़ पार करनेका इरादा कर लिया होगा, तो निश्चय ही उसने उसे पार किया होगा।

उम्बोपा। हीरेकी खानिका देश बहुत दूर है, इनकिउबू!

हेनरी। मैं मानता हूं, लेकिन दुनियामें ऐसी कोई जगह नहीं; जहां जानेकी ठान लेनेपर आदमी जा न सके। रह गई,—मौत। वह तो एकबार आयेगी ही और वहीं आयेगी, जहां उसे आना है।

उम्बोपा। मर्दोंजैसी बात कही तूने, इनकिउबू! जीवन क्या है? घासका एक नन्हासा बीज! जो हवाकी ठोकरोंसे मारा-मारा फिरता है। कभी अपनी मिनती बढ़ाता हुआ समाप्त हो जाता है; कभी जैसेका तैसा मिट जाता है। फिर भी, अगर

उसमें बजान होता है, तो कुछ दूरतक अपनी इच्छाके अनुसार भी चला जाता है। जाव! तू भी अपनी इच्छाके अनुसार चलनेके लिये मर लगा। मरना तो है ही। बड़ी आफतमें फंसेगा, तो दो दिन पहले मर जायेगा। मेरे मालिक! मैं तेरे साथ यह बयाबान और वह पहाड़ पार करूंगा; हां, राहमें मर गया, तो और बात है।"

उकशोपा कुछ देरतक चुप रहा; इसके बाद शामकों ऐसी बात करने लगा, जैसी बड़े-बड़े जूजुओंके मुंहसे अकसर निकल जाया करती है। वह बड़े जोशके साथ कहने लगा,—"गोरे आदमी! तुझे अपनी बुद्धिपर अभिमान है; तू अपनेको दुनियाकी सब बातों-का जानकार समझता है। बता तो सही; जीवन क्या है? तू कहांसे आता है; कहां जायेगा? है इन बातोंका जवाब तेरे पास? नहीं। तो सुन मुझसे। हम अन्धकारसे आते और अन्धकार होमें फिर चले जाते हैं। जीवन एक जुगनू है; जो रातको चमकता और सवेरा होनेपर अपनी चमक खो देता है।"

हेनरी। बड़ा ही विचित्र आदमी है तू, उकशोपा!

उकशोपाने हंसके कहा,—"हम दोनों ही बड़े विचित्र आदमी हैं, इनकिउबू! शायद मैं भी अपना भाई हो ढूंढनेके लिये होके देशमें जाया चाहता हूं।"

अब मैं अपना शक दबा न सका। मैंने पूछा,—"तेरा मतलब क्या है? तू इस पहाड़के बारेमें क्या जानता है?"

उकशोपा। बहुत ही थोड़ा। उस पहाड़के पार एक बड़ा देश है, जिसमें वीर रहते हैं; जादूगरनियां रहती हैं; बड़े तमाशे दिखाई देते हैं। लेकिन इस समय इन बातोंसे क्या फायदा? जो आदमी जीता रहेगा, वह उस देशको आप ही देख लेगा।

मुझे बड़े ही शकसे देखते हुए देखके उकशोपाने मुझसे कहा,— "साहब! मुझसे डरनेको जरूरत नहीं। मैं आपलोगोंके, जिनके

लिये कोई कुआं खोदना नहीं चाहता हूं। अगर मैं जीता-जागता आपलोगोंके साथ यह पहाड़ पार कर सकूंगा, तो उस देशका बहुत कुछ हाल कह सुनाऊंगा। उस पहाड़के ऊपर और पीछे मौत-का डेरा है। अगर तुमलोगोंमें समझ है, तो आगे बढ़नेका विचार छोड़के यहींसे वापस लौटो। यहां जङ्गलोंमें हाथियोंकी कमी नहीं। यहांसे लौटके हाथियोंका शिकार खेलो। बस इतना ही मुझे कहना था।"

इतना कहके उसने अपने भालेसे हमें सलाम किया और पड़ा-वकी ओर चला गया। सर हेनरीने कहा,—"अजीब आदमी है यह।"

मैं। इसकी बातें मुझे नहीं भातीं। वह बहुतेरी बातें जानता है, किन्तु बताता नहीं। फिर भी; इसके लिये इससे झगड़नेकी जरुरत नहीं। हम आप ही खतरेके मुंहमें घुस रहे हैं और एक रहस्यमय जूलूका साथ हमारे सफरके खतरेको ज्यादा बढ़ा नहीं सकता।"

इन बातोंके बाद जब हम लौटके छावनीमें आये, तो हमने देखा, कि उम्बोपा एक कोनेमें बैठके अपनी बन्दूक साफ कर रहा था।

दूसरे दिन हमने अपने सफरकी तय्यारी की। सबसे पहले हम सबने अपने साथी काफिरोंको विदा किया। इसके बाद हाथीका शिकार करनेवाली अपनी बड़ी-बड़ी बन्दूकोंके रखनेका बन्दोबस्त किया; क्योंकि उस लम्बे सफरमें उतनी वजनी बन्दूकोंके ले जानेकी जरुरत न थी। हमारी छावनीके पास ही एक काफिरका फूसका झोपड़ा था। मैंने वह बन्दूकें उसीके यहां रख दीं। रखनेसे पहले मैंने सब बन्दूकें भर दीं और उनके घोड़े चढ़ा दिये। मैंने उस काफिरसे कह भी दिया, कि उन्हें छूते ही छूनेवालेकी शामत आ जायेगी। इसपर मानो जांचनेके लिये उसने एक बन्दूकको हाथ

लगाया, उसी समय उसका घोड़ा गिरा; आवाज हुई; और उस बन्दूकके मुंहसे निकली हुई गोली उसके भेजेको लगी। वह तुरन्त ही मर गया। यह देखके वह बहुत ही घबराया। गिड़गिड़ाके बोला,—"साहब! इन शैतानकी नानियोंको यहांसे हटाइये।"

मैं। कभी नहीं। हमलोगोंके लौटनेतक यह सब तुम्हारे झोपड़ेके छप्परमें पड़ी रहेंगी। लौटनेपर यह सब अगर हमें मिल जायेंगी, तो हम तुम्हें इनाम देंगे और अगर न मिलेंगी, तो तुम्हें पातालसे भी ढूंढके मार डालेंगे।

बन्दूकोंका ठिकाना कर चुकनेपर हमने अपने, सर हेनरी, गुड, उम्बोपा और वेण्टवोगेलके असबाबका बन्दोबस्त किया। लाख काट-छांट करनेपर भी हरेकके हिस्से कोई बीस सेरका बोझ आया। हमलोगोंने इतनी चीजें अपने साथ लीं:—

तीन एक्सप्रेस बन्दूकें और इनके लिये दो सौ कारतूस।

उम्बोपा और वेण्टवोगेलके लिये दो बार-बार फैर करनेवाली विञ्चेष्टर बन्दूकें और हरेकके लिये दो सौ कारतूस।

तीन कोल्ट तपञ्चे और हरेकके लिये साठ कारतूस।

पानीकी पांच बड़ी-बड़ी बोतलें।

पांच कम्बल।

साढ़े बारह सेर सूखा हुआ नमकीन गोश्त।

कितनी ही दवायें और नश्तर आदि।

छुरी, कम्पास, दियासलाई, तम्बाकू, तौलिया, एक बोतल ब्राण्डी आदि कितनी ही फुटकल चीजें।

असबाब थोड़ा था सही; लेकिन हमलोग इसे बढ़ानेकी हिम्मत कर न सके। क्योंकि बोझ बढ़ते ही हमारे लिये उस जलते-बलते बयाबानका सफर कठिन हो जाता। गर्मीमें एक छटांक भी ज्यादा बोझ बड़ी तकलीफ देता है। इसी-

लिये हमने सिर्फ उतना असबाब साथ लिया था, जितना बहुत ही जरूरी था।

छुरे देनेके वादेपर तीन बड़े ही नीच काफिर सीतान्द्रा कालसे हमने अपने साथ लिये। तय पाया था, कि वह सब पानी लेके दस कोसतक हमारे साथ चलेंगे; इसके बाद हमें छोड़के और अपने इनामके छुरे लेके वापस चले आयेंगे। मैं चाहता था, कि उस बेपानीके बयाबानमें जितना ज्यादा पानी हम अपने साथ रख सकें; उतना ही अच्छा। हमने उन सबसे यह कहा था, कि हम उस बयाबानमें शुतरमुर्गका शिकार खेलने जाते हैं। इसपर भी वह सब हमारी मौतकी आशङ्का करते थे। अगर उन्हें छुरेका लोभ न दिया जाता, तो वह हमारे साथ चलनेपर कभी राजी न होते। वह चाहते थे, कि उन्हें छुरे मिल जायें; हम सब जियें या मर जायें; उनकी बलासे!

दूसरे दिन सबेरेसे सन्ध्यातक हम आराम करते और सोते रहे। सूरज डूबनेसे पहले उठके हमलोगोंने तनके खाना खाया। खाना खानेके बाद चाय पी, जो बहुत दिनोंके लिये अन्तिम चाय हुई। इसके बाद थोड़ी बची बचाई तय्यारी समाप्त होनेपर हम लेटके चांदके निकलनेका इन्तजार करने लगे। रात कोई नौ बजे अफरिकाका मशहूर चांद अपनी पूरी चमक-दमकके साथ निकला। वह जङ्गली देश चमक उठा; उस सुनसान और गम्भीर बयाबानपर चांदनीकी चादर बिछ गई। हमलोग उठे और कुछ ही मिनटोंमें उस भयानक सफरके लिये तय्यार हो गये। जिस समय हम चलनेपर तय्यार हुए; उस समय हम सबके मनमें एक तरहकी हिचकिचाहट पैदा हुई। ऐसा होना स्वाभाविक ही था; क्योंकि जिस सफरके लिये हम पैर बढ़ाया चाहते थे; उस सफरसे लौटना कठिन था। हम तीनों गोरे एक जगह खड़े थे। हमलोगोंसे

कुछ कदम आगे, बन्दूक अपनी पीठसे लगाये और भाला हाथमें लिये बयाबानपर निगाहें गड़ाये हुआ उम्बोपा खड़ा था। बेण्ट-वोगेल और तीनों कुली हमारे कुछ पीछे खड़े थे।

सर हैनरी अपनी गहरी आवाजसे बोले,—"साहबो! हमलोग दुनियाके बड़े ही विचित्र सफरके लिये कदम उठाया चाहते हैं। नहीं जानते, कि इसका नतीजा क्या होगा। फिर भी; हम तीनों दुःख और सुखमें एक साथ रहेंगे। चलनेसे पहले हमें एकबार उन भगवान्‌को याद करना चाहिये, जो हमारे भाग्यके विधाता हैं। हमारी उनसे विनय है, कि वह हमारी नहीं; अपनी इच्छाके अनु-सार हमसे यह सफर समाप्त करायँ।"

सर हैनरीकी इस प्रार्थनासे हम तीनोंके दिल भर आये। हम तीनोंने उन प्रभुके सामने अपने मस्तक झुकाये। उस भयानक सन्नाटे और डरावने बयाबानने हमारे हृदयोंको उन प्रभुके चरणों-तक पहुंचा दिया।

सर हैनरीने कड़कके कहा,—"हां, बढ़ो आगे!"

हमारा सफर आरम्भ हुआ। उस दूरके पहाड़ और उस स्पैनी-के नकशेको छोड़के और कोई हमारा राह दिखानेवाला न था। वह नकशा भी हालका नहीं; कोई तीन सौ साल पहलेका बना हुआ था। फिर भी; वही हमारे इस सफरका सबसे बड़ा आधार था। उस नकशेमें बना हुआ वह कोई तीस कोस दूरका पानीका कुण्ड अगर हमें न मिला, तो हम सबकी बड़ी ही डरावनी बेपानी-की मौत सुनिश्चित थी। मुझे तो उस बालू और छोटी-छोटी कंटी-ली झाड़ियोंके समुद्रमें उस कुण्डके मिलनेमें सोलहो आने सन्देह था। और अगर वह कुण्ड मिल भी गया, तो उसमें पानी मिलना कठिन था। क्या वह सैकड़ों सालकी धूप या जङ्गली पशुओंके चलने-फिरने या उड़ते हुए बालूसे सूख न गया होगा?

रातकी छाया बने हुए हमलोग चुपचाप आगे बढ़ते गये। कटीली झाड़ियां हमारे पैरोंसे उलझती थीं; बारीक बालू हमारे जूतोंमें भर जाता था। हर आध कोसपर ठहरके हम अपने जूते,—खासकर कप्तान गुड अपना शिकारी बूट उतारके; साफ करते थे। कुशल इतनी ही थी, कि रात ठण्डी थी। हवामें मानो चन्दन मिला हुआ था। राह चलनेसे मन उकताता न था। उस विशाल बया-बानका गहरा सन्नाटा हमारी छातियां दबाये हुआ था। एकबार कप्तान गुडने सीटीमें कोई गाना शुरू किया; लेकिन उस अटल सन्नाटेने उसे जमने न दिया।

इसके बाद ही एक हंसीकी बात हो गई। जहाजी अफसर होनेकी वजह गुड कम्पासका मर्म बहुत अच्छी तरहसे समझते थे। वह कम्पास हाथमें लेके आगे-आगे चल रहे थे। और हम-लोग एक लम्बी पंक्तिमें उनके पीछे चल रहे थे। ऐसे समय हमे एक आवाज सुनाई दी और यह दिखाई दिया, कि कप्तान गुड गुम हो गये। इसके दूसरे ही क्षण हमारे चारो ओर तरह-तरहकी आवाजें होने लगीं और दौड़ते हुए पैरोंके शब्द सुनाई देने लगे। हमारे साथके कुली अपने पानीके पात्र पटकके भागनेपर तय्यार हुए। वह सब भाग ही जाते; लेकिन इस डरसे न भागे, कि जाते कहां। भागनेका उपाय न देखके वह सब औंधे मुंह गिरके लगे पंपियाने। वह समझे, कि भूतोंसे सामना हो गया। मेरे और सर हेनरीके आश्चर्य्यकी हद न रही। इतनेमें दिखाई दिया, कप्तान गुड एका-एक उभरे और लगे तीरकी तरह उस पहाड़की तरफ जाने। मानो वह किसी घोड़ेपर सवार हों। दूसरे ही क्षण वह गला फाड़के चिल्लाये और हाथ पसारे हुए धमसे जमीनपर गिरे।

अब हमारी समझमें सब बातें आ गईं। हमलोग सोते हुए क्वागा पशुओंके झुण्डमें घुस आये थे। हमारे आगे चलते हु

कप्तान गुड एक क्वागाकी पीठपर भहरा पड़े और वह उन्हें लेके भागा। उनके उसकी पीठसे गिरनेके बाद हमलोग उनकी ओर दौड़े। हमें यह देखके बड़ा सन्तोष हुआ, कि उन्हें किसी तरहकी चोट-चपेट न आई थी। वह दोनों पैर फैलाये बालूपर बैठे हुए थे, उनका एक आंखका चश्मा अपनी जगह था।

इसके बाद हमलोग बिना किसी घटनाके रात एक बजेतक बराबर राह चलके ठहर गये और दम लेने लगे। हम सबने पानी पिया, किन्तु थोड़ा-थोड़ा; क्योंकि उस बयाबानमें पानी जवाहरातसे भी ज्यादा मूल्यवान् था। कोई आध घण्टेतक हम फिर आगे चले।

राह चलते-चलते रात बीती। पूर्व दिशा किसी लजाई हुई सुन्दरीके गालोंकी तरह लाल हुई। सितारे छिपने लगे; चांदकी चमक मिटी। फिर तो लम्बी-लम्बी गुलाबी किरन फैलीं; जिनकी चमकसे सारा बयाबान गुलाबी हो गया। फिर भी; हम आगे बढ़ते ही गये। क्योंकि हम जानते थे; कि जैसे हो धूप कड़ी हो जायेगी; वैसे ही उस बयाबानमें चलना कठिन हो जायेगा। कोई एक घण्टे बाद हमें समतल मैदानमें कुछ चट्टानें दिखाई दीं। हम-लोग उन्हींकी ओर बढ़े। सौभाग्यसे वह चट्टानें सायबानजैसी निकली हुई थीं; उनके नीचे बालूका फर्श बिछा हुआ था। हमलोग उसी छायादारपर फर्शपर जा पहुंचे और थोड़ा सूखा हुआ मांस खा और पानी पोके लगे आरामसे खर्राटे भरने।

तीसरेपहर कोई तीन बजे जब हमारी नींद खुली, तब हमने अपने उन पानी लानेवाले कुलियोंको लौटनेकी तय्यारी करते हुए पाया। वह सब बयाबानसे उकता गये थे और अब उन्हें एकके बदले एक दर्जन छुरोंका लोभ भी एक कदम आगे बढ़ा न सकता था। यह देखके हमने जी भरके पानी पिया और अपनी खाली बोतल उनके लाये हुए पानीसे भरके उन्हें एक-एक छुरा देके विदा किया।

सन्ध्या कोई साढ़े चार बजे हमलोगोंने भी आगे बढ़ना आरम्भ किया। उस बयाबानमें कैसा अटल सन्नाटा छाया हुआ था, आदमी तो आदमी, कोई वृक्ष भी दिखाई न देता था। कहीं एकाध शुतुरमुर्ग दिखाई देता था, जो हमें देखते ही घोड़ेकी तरह भागता था। रास्तेवाले झाड़ोंमें दो-चार नाग सांप दिखाई दिये। हां, एक जीवकी बड़ी भरमार थी। वह जीव और कोई नहीं; परन्तु मक्खियां थीं। बड़ी ही कठोरप्राण होती हैं यह मक्खियां। कहीं भी जाइये; यह अवश्य मिलेंगी। मैं समझता हूं, कि महाप्रलय होनेपर सबके अन्तमें जो जीव मरेंगे, वह यही मक्खियां होंगी।

सूरज डूबनेपर हम ठहरके चांदके निकलनेकी राह देखने लगे; अन्तमें वह निकला और हम फिर आगे चले। रात कोई दो बजे थोड़ा दम लेनेके उपरान्त हम दिन निकलनेतक बराबर आगे बढ़ते ही गये। थोड़ा खा-पीके हम खुले मैदानमें बालूपर लेटे और मारे थकावटके बहुत जल्द सो गये। पहरा बैठानेकी जरूरत न थी क्योंकि इस भयानक बयाबानमें किसीके आनेका डर न था। यहां हमारे बड़े शत्रु गर्मी, मक्खियां और प्यास थीं। दिन कोई आठ बजते-बजते हमारी नींद उचट गई और हमें ऐसा जान पड़ा मानो हम कबाबकी तरह आग पर भूने जाते हों। हमारे चेहरों पर अफ्रिकाका सूरज चमक रहा था और उसकी किरनें हमें झुलसा रही थीं। हम बैठके हांफने लगे। चारों ओर जहांतक निगाह जाती थी, छायाका नाम-निशान न था।

मैंने भिनभिनाती हुई मक्खियोंको उड़ाके कहा,—"उफ़!"

"ओफ़! भुन गया!"

"उफ़! गर्मी इसे कहते हैं।"

सचमुच ही ऐसी गर्मी दुनियाके और हिस्सेमें कहां? चारों ओर चमकती हुई रेत तपके तवेकी तरह गर्म हो गई थी।

हैनरी ! अब करना क्या चाहिये ? यहां ठहरना, ना कठिन है !

मैं कोई जवाब दे न सका। कप्तान गुडने कहा,—"एक तदबीर है। हमें गड्ढा बनाके उसमें सोना और उसका मुंह झाड़ीसे ढंक देना चाहिये।"

गड्ढेमें आराम कहां; फिर भी, दूसरा कोई उपाय न था। हम अपने साथकी कुदाल और हाथोंसे गड्ढा बनाने लगे। एक घण्टेमें कोई दस फुट लम्बा, बारह फुट चौड़ा और दो फुट गहरा एक गड्ढा बना। इसके बाद हमने छुरियोंसे झाड़ियां काटीं और अपने ऊपर गड्ढेके मुंहपर बिछा दीं। वेण्टवोगेल बड़े ही गर्म देशका होटेण्टट था। वह बिना झाड़ियोंकी छायाके ही सोया। जब हम-लोग उस गड्ढेमें लेटे, तब हमें कुछ छाया मिली सही; किन्तु उस कब्रमें हवा कहां ? कलकत्तेका काल-कोठरी अगर सचमुच ही थी, तो वह उस गड्ढेके सामने कोई चीज न थी। वहां पड़े-पड़े हम हांपते थे और रह-रहके पानीसे अपने होंठ तर कर लिया करते थे। मारे प्यासके दम निकला जाता था; लेकिन पानी समाप्त होनेके डरसे उसे हम पी न सकते थे।

आदमी अगर जीता रहता है, तो उसके बड़ेसे भी बड़े कष्टका अन्त हो जाता है। तड़प-तड़पके हमने दिन काट दिया; सन्ध्या समीप आई। तीसरेपहर कोई तीन ही बजे हमलोग उस कब्रसे निकले। उस कब्रमें मरनेकी अपेक्षा राह चलते-चलते मरना अच्छा था। अपने समाप्त होते हुए पानीसे थोड़ा-थोड़ा पीके हम आगे चले।

हम इस बयाबानमें कोई पचीस कोस घुस आये थे। पाठकोंने उस स्पेनीके बनाये हुए नकशेमें देखा होगा, कि वह बयाबान साठ कोस चौड़ा था और उसके बीचमें गन्दे पानीका एक कुण्ड बनाया गया था। अगर वह नकशा सच्चा था और वह कुण्ड

अबतक मौजूद था, तो उसे कोई पांच या सात कोसके फासिलेपर होना चाहिये था।

तीसरे पहर हमारी यात्रा बड़ी ही धीमी थी। हम मानो अपनेको घसीटते हुए घण्टे पीछे कोई पौन कोस आगे बढ़ रहे थे। सूरज डूबनेपर चांदके इन्तजारमें हम एक जगह ठहरके थोड़ा-थोड़ा पानी पीके सो गये। सोनेसे पहले उम्बोपाने कोई चार कोस दूरका एक टीला हमें दिखाया। उतनी दूरसे वह साफ दिखाई न देता था। उसे देखके भी हम यह समझ न सके, कि वह है क्या। उसे देखते-देखते हम लगे खर्राटे भरने।

चांद निकलनेपर हम फिर आगे चले। अब मारे प्यास और गर्मीके चलनेमें बड़ी तकलीफ होती थी। हमारी वह मुसीबत पढ़नेसे नहीं; झेलने हीसे समझमें आ सकती है। अब हम चलते नहीं; लड़खड़ाते हुए आगे बढ़ते थे। मारे थकावटके जगह-जगह गिर भी पड़ते थे। हर घण्टेपर ठहरके दम लेनेकी जरूरत होती थी। बातचीत करना कठिन हो गया था। अबतक गुड हँसते-बोलते आये थे; किन्तु अब उनके मुंहपर भी मुहर लग गई!

अन्तमें रात कोई दो बजे थकावटसे चूर-चूर होके हम उसी टीलेके पास पहुंचे। वह चींटियोंका घर नहीं; सचमुच ही कोई सौ फुट ऊंचा एक टीला था। उसी टीलेके नीचे बैठके हमने अपने पानीका अन्तिम बूंद पिया। इसके बाद हम लेट गये। मेरी आँख लग रही थी; ऐसे समय मैंने उम्बोपाको आप ही आप यह कहते सुना,—"दूसरा चांद निकलनेसे पहले अगर हमें पानी न मिला, तो हम सबके सब मर जायेंगे!"

यह बात सुनके वहांकी उस गर्मीमें भी मुझे कँपकँपी आ गई। मौत हमारे सामने थी। फिर भी, बेहया नींद मौतको सामने देखके भी आ ही गई।

छठां बयान ।

पानी ! पानी !

दो घण्टे बाद, सवेरे कोई चार बजे, मेरी नींद उचट गई। जैसे ही बदनकी थकावट कुछ दूर हुई; वैसे ही प्यासकी तकलीफने अपना जोर दिखाया। अब नींद कहां? मैं सपनेमें हरेभरे किनारोंके बीच बहते हुए झरनेमें नहा रहा था; आंख खुली तो अपनेको उस बेपानीके सूखे हुए बयाबानमें पाया। उसी समय मुझे उमशोपाका वह बिना पानीके मरनेकी बात याद आ गई। मैं बैठके अपने सूखे हाथोंसे अपना सूखा चेहरा मलने लगा। मेरे होंठ और पलकें दोनों चिपक गये थे; बहुत मलनेके बाद मैं उन्हें खोल सका। सवेरा हुआ ही चाहता था; फिर भी, ठण्डी हवाके बदले चेहरे झुलसनेवाली गर्म-गर्म लू चल रही थी।

एकके बाद दूसरे मेरे सब साथी भी जागे। अब हम अपनी अवस्थापर विचार करने लगे। हमारे पास पानीका एक बूंद भी रह न गया था। हमने अपनी चमड़ेकी बोतलोंको उलटके उनका पेंदा चाटा; किन्तु वहां सिवा थोड़ी तरीके पानीका एक बूंद भी न था। गुडने ब्राण्डीकी बोतल निकाली और उसे बड़ी ही ललचीली निगाहोंसे देखने लगे। सर हेनरीने उनके हाथसे वह बोतल छीन ली। उस दशामें बिना पानी मिलाये शराब पीना मौतके मुंहमें फांद पड़ना था।

हेनरी। अगर पानी न मिला, तो मौतमें देर नहीं।

मैं। उस नकशेके अनुसार पानी यहीं कहीं होना चाहिये।

किन्तु इस बातसे किसीको भी धीरज न हुआ। नकशेसे हमारा विश्वास उठ रहा था। सवेरा होनेपर जिस समय हम बैठके एक दूसरेके चेहरेकी निराशा देख रहे थे; उस समय हॉटेण्टेट

वेण्टवोगेल चारों ओर घूम-फिरके वहांकी जमीन देख और सूंघ रहा था। कुछ ही देर बाद उसके गलेसे एक विचित्र ध्वनि हुई और वह एक जगहकी जमीनको उंगलीसे दिखाने लगा।

हम सबके सब एक साथ उठके वहां गये। मैंने पूछा;—"मा-जरा क्या है?"

इसपर उसने एक तरहकी चिड़ियोंके पैरके निशान दिखाये। मैंने कहा,—"जङ्गली बतखके पैरके निशान हैं; लेकिन इससे क्या?"

वेण्टवोगेलने अपनी जङ्गली बोलीमें कहा,—"जहां पानी रहता है, वहीं यह चिड़ियां भी रहती हैं।"

मैं। कहता तो ठीक है। मैं अभीतक यह बात भूला ही हुआ था।

इस घटनासे हमलोगोंमें नई जान आ गई। आदमी अपनी मुसीबतमें सड़ी-सड़ीसी बातसे भी आशा करता और आनन्दित होता है। अँधेरी और तूफानी रातमें एक ही सितारेकी रोशनी मनको बड़ी आशा देती है। इस अवसरमें वेण्टवोगेल बैठके और कुत्तोंकी तरह अपनी नाक आसमानकी तरफ उठाके लगा हवा सूंघने। कुछ ही देरके बाद उसने कहा,—"मुझे पानीकी महक आ रही है!"

हम सब आनन्दसे अधीर हुए। कारण, मुझे इन जङ्गलियोंका विचित्र समझका विश्वास था। ठीक इसी समय सूरजने निकलके हमारी आंखोंको एक विशाल दिखावा दिखाया। हम देखके दङ्ग रह गये। हमें बालसूर्य्यकी गुलाबी किरनोंमें अपनेसे कोई तीस या पचीस कोस दूर शेबा-स्तनकी तरफसे ढंकी हुई चमकीली चोटियां या भुटनियां दिखाई दीं, जिनके दोनो किनारे जहांतक निगाह जाती थी, वहींतक शेबा-पहाड़ फैला हुआ था। दोनो शेबा-स्तनोंकी ऊंचाई कोई पन्द्रह हजार फीटसे कम न होगी और इन

दोनोंके बीच कोई पांच या छः कोसका फासिला होगा। दूरसे देखनेसे यह दोनों चोटियां बड़ी ही शानसे सर उठाके आस्मानको चूमती हुई जान पड़ती थीं। वह लम्बा पहाड़ कोई सोती हुई सुन्दरी और वह दोनों चोटियां उस स्त्रीके स्तन जान पड़ती थीं। जैसी चिकनाई और गोलाई स्त्रीके स्तनमें होती है वैसी ही इन दोनों चोटियोंमें भी थी। स्त्रीके स्तनमें भुटनियां होती हैं, इन चोटियोंके माथेपर भी ठीक भुटनियोंजैसी बरफकी टोपियां थीं।

उस विशाल दिखावेको हमलोग एकटक देखते रहे। कुछ ही देरमें सूरज ऊंचा हुआ और वह दिखावा धुंधला हो गया; मानो कोई रूप मन्त्रके बलसे धीरे-धीरे छिपने लगा। जैसे ही उस दिखावेसे हमारा ध्यान हटा; वैसे ही जलती हुई प्यास अपना जोर एकबार फिर दिखाने लगी। वेण्टवोगेलने पानी सूंघनेका सुसमाचार सुना दिया सही; लेकिन लाख ढूंढनेपर भी हमें पानी कहीं भी दिखाई न दिया। जहांतक हमारी निगाहें जाती थीं, वहांतक हमें वही कटीली झाड़ियां और बालूका मैदान दिखाई देता था। हमने उस टीलेके गिर्द चक्कर लगाया; पासकी झाड़ियोंमें गये; किन्तु कहीं भी हमें पानी तो पानी; उसका निशान भी दिखाई न दिया। मैंने झल्लाके वेण्टवोगेलसे कहा,—"गधे! कहां है, पानी?"

वह सुनके अपनी भद्दी नाक उसने एकबार फिर अस्मानकी तरफ उठाई और कुछ देरतक सों-सों करनेके बाद बोला,—"बास! पानीकी महक आ रही है। कहीं पानी अवश्य है।"

मैं। पानी या तो तेरे सरमें है या आस्मानमें; और वह कुछ महीने बाद बरसातमें हमारी सूखी हुई हड्डियोंको तर करने लिये अवश्य बरसेगा।

हेनरी। या पानीका इस टीलेके ऊपर होना भी सम्भव है;

मैं। तो आइये, टीलेके ऊपर भी देख लीजिये।

बड़ी ही निराशाके साथ उम्बोपाके पीछे-पीछे हमलोग उस टीलेपर चढ़ने लगे। कुछ ही दूर आगे चलके उम्बोपा ठहर गया और चीखके बोला,—"पानी! पानी!"

हम तीनों दौड़के उसके पास पहुंचे। सचमुच ही बालूके अन्दर पानीका डबरा भरा हुआ था। हमने न तो पानीके वहां होनेका कारण अनुसन्धान किया न पानीकी पीली और मैली रङ्गत होकी ओर ध्यान दिया। हमने सिर्फ यह देखा, कि पानी या पानीजैसी कोई चीज वहां अवश्य थी। दूसरे ही क्षण हम सबके सब पानीका ओर टूटे और झुकके वह गन्दा पानी इसतरह पीने लगे; मानो वह देवताओंके पीनेका अमृत हो। एकबारमें उतना पानी हमलोगोंने और कभी पिया न होगा। पानी पी चुकनेके बाद हम अपने कपड़े उतारके उस डबरेमें घुसे और पानी मल-मलके लगे अपने सूखे हुए चमड़े तर करने। नदियों और तालाबोंके किनारे रहनेवाले जीव उस पीले और मैले पानीके सुखको किसी तरह भी समझ नहीं सकते!

जब हम नहाके कुण्डसे निकले, तब हमने अपनी काया पलटी हुई पाई। चौबीस घण्टेसे हमारे मुंहमें एक ग्रास भी भोजन गया न था। नहाके निकलते ही हमें बड़ी भूख मालूम हुई और हमने पेट भर-भरके वह मांस खाया। इसके बाद हम अपने-अपने नलोंमें तम्बाकू पीते हुए उस अमृत-कुण्डके सायवानजैसे किनारेकी छायामें लेटके सोने लगे।

हम दिनभर उसी कुण्डके किनारे ठहरके आराम करते रहे। वहांका पानी गन्दा था सही; लेकिन हमारे लिये प्राणोंसे भी अधिक प्यारा था। हमने उस स्पेनीकी आत्माके लिये भी

शान्ति चाही; क्योंकि उसीने अपने नकशेमें उस कुण्डका निशान बनाके हमें वहांतक पहुंचाया था। बड़ी ही विचित्र बात यह थी, कि सदियां बीत जानेपर भी वह कुण्ड सूखा न था। सम्भवतः बहुत ही गहराईके किसी सोतेसे आते हुए पानीसे ही वह कुण्ड भरा रहता था।

अपने पेट और बोतलोंको यथासाध्य भर लेनेपर चांद निकलनेके साथ-साथ हमलोगोंने आगे बढ़ना आरम्भ किया। उस रात हमलोग कोई साढ़े बारह कोस आगे बढ़े। दिन निकलनेपर हमें पानी तो न मिला; लेकिन धूपसे बचानेवाला चोटियोंका बनाया हुआ एक टीला मिल गया। अफ़रिका देशमें चोटियां टीलेजैसा घर बनाती हैं। सूरज निकलनेपर हमें विशाल शैवा-पहाड़ और भी सफाईसे दिखाई दिया; क्योंकि अब वह कोई दस ही कोस दूर रह गया था। दिनभर आराम करने और चांद निकलनेके बाद आगे बढ़नेपर दूसरे दिन सवेरेके उजेलेमें हम शैवा-पहाड़के दाहने शैवा-स्तनकी तराईमें पहुंच गये। इसीको लक्ष्यमें रखके हमने वह बयाबान पार किया था। वहांतक पहुंचते-पहुंचते हमारा पानी एकबार फिर समाप्त हो गया और हमें प्यास फिर सताने लगी। राहमें उस कुण्डका पानी पानेकी आशा थी; यहां वह आशा भी न थी। पहाड़की चोटीपर बरफके पास पहुंचनेपर ही हमें पानी मिल सकता था। घण्टे या दो घण्टे विश्राम कर लेनेपर हम उस जलती-बलती गर्मीमें शैवा-पहाड़पर चढ़ने लगे।

दिन ग्यारह बजते-बजते हमारी दशा बड़ी ही शोचनीय हो गई। ऊंचे-नीचे पहाड़पर चढ़ते-चढ़ते हमारे पैरोंमें छाले पड़ गये। थकावट और प्यासने हमें बेदम कर दिया। कुछ दूरपर हमें सायबानजैसी एक चट्टान दिखाई दी। उसकी छायामें विश्राम

करनेके लिये हम लड़खड़ाते हुए उसकी ओर चले। वहाँ पहुँचनेपर हमें छाया तो मिली ही; साथ ही हरियाली भी मिली। चुप उस हरी-भरी भूमिपर बैठके कराहने और अपने भाग्यको धिक्कारने लगे। उस समय हम सब यही सोच रहे थे, कि यह सफर नाहक ही किया गया। ऐसे समय उम्बोपा उठा और उस हरियालीमें घुस गया। कुछ ही देर बाद उसकी गरमी-चना और शाप न जाने कहां भाग गई। वह किसी चीजको हाथमें लेके लगा पागलोंकी तरह नाचने-कूदने। हमलोग घबराके उठे और उसके पास पहुंचे।

मैंने जुलू बोलीमें चिल्लाके कहा,—"उम्बोपा! तुझे क्या हो गया है?"

इसपर उसने अपने हाथकी कोई हरी चीज दिखाके कहा;—"पानी और खाना दोनो!"

अब हमने उसके हाथकी उस चीजको देखा। वह तरबूज था। वह हरियाली तरबूजोंकी लताओंकी थी, जिसमें हजारों पके हुए तरबूज लगे थे। मैंने अपने साथियोंसे चीखके कहा,—"तर-बूज!" मेरी बात पूरी होते न होते कप्तान गुडने अपनी नकली दांत एक पके हुए तरबूजमें गड़ा दिये। फिर तो आरम्भ हुई तरबूजोंकी खिलाई। हममें हरेकने कमसे कम छः तरबूज खाये होंगे। हम जगत्‌के किसी भी मेवेमें उन तरबूजोंजैसा स्वाद न आया था।

लेकिन तरबूजोंमें पुष्टि कहां? उसके पनिहे गूदेसे प्यास बुझ गई; लेकिन भूख उभर आई। हमारे पास थोड़ा बहुत सूखा मांस था सही; किन्तु उसे समाप्त कर देनेपर फिर भोजन कहांसे मिलता? ऐसे समय हमारे सौभाग्यने हमें सहारा दिया। हमें कोई दस चिड़ियोंका एक झुण्ड उस बयाबानके ऊपरसे अपनी ओर उड़के आता हुआ दिखाई दिया।

उन्हें देखते ही वेल्ट्वेगेलने भूमिपर लेटके कहा,—"मारो, साहब! मारो!" उसीकी तरह हम सब भी भूमिपर लेट गये। यह सब बड़े पेरू नामकी चिड़ियाँ थीं। हमसे पचास गजकी उंचाईपर उड़ रही थीं। मैंने एक विनचेस्टर बन्दूक हाथमें ले ली और उन चिड़ियोंका इन्तजार करने लगा। जैसे ही वह सब हमारे ऊपर पहुंचीं; वैसे ही मैं एकाएक उठ खड़ा हुआ। मुझे देखते ही वह सब एकमें मिल गईं। मैं पहले होसे जानता था, कि वह सब घबराके ऐसा ही करेंगी। यही गोली चलानेका समय था। मैंने निशाना ताकके दो गोलियां चलाईं। एक गोली निशानेपर पड़ी; कोई दस सेरकी एक बड़ी चिड़िया गिरी। कोई आध घण्टेमें उस चिड़ियेका मांस तरबूजकी सूखी पत्तियोंपर भूना गया। वैसा स्वादिष्ट भोजन कोई सात दिनसे हमलोगोंके पेटमें गया न था। समूची चिड़िया हमलोग चख गये। सिवा हड्डियों और चोंचके उसका एक टुकड़ा भी बाकी न बचा।

चांद निकलनेपर हम फिर आगे बढ़े; अपने साथ बहुतेरे तरबूज भी लेते गये। जैसे-जैसे हम ऊपर चढ़ते गये, वैसे-वैसे हवाकी ठण्डक बढ़ती गई। राहमें हमें बड़ी शान्ति मिली। सवेरा होनेपर बरफीली चोटी हमसे कोई छः कोस दूर रह गई। राहमें हमें और भी तरबूज दिखाई दिये। पानीकी ओरसे हमें निश्चिन्तता हो गई। कारण; हम जानते थे, कि बरफके पास पहुंचते ही हमें पानीकी कमी न रहेगी। लेकिन पहाड़की चढ़ाई अब बड़ी ही कठिन हो गई थी। घण्टेमें कोई आध कोससे अधिक हम आगे बढ़ न सकते थे। दूसरी कठिनता यह हुई, कि हमारा भोजन समाप्त हो गया। उस रात हमने अपने पासके सूखे हुए मांसका अन्तिम निवाला खाया। अबतक हमें सिवा उन चिड़ियोंके और कोई भी दिखाई न दिया था। कोई पानीका सोता भी दिखाई न दिया था।

इसका कोई कारण भी समझमें न आता था। ऊपरकी गलती हुई बरफका पानी न जाने कहां चला जाता था। कुछ दिनोंके बाद हमें मालूम हुआ, कि उस पहाड़की विचित्र बनावटके कारण उसकी चोटीकी बरफका गला हुआ सारा पानी उसके इस पार न बहके उस पार बहता था।

अब हमें पेटकी चिन्ता व्यापी। क्या भूखसे मरनेके लिये ही प्याससे हमारी रक्षा हुई थी? इसके बाद लगातार तीन दिनोंतक हमें खाना न मिला। उस समयकी अपनी दुर्दशाका पूरा हाल लिखना असम्भव है। तीसरे दिन—२३वीं मईको—हम बरफके किनारे पहुंचे। शेबा-पहाड़के बायें स्तनका बरफीली चिकनी चुटनी हमारे माथेके ऊपर थी। समूचा देश हमारे पैरोंके नीचे था। सूर्य्य डूब रहे थे। उनकी लाल किरनें चमकीली बरफको मानो रक्तसे रंग रही थीं। तीन दिनकी भूख और थकावटसे अधमरे होनेपर भी उस शानदार दृश्यको अपनी धंसी हुई आंखोंसे देखके हमारी आत्मायें आनन्द-से अधीर हो गईं।

कुछ देर बाद गुडने अपनी भर्राई हुई आवाजमें कहा—"और उस नकशेमें लिखी हुई गुफा!—कहीं यहीं होना चाहिये!"

मैं। हां; अगर वह गुफा है, तो उसे कहीं पास ही होना चाहिये।

सर हेनरीने कराहके कहा,—"अलान साहब! शक क्यों करते हैं? नकशेके अनुसार ही हमें पानी मिला या नहीं? उसीतरह वह गुफा भी मिल जायेगी।"

मैं। लेकिन वह गुफा अगर रातका अंधेरा होनेसे पहले हमें न मिली, तो हमारी कुशल नहीं।

कोई दश मिनटतक हम बरफपर चुपचाप आगे बढ़ते चले गये। उम्बोपा एक कम्बलसे अपनी देह ढंके और अपने कहनेके अनुसार अपनी भूख घटानेके लिये अपना पेट कमरबन्दसे कसे हुए हमारे साथ-साथ आगे बढ़ रहा था। उसने एकाएक ठहरके हमारी बांह पकड़ ली और उस बरफकी भुटनीको एक ढालको दिखाके कहा,—"वह देखो!" मैंने उसकी तनी हुई उंगलीके सीधपर देखा, तो मुझे बरफमें एक बड़ी बिल दिखाई दी। साथ ही उसने कहा,—"वही उस गुफाका मुंह है।"

हम सबने जल्द-जल्द आगे बढ़के देखा, कि सचमुच ही वह गुफाका मुंह ही था और वह उसी गुफाका मुंह था, जिसका हाल उस स्पेनीके नकशेमें लिखा था। अपने बड़े सौभाग्यसे हमें वह गुफा मिल गई; क्योंकि हमारे उस गुफाके द्वारपर पहुंचते ही बड़ी ही फुरतीसे सूरज डूब गया और हमारे चारों ओर अंधेरा छा गया। अफरिकाके उस भागमें सन्ध्याका प्रकाश ज्यादा देरतक नहीं ठहरता। हम सब बड़ी मुशकिलसे गुफामें घुसे और एक-एक घूंट ब्राण्डी पीके एक कोनेमें लेट गये। हम सब एक दूसरेकी देहकी गर्मी पानेके लिये एक दूसरेसे सटके लेटे। लेकिन वह कड़ाकेकी सर्दी पड़ रही थी, कि नींदका आना कठिन था। मेरी समझमें थर्मामिटरका पारा बरफ जमानेवाले निशानसे कोई चौदह या पन्द्रह दर्जे नीचे उतर गया होगा। भूक, थकावट और गर्मीके मारे हुए हमारे शरीरपर उस सर्दीका जो असर होता होगा; उसे पाठक थोड़ा विचारते ही समझ सकते हैं। मुझे तो यही मालूम होता था, कि उस रातका सवेरा हम कभी देख न सकेंगे। हमने सारी रात बैठके काटी। हमें ऐसा जान पड़ता था, कि मौत सर्दीके रूपमें हमारी चारों ओर मंडला रही थी और अपनी ठण्डी

उंगलोसे कभी वह हमारे चेहरेको; कभी घुटनेको और कभी-कभी हाथको छूती थी!

व्यर्थ ही हम एक दूसरेसे सटे जाते थे। हमारी उन बिना भोजनकी सूखी-साखी ठठरियोंमें गर्मी कहां? हममें कोई मारे सर्दीके सो भी जाता था, तो दो ही चार मिनट बाद फिर उठ बैठता था। इसीसे हमारी रक्षा हुई; नहीं तो हममें जो आदमी सो जाता, वह शायद कभी उठ न सकता। मैं समझता हूं, कि उस समय हमलोग केवल अपनी जीवित रहनेकी प्रबल इच्छाके बलसे ही जीवित रह सके।

गर्म देशके बच्चे बेचारे वेण्टवोगेलके दांत रातभर खटाखट बजते रहे। सवेरा होनेसे कुछ पहले उसके मुंहसे निकली हुई एक लम्बी सांस मुझे सुनाई दी। उस समय मैंने उसकी ओर विशेष ध्यान न दिया; कारण, मैं समझा, कि वह सो गया है। उसकी पीठ मेरी पीठसे लगी हुई थी। उस सांसके बादसे ही उसकी पीठ ठण्डी होती हुई जान पड़ने लगी और कुछ ही देर बाद वह बरफजैसी ठण्डी हो गई।

अन्तमें पौ फटी। इसके बाद सूरजकी लाल किरनें बरफकी तहोंपरसे दौड़के हमारी उस गुफामें घुसीं। हमने अपनी अधमरी सूरतें देखीं; साथ-साथ यह भी देखा, कि बेचारा वेण्टवोगेल मारे शीतके मरके पत्थरजैसा कठोर हो गया था। अब मेरी समझमें आया, कि मुझे उसकी पीठ बरफजैसी ठण्डी क्यों जान पड़ती थी। उसकी उस लम्बी सांसके साथ-साथ उसका दम निकल गया था। मारे आतङ्कके हम उसकी लाशसे दूर हट गये। लाशसे डरना जीते हुए आदमियोंका स्वभाव है। बेचारा वेण्टवोगेल उकड़ूं बैठे-बैठे जिसतरह मरा था; उसी तरह मरा रह गया।

इस अवसरमें उस गुफामें घुसी हुई सूरजकी किरनें तेज हुईं। वह गुफा साफ-साफ दिखाई देने लगी। ऐसे समय किसीके मुंह-से चीख निकली। मैंने पलटके जो कुछ देखा, उससे मेरे रूयं खड़े हो गये।

वह गुफा बहुत बड़ी न थी। कोई बीस फुटकी उसकी लम्बाई होगी। मैंने देखा, कि उस गुफाके दूसरे कोनेमें और एक आदमी बैठा था। उसका सर उसकी छातीपर झुका हुआ और उसकी दोनों भुजायें इधर-उधर पसरी हुई थीं। मैंने आंखें गड़ाके देखा, तो जान पड़ा, कि वह काला नहीं; गोरा आदमी था और वह भी वेण्टवोगेलकी तरह मरके पथरा गया था।

उस भयानक दृश्यको देखके हम सबके सब घबरा गये और बड़ी ही फुरतीके साथ उस गुफाके बाहर निकल गये।
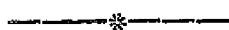
सातवां बयान।

सुलेमानकी राह।

गुफासे भागके बाहर आनेपर हम सबको बड़ी लज्जा आई। सर हेनरीने कहा,—"भाई! मैं तो गुफामें वापस जाता हूं।"

गुड। क्यों?

हेनरी। सम्भव है, कि उस गोरे आदमीकी लाश मेरे भाईकी लाश हो।

बात पतेकी थी। हम सब एकबार फिर उस गुफामें घुसे। बाहरकी रोशनीसे गुफाके अन्धकारमें आनेके कारण कुछ देरतक हमें वहांका कोई भी दृश्य दिखाई न दिया। इसके बाद जैसे ही हम देख सके, वैसे ही उस गोरेकी लाशकी तरफ बढ़े। सर

हेनरीने झुकके उसका चेहरा देखा और कहा,—"बहुत बड़ा बोझ टला छातीसे। यह मेरा भाई नहीं।"

अब मैंने उस लाशको देखना आरम्भ किया। वह लाश लम्बे कदके किसी अधेड़ आदमीकी थी। उसके बाल खिचड़ी थे; मूछें बड़ी और घनी थीं। उसका चमड़ा पीला पड़ गया था और उसकी हड्डियोंपर चिपकके बैठ गया था। उसके गलेमें पीले रङ्गकी हाथी दांतकी एक सलीब लटक रही थी। मैंने कहा,—"यह है कौन ?"

गुड। सोचो!

मैं। सोच लिया।

गुड। इतना सोचनेकी कौनसी बात है। यह लाश उसी स्पेनी सिलवेस्ट्रीके उस पूर्वपुरुष जोशेकी है, जिसने नकशा तय्यार किया था।

मैं। असम्भव! उसे मरे तीन सौ वर्ष बीते!

गुड। किन्तु इस बलाकी ठण्डकमें तीन हजार वर्ष बीत जानेपर भी उसकी लाश बिगड़ नहीं सकती। फिर; इस अटल सर्दीमें इस लाशको बिगाड़नेके लिये किसी जानवरका आना भी कठिन था। जान पड़ता है, कि उसने अपने जिस गुलामका हाल अपनी चिट्ठीमें लिखा है, वह यहींसे वह चिट्ठी ले गया था। देखो! देखो! उसके हाथके पास ही वह हड्डी भी पड़ी है, जिससे अपने खूनकी रोशनाईसे उसने वह चिट्ठी लिखी थी।

हमलोग बड़े ही आश्चर्य्यसे मुंह खोलके वह अनूठा सत्य देखते रहे। कुछ देर बाद सर हेनरीने कहा,—"और वह देखो, उसकी बांहका जख्म। इसी दावातसे उसने रोशनाई पाई थी।"

अब सन्देहकी कोई जगह न रही। हमारे सामने उसी आदमीकी लाश बैठीहुई थी, जिसकी सदियों पहले लिखी हुई चिट्ठीने हमें वहांतक पहुंचाया था। उसे देखते-देखते मेरा ध्यान उस समयकी ओर गया, जिस समय उसने भूख और ठण्डकके मारे अपनी अन्तिम सांस लेनेसे पहले हीरेकी खनिका भेद जगतमें प्रकट कर देनेकी तय्यारी की होगी। कितने भयानक सन्नाटेमें उसका दम निकला होगा! वह मरनेपर भी अपनी शोचनीय दशाका स्मारक बना हुआ बैठा था और आनेवाली बहुतेरी सदियोंतक बैठा रहेगा। उसके उस सन्नाटेको हमारे ही जैसे कुछ भटकनेवाले जीव तोड़ सकेंगे। इन सब बातोंको विचारते-विचारते मेरा माथा चकराने लगा।

सर हेनरीने होटेण्ट वेण्टवोगेलकी लाशको उस स्पेनीकी बगलमें बैठाके धीरेसे कहा,—"स्पेनीको एक साथी मिल गया। आओ, अब हमलोग यहांसे चलें।" चलते-चलते सर हेनरीने उस गोरेके गलेका वह सलीब और मैंने उसका वह हड्डीका कलम ले लिया। वह आज भी मेरे पास है और मैं कभी-कभी उससे अपने दस्तखत किया करता हूं।

हमलोग उस मनहूस गुफाके अन्धकारसे निकलके एकबार फिर सूरजके प्रकाशमें आये और आगे चले। हम सभी सोच रहे थे, कि देखें हमारी क्या गति होनेको थी। कोई पांच कोस ऊपर चढ़नेपर हम शेबा-स्तनकी बरफीली भुडनीके माथेपर पहुंच गये। दूरसे देखनेपर भुडनीकी चोटी गोल दिखाई देती थी; किन्तु वहां पहुंचनेपर हमें छोटासा एक मैदान मिला। उस मैदानके दूसरे किनारे या शेबा-पहाड़के पीछेका देश हमारे सामने था; लेकिन कुहरा छाया रहनेके कारण दिखाई न देता था।

हमलोग उस मैदानको पार करनेपर अब पहाड़के पीछे उतरने लगे। कुछ ही देर बाद कुहरा कुछ हलका हुआ। अब हमें बरफकी एक तहके नीचे—कोई पांच सौ गजके फासिलेपर—हरी-भरी भूमि दिखाई दी, जिसके बीचसे पानीकी धारा बड़ी तेज़ीसे बह रही थी। इतना ही नहीं; बहती हुई जल-धाराके किनारे सूरजकी धुंदली धूपमें दस या पन्द्रह बड़े-बड़े हिरनोंका एक झुण्ड भी दिखाई दिया।

कितना सुन्दर दिखाता था। चार दिनके भूके मनुष्योंको जल और भोजन एक ही जगह दिखाई दिया। लेकिन समस्या यह थी, कि उन हिरनोंका शिकार किया कैसे जाये। वह सब हमसे कोई छः सौ गज दूर थे और इतनी दूरसे गोली चलाके उन्हें भगा देना अपनेको और अपने साथियोंको भूखों मारना था। फिर, हवा भी मुवाफिक न थी। वह हमारी ही ओरसे बह रही थी।

हेनरी। आगे बढ़नेका विचार छोड़ देना चाहिये। यहींसे गोली चलाना मुनासिब है। अलान साहब! हां; इस बातका फैसला पहले ही होना चाहिये, कि यह शिकार बार-बार गोलियां चलानेवाली विनचेस्टरसे या एकसप्रेससे खेलना चाहिये।

विनचेस्टरसे एक हजार गज और एकसप्रेससे साढ़े तीन सौ गज दूरका निशाना साधा जा सकता था। दूसरी तरफ बड़ी कठिनता यह थी, कि विनचेस्टरकी गोली उतना तोड़ कर न सकती थी और एक्सप्रेसकी गोलीमें बड़ा तोड़ था। मैंने खूब सोच-विचारके एक्सप्रेस हीसे काम लेना स्थिर किया। मैंने कहा,—"हम तीनोंको बन्दूकें ले-लेके अपने सामनेके हिरनके कन्धेके कुछ ऊपरका निशाना साधना चाहिये। उमरोपा जैसे ही 'हां' कहे, वैसे ही हमें अपनी बन्दूकें सर करना चाहिये।"

ऐसा ही हुआ। उम्बोपाके सङ्केतपर हम तीनोंकी बन्दूकें चलीं। हम तीनोंके सामने एक क्षणके लिये धुआं छा गया। जैसे ही धुआं साफ हुआ; वैसे ही हमें बड़ा ही सुखद दृश्य दिखाई दिया। एक बड़ा हिरन गिरके छटपटा रहा था। हम सबके मुंहसे आनन्द-ध्वनि निकली। हम भूखकी भयानक मौत मरनेसे बचे। कई दिनोंके फाकेसे निर्बल होनेपर भी बरफकी चट्टानोंके ऊपरसे दौड़ते हुए हम उस हिरनके पास पहुंचे। उसका दिल और गुर्दा निकाल लिया गया। अब आग चाहिये थी। किन्तु आग कहांसे आये?

गुड। भुने हुए गोश्तके लिये जान नहीं दी जा सकती। हमें कच्चा ही मांस खाना चाहिये।

हम तीनोंमें किसीने भी कभी कच्चा मांस खाया न था। हमारी नाकें सिकुड़ने लगीं। लेकिन भूखकी ज्वालाने हमारी सारी हिचकिचाहट दूर कर दी। हमने उस दिल और गुर्देको बरफसे धोके भक्षण करना आरम्भ किया। एकबार खाना आरम्भ कर देनेपर यह कच्चा मांस ही हमें स्वादिष्ट जान पड़ने लगा। कोई आधे ही घण्टेमें हमारी काया पलट गई। एकबार फिर हममें प्राण और शक्ति आई; हमारी धीमी पड़ती हुई नाड़ियां जोरसे चलने लगीं; हमारी नसोंमें खून दौड़ने लगा। हमने थोड़ी भूख रहते भोजन रोक दिया। उपवासके बाद अधिक भोजन करनेसे मृत्यु हो जाती है।

अब हमें उस हिरनकी ओर ध्यान देनेकी फुरसत मिली। वह खच्चरके बराबर ऊंचा था और उसकी सींगें मुड़ी हुई थीं। इस जातिका हिरन मैंने उससे पहले कभी देखा न था। उसका रङ्ग भूरा था, जिसमें जगह-जगह लाल धारियां पड़ी हुई थीं। बादको मुझे मालूम हुआ, कि उस देशमें वह 'इङ्को' कहलाता था। ऐसे हिरन ऊंची ही भूमिपर पाये जाते हैं।

उस हिरनकी जांच करने और उम्बोपाको उसका मांस काटनेके काममें लगा चुकनेके बाद हमलोगोंने अपने चारों तरफका देश देखना आरम्भ किया। कोई आठ बजे दिनके सूरजकी तेज किरनें कुहरेको सोख गई थीं; सारा देश हमें अपने पैरोंके नीचे पसरा हुआ दिखाई देता था। ऐसी विशाल मनोहर दृश्यावली मैंने अपने जीवनमें बहुत कम देखी थी।

हमारे पीछे कोई पांच हजार फीटकी ऊंचाईपर शैबा-स्तनकी चोटी खड़ी होके आस्मानसे बातें कर रही थीं। हमारे सामने घोर वनसे ढंका हुआ शैबा-पहाड़का कुछ हिस्सा और उसके बाद उस पहाड़की तराईका सघन वन था। उस वनके बीचसे कल-कल नाद करती हुई साफ पानीकी एक नदी बह रही थी। बायें एक विशाल मैदान था, जो ऊंची घासकी हरियालीसे छिपा हुआ था और जिसमें जगह-जगह पशु भी दिखाई देते थे। उस मैदानके किनारे वही शैबा-पहाड़ घूमके दीवारकी तरह खड़ा था। हमारे दाहनेका देश पहाड़ी था। जगह-जगह पहाड़ियां थीं और उनके बीच सघन हरियाली। हमारे दाहने बायें और सामने बहुतेरी नदियां चमकती हुई बह रही थीं। वह समूचा विशाल देश सूरजके चमकीले प्रकाशमें चमक रहा था। वहांकी हवा प्रकृतिकी आनन्दकी सांसें जान पड़ती थीं।

हमें दो बातें कुछ विचित्र दिखाई दीं। एक तो यह, कि शैबा-पहाड़के उस पारके उस भयानक बयाबानसे इस पारका यह देश कोई तीन हजार फीट ऊंचा था। दूसरी बात यह थी, कि शैबा-पहाड़ अपनी सारी नदियोंको इसी पार बहाता था; उस पारके उस बयाबानमें एक भी नदी न गई थी।

हम जिस जगह खड़े थे, उसी जगह बैठ गये और बहुत देरतक अपने सामनेके उस मनोहर देशकी प्यारी छटा अपनी आंखोंसे पीते रहे। अन्तमें सर हेनरीने कहा,—"अलान साहब! मुझे याद है, कि उस नक़शेमें सुलेमानकी राह भी दिखाई गई है।"

इसपर गुडने एक ओर उंगली उठाके कहा,—"मैं समझता हूं, वही सुलेमानकी राह है।"

हमारे सामने सचमुच ही एक पक्की राह थी, जो देशके अन्दर दूरतक पहुंची हुई दिखाई देती थी। इस वीरानेमें युरोप-की किसी सबसे अच्छी पक्की राहजैसी राह देखके हमारे आश्चर्य-की सीमा न रही।

बहते हुए पानीमें हाथ-मुंह धोनेके बाद बरफके ढेरों और ऊँची-नीची चट्टानोंको पार करते हुए अन्तमें हमलोग उस राहमें पहुंचे। अब हम उसी राहके सहारे पहाड़से उतरने लगे। जैसे-जैसे हम आगे बढ़े; वैसे-वैसे हमें अपनी चारों ओर अधि-कसे अधिक मनोहर दृश्य दिखाई देने लगे। कहीं-कहीं राह बनानेवाले इञ्जीनियरोंकी कारीगरी भी दिखाई दी। राह; एक जगह एक पुलके ऊपरसे गई थी; दूसरी जगह पहाड़ी टीलोंके गिर्दसे घूमके गई थी और तीसरी जगह एक पहाड़ी सुरङ्गके अन्दरसे गई थी। सर हेनरीने कहा, कि इस राह और स्विजर-लैण्डकी सेण्ट गोथार्ड राहमें कोई प्रभेद नहीं।

जिस सुरङ्गके अन्दरसे वह राह गई थी; उसकी दीवारोंपर तरह-तरहकी मूर्त्तियां बनी हुई थीं। इनमें अधिकांश मूर्त्तियां रथ दौड़ाते हुए पुरुषोंकी थीं। एक बड़ी ही सुन्दर नक्काशी लड़ाईके मैदानकी थी, जिसके एक किनारे जञ्जीरसे बंधे हुए बहुतेरे कैदी थे। इन्हें देखके सर हेनरीने कहा,—"इस राहको आपलोग

सुलैमानकी राह भले ही कहिये; किन्तु यह नकाशी और मूर्त्तियां कहती हैं, कि सुलैमानके युगसे भी पहले मिश्रियोंने यहां आके यह राह बनाई थी।"

दोपहर होते-होते हमलोग पहाड़से इतना नीचे उतर आये, कि अब हमलोगोंको पहाड़के निचले भागका जङ्गल मिलने लगा। पहले हमें झाड़ियां मिलीं; इसके बाद ऊँचे और छतनारे वृक्षोंके झुण्ड मिलने लगे। ऐसे वृक्ष मुझे सिवा केप टाउनके और कहीं भी दिखाई न दिये थे।

गुड। आपलोग यहां ठहरके भोजन क्यों नहीं पकाते? मुझे फिर भूख मालूम होती है।

सभीको फिर भूख मालूम होती थी। हमलोग राह छोड़के कुछ फासिलेके एक बहते हुए सोतेके किनारे पहुंचे। यहां सूखी लकड़ियां जोड़के आग सुलगाई। अपने साथका कच्चा मांस लकड़ियोंपर भूनके हमने पेट भरके भोजन किया। इसके उपरान्त अपने-अपने नल सुलगाके लगे तम्बाकू पीने और विश्राम करने। हमारी बगलमें कलकल नाद करता हुआ वह सोता बह रह था। ऊपर उन सदाबहार वृक्षोंकी चमकीली डालियां हिल रही थीं, जिनपर बैठके रङ्ग बरङ्ग पक्षी अपने सुरीले कण्ठसे गा रहे थे। हमें ऐसा जान पड़ता था; मानो हम वैकुण्ठमें पड़े हों।

कुछ देर बाद सर हेनरी उम्बोपासे बातें करने लगे। मैं ऊंघने लगा। किन्तु कप्तान गुडको न पाके मेरी नींद भाग गई। मैंने उस सोतेके किनारे जाके देखा, कि कप्तान साहब नहानेके बाद सिर्फ एक कमीज पहने हुए बैठे थे और अपने पहननेके कपड़े झिटकारके तह कर रहे थे। इसके बाद आपने अपने बूट खूब रगड़-रगड़के साफ किये। बूट पहनके आपने कङ्घी और शीशेके सहारे अपने बाल संवारे। इसके भी उपरान्त अपनी बढ़ी हुई दाढ़ीपर पानी

मलके आप लगे अपनी हजामत बनाने। अभी आपने एक ओरको आधी दाढ़ी बनाई थी; ऐसे समय मुझे दिखाई दिया, कि कप्तान साहबके सरके पाससे कोई चमकीली चीज सनसनाती हुई निकल गई।

कप्तान गुड और मैं दोनो ही चौंक पड़े। मैंने देखा, कि मुझसे कोई बीस गज और कप्तान गुडसे कोई दस गजके फासिलेपर आदमियोंका एक झुण्ड खड़ा था। उन सबके कद लम्बे और रङ्ग तांबे जैसा था। उनमें कितने ही आदमी सरपर काले पर खोंसे और देहपर चीतेका चमड़ा लपेटे हुए थे। उनके आगे कोई सत्रह सालका युवक इस ढङ्गसे खड़ा था; मानो उसी समय उसने कोई बर्छी फेंकी हो। इसमें शक नहीं, कि जो चमक मुझे दिखाई दी थी, वह बर्छीकी थी और उसे उसी युवकने कप्तानको ताकके चलाई थी।

मेरे देखते-देखते एक बूढ़े सिपाहीने आगे बढ़के उस युवककी बांह पकड़के कोई बात कही। इसके बाद वह सबके सब हमारी ओर बढ़े। इस अवसरमें सर हेनरी और उम्बोपा भी अपनी-अपनी बन्दूकें लेके हमारे पास आके खड़े हो गये। कप्तान गुडने भी दौड़के अपनी बन्दूक उठा ली।

मैंने ऊंचे स्वरसे कहा,—"खबरदार! बन्दूकें चलने न पायें, क्योंकि हमारा छुटकारा झगड़ेसे नहीं; मैत्रीसे होगा। इसके बाद मैंने आगे बढ़के उस बूढ़ेसे कहा जिसने उस जवानसे बातें की थीं;—"स्वागत!"

यह बात मैंने जूलू भाषामें कही थी। सौभाग्यसे वह सब उस भाषाको समझते थे। जवाबमें उस बूढ़ेने भी 'स्वागत' कहा। असलमें उन सबकी भाषा जूलू न होनेपर भी उससे इतनी मिलती-जुलती थी, कि हमें एक दूसरेका मतलब समझनेमें थोड़ी भी

कठिनता होती न थी। बादको मुझे जान पड़ा, कि उन सबकी भाषा पुरानी जूलू भाषा थी।

वह। तुम कौन हो? कहांसे आये हो? तुममें तीनकी रङ्गत गोरी और चौथेकी हमलोगोंजैसी क्यों है?

उसके यह कहनेपर मैंने उम्बोपाकी ओर देखा। सचमुच ही उन सबके और उम्बोपाके रूप-रङ्गमें कोई भी फर्क न था। किन्तु इस बारेमें कुछ पूछने-ताछनेका समय न था। मैंने जवाब दिया,—"हम अजनबी हैं और तुम्हारी भलाईके लिये आये हैं। यह आदमी हमारा नौकर है।"

वह। तुम झूठे हो। कोई भी अजनबी यह पहाड़ पारकर हमारे देशमें आ नहीं सकता। फिर भी; तुम्हारा झूठ तुम्हें बचा नहीं सकता। हम अपने दस्तूरके अनुसार अजनबियोंको मार डालते हैं। यह कुकुआना देश है; यहांका राजा किसी भी बाहरी आदमीको जीता नहीं छोड़ता। तुम सब मरनेके लिये तय्यार हो जाओ।

उसकी बातसे मैं ज़रा घबरा गया। मैंने देखा कि, उन सबके हाथ बगलमें लटकते हुए छुरोंकी तरफ गये।

गुड। यह पाजी, कहता क्या है?

मैं। कहता है, कि मरनेके लिये तय्यार हो जाओ।

"उफ!" कहके कप्तान साहबने अपने नकली दांतोंकी ऊपरवाली पंक्ति नीचे खींच ली और फिर एक ही बारके मुंह बन्द करनेमें उसे खटसे अपनी जगह बैठा दी। वह घबराहटमें ऐसा ही किया करते थे। किन्तु उनकी इस बेहूदगीका बहुतही अच्छा असर हुआ। उनके नकली दांतोंका उखड़ना और जमना देखके कुकुआने मारे डरके पीछे सरक गये।

मैंने पलटके पूछा,—"क्या हुआ?"

हेनरी। कुछ हुआ नहीं; गुडके दांतका खेल है। कप्तान! मुंह फेरके तुम अपने दांत निकाल लो।

कप्तान गुडने अपने दांत निकालके अपने कमीजकी दाहनी अस्तीनमें छिपा लिये। उधर वह बुड्ढा कुछ आगे बढ़के बोला,—"अजनबियो! यह मोटा आदमी कौन है? इसकी पोशाक तुम लोगोंसे जुदा है। इसके एक गालपर बाल है; दूसरा गाल साफ है। इसकी एक आंख चमकती हुई है। इसके दांत निकलते और बैठते क्यों हैं?"

मैं। कप्तान! अपना मुंह दिखाओ।

कप्तानको बुरा तो जान पड़ा; किन्तु उन्होंने तुरन्त ही अपना भाड़जैसा मुंह, जिसमें एक भी दांत न था; उन लोगोंके आगे खोल दिया। उन लोगोंने चौंकके कहा,—"और दांत क्या हुए?" बुड्ढेने कहा,—"मैंने अपनी आंखों दांत देखे थे।"

कप्तानने अपना मुंह पोंछनेके बहाने अपने दांतोंकी दोनो पंक्तियां अपने मुंहमें रखके ठिकानेसे बैठा दीं। इसके बाद उन्होंने जो मुंह खोलके दिखाया, तो उनकी समूची बत्तीसी चम-चम चमकती हुई दिखाई दी।

यह देखते ही वह बर्छी फेंकनेवाला जवान मारे डरके चिल्लाया और घासके ऊपर औंधा लेट गया। उसके साथी थर-थर कांपने लगे। उस बुड्ढेने बड़ी हिम्मतके साथ कहा,—"तुमलोग आदमी नहीं; भूत हो। दया! दया!"

उन सबकी यह दशा देखते ही मेरे मनमें एक कल्पना उठी। मैंने बड़ी शानदार मुस्कुराहटसे मुस्कुराके कहा,—"अभी देखो तो सही, कि हम लोगोंमें कितने गुण भरे हैं। देखनेमें तुम्हारे ही जैसे आदमी हैं, किन्तु हम इस दुनियाके आदमी नहीं। हमलोग चांदके रहनेवाले हैं।"

"ऐं !" सबके मुंहसे एक साथ निकल गया।

मैं। हां! और हम तुमलोगोंमें कुछ दिनोंतक रहके तुम्हारा उपकार करनेके लिये आयेहैं। इसलिये जब हम चले थे; तब तुम्हारी भाषा सीखके चले थे।"

सबने कहा,—"ठीक है!"

उस बुड्ढेने कहा,—"भाषा तो सीखी लेकिन अच्छी तरहसे नहीं।

मैंने उसे कुछ देरतक तरेरके देखनेके बाद कहा,—"अब दोस्तो! तुम्हीं बताओ कि हमपर बर्छी फेंकनेवाले उस जवानको हम कौनसी सजा दें।"

बुड्ढा। उसकी जान न लीजिये। वह इस देशके राजाका लड़का है और मैं इस लड़केका चाचा हूं। अगर यह मारा जायेगा, तो हम सबपर आफत आयेगी।

उस जवानने उठके और तनके कहा,—"और क्या!"

मैं। यह न समझना, कि हमलोग कमजोर हैं। देखो! मैं तुम सबको अपनी ताकत दिखाता हूं। उम्बोपा! वह बल तो उठा, जो मेरी आज्ञासे गरजता है।

उम्बोपाने मेरी एक्सप्रेस बन्दूक मुझे दे दी। मेरे सामने कोई सत्तर गजकी दूरीपर चट्टानोंके ऊपर एक जङ्गली हिरन खड़ा था। मैंने उसे दिखाके कहा,—"उस हिरनको देखते हो? तुममें कोई भी आदमी उसे इतनी दूरसे सिर्फ आवाजके जोरसे मार सकता है?

बुड्ढा। नहीं।

मैं। लेकिन मैं उसे मार गिरा सकता हूं।

बुड्ढेने मुस्कुराके कहा,—"एतबार नहीं होता।"

मैंने उस हिरनका निशाना साधा; अपनी सांस रोकी और बन्दूक चला दी—धांय। इधर आवाज हुई; उधर वह पशु बिजलीसे मारे हुए पेड़की तरह धमसे जमीनपर गिरा। यह देखके सारे कुकुवाने थर-थर कांपने लगे।

मैं। देखी मेरी ताकत? अब भी तुम्हें शक हो, तो तुममें एक आदमी मरनेपर तय्यार हो और उसी मरे हुए हिरनकी बगलमें जाके खड़ा हो जाये।

इसतरह मरनेपर कोई भी राजी न हुआ। अन्तमें राजाके बूढ़ेने कहा,—"अच्छा तो है। तुम्हीं जाओ, चाचा! और उस मरे हुए हिरनकी बगलमें खड़े हो। इन सबका जादू आदमीको मार नहीं सकता।"

बूढ़ेके मनको मानो बड़ी चोट लगी। उसने कहा,—"मुझे इनके जादूगर होनेका पूरा विश्वास है। हां; जिसे विश्वास न हो, वह उस हिरनके पास जाके जरूर खड़ा हो।"

एक कुकुवानेने कहा,—"हम तमाशेके लिये मरना नहीं चाहते। हम सबको एतबार हो गया है, कि इन सबजैसे जादूगर सारे कुकुवाना देशमें नहीं।"

बुड्ढेने कहा,—"ठीक है। सुनो! चांदके रहनेवालो! मैं कुकुवानोंके राजा परलोकवासी काफाका बेटा हूं और मेरा नाम इनफादूस है। यह जवान कुकुवानोंके राजा मेरे भाई त्वालाका बेटा स्क्रागा है। याद रखो! राजा त्वाला काना है; वह हाथीजैसा बली; सिंहजैसा भयानक और एक लाख कुकुवानोंका सेनापति है।

मैं। तो हमलोग तुम छोटे आदमियोंके साथ बातें नहीं किया चाहते। हमें अपने राजा त्वालाके पास ले चलो।

गुड_ना। ऐसा ही होगा। लेकिन हमारे राजाका काल यहांसे तीनमञ्जिल दूर है। हमलोग शिकार खेलते हुए इधर निकल आये थे।

मैंने बड़ी लापरवाईसे कहा,—"कुछ पर्वा नहीं। लेकिन इन-फादूस और रुकागा! हमलोगोंसे दगा न करना। तुम्हारा दगाका इरादा भी हमलोगोंसे छिपा न रहेगा। तुम्हारे मनमें दगा आते ही हम तुम्हारा सत्यानाश कर देंगे; तुम्हारी औरतों-बच्चोंको भी खा जायेंगे और तुम्हारे देशको जलाके राख बना देंगे।"

मेरी इस बातका बड़ा असर हुआ। सारे कुकुवानोंने झुक-झुकके हमें सलामें कीं। इसके बाद वहांसे चलनेकी तय्यारी हुई। हमने अपनी बन्दूकें उठाईं। हमारे बोझ कुकुवानोंने उठाये। एक कुकुवानाने कप्तान गुडके तह किये हुए कपड़े उठा लिये। कप्तान साहब अपने कपड़े लेनेके लिये उसकी ओर बढ़े; किन्तु बुड्ढे इनफादूसने कहा,—"यह कपड़े उसीको ले चलने दीजिये।"

कप्तानने चिल्लाके कहा,—"तो क्या मैं नङ्गा ही चलूं?"

उम्बोपाके तर्जुमा करनेपर इनफादूसने कहा,—"और क्या! क्या आप इन गोरे-गोरे पैरोंके दर्शनसे हमलोगोंको वञ्चित रखेंगे? हमने आपका कौनसा अपराध किया है?"

मारे हंसीके हमलोगोंके पेट फूल रहे थे। इस बातचीतमें वह कुकुवाना कप्तानके कपड़े लेके आगे बढ़ गया। कप्तान गुडने झल्लाके कहा,—"देखते हो, पाजी बेईमानको! नीच मेरा पायजामा भी उठा ले गया।"

हेनरी। देखो, कप्तान गुड! तुम जिस सूरतमें इन कुकुवानोंके सामने जाहिर हुए हो; उसी सूरतमें तुम्हें रहना होगा। अबसे पायजामे-पतलूनकी हवस छोड़ दो। इसी एक कमीज, जूते और चश्मेपर सन्तोष करो।

मैं। और अब दाढ़ी भी आधी ही बनाया कीजिये। अगर आपकी सूरतमें जरा भी फर्क आयेगा, तो यह जङ्गली हमें दगाबाज समझेंगे। आपको नङ्गा देखके मुझे भी दुःख होता है; लेकिन उपाय क्या है? इन सबके शुबहा करते ही हममें किसीकी भी जान सलामत न रहेगी।

गुड। ऐं?

मैं। मेरी बातका विश्वास कीजिये। फिर भी; कुशल इतनी ही है, कि मौसम ठण्डा नहीं और आपके पैरोंमें बूट और देहपर कमीज है।

बेचारे गुड एक ठण्डी सांस लेके चुप हो रहे।

आठवां बयान।

कुकुवाना देश।

हम सारे दिन उसी पक्की राहसे उत्तर-पश्चिम दिशाकी ओर चलते रहे। कुकुवाने हमसे कोई एक सौ गज आगे और इनफादूस तथा स्काागा हमारे साथ चल रहे थे। राहमें मैंने पूछा,—"यह राह किसकी बनाई है?"

इनफादूस। नहीं बता सकता। क्योंकि यह बहुत ही पुरानी है। सैकड़ो सालकी जादूगरनी गगूल भी बता नहीं सकती, कि यह राह कब बनी थी।

मैं। और इस राहकी सुरङ्गकी दीवारोंपर जो मूर्त्तियां बनी हुई हैं; वह किसकी बनाई हैं?

इनफादूस। उसीकी, जिसने यह विचित्र राह बनाई है।

मैं। कुकुवाना जातिके लोग इस देशमें कब आये?

इम० । मगूल और बड़े-बूढ़ोंका यह कहना है, कि अबसे कोई दश हजार पाख पहले हमारे बड़े उत्तर दिशासे इस देशमें आये थे। हमलोग इस शैबा-पहाड़को पार कर न सके; इसीलिये इस देशमें बस गये। यह देश बड़ा ही उपजाऊ है। और कुकुवाने जानपर खेलके इसकी रक्षा करते हैं। जब राजा त्वाला अपनी फौजके सारे सिपाहियोंको जमा करते हैं; तब जहांतक निगाह जाती है, वहांतक सिपाही ही सिपाही दिखाई देते हैं।

मैं। जब देशके चारो ओर पहाड़ हैं, तब तुम्हें इतने सिपाहियोंके रखनेकी जरूरत क्या है?

इम०। नहीं; उत्तर दिशामें यह देश खुला हुआ है और उस ओरसे अकसर शत्रु घुस आते हैं, जिन्हें हम मार-काटके भगा दिया करते हैं। मेरी नौजवानोंमें शत्रुने एकबार हमपर चढ़ाई की थी। हमने उन्हें मार भगाया। तबसे अबतक देशमें शान्ति है।

मैं। इस शान्तिसे तुम्हारे सिपाही उकता गये होंगे।

इम०। नहीं। क्योंकि विदेशियोंकी चढ़ाईके बाद; हमलोगोंने आपस हीमें एक दूसरेको मारना-काटना शुरू किया था।

मैं। कैसे?

इम०। मेरे सौतेले भाई राजा त्वाला अपने और एक भाईके साथ एक ही समय पैदा हुए थे। कुकुवानोंका कायदा है, कि वह राजाके जोड़ा पुत्रोंमें एकको जीता छोड़ते और दूसरेको तुरन्त मार डालते हैं। लेकिन मेरी सौतेली माने अपने एक लड़केके मारे जानेके डरसे; एक लड़केको दिखाया और दूसरे लड़के त्वालाको छिपा दिया।

मैं। तब?

इम०। तब यह हुआ, कि मेरे पिता काफाके मरनेपर त्वालाके भाई और मेरे सौतेले भाई इमोतू राजा हुए। उनके एक लड़का

हुआ। जब वह लड़का कोई तीन सालका था; तब देशमें विदेशियोंकी लड़ाईकी वजह बहुत बड़ा अकाल पड़ा। लोग मारे भूखके बावले हो गये। उस समय मेरे सौतेले भाई राजा इमोतू जख्मी थे। एक झोपड़ेमें पड़े थे। इस अवसरमें सैकड़ो सालकी जादूगरनी उस गगूलने व्याकुल कुकुवानोंसे कहा, कि अबसे इमोतू नहीं, दूसरा राजा राज्य करेगा। इसके बाद ही उसने इमोतूके भाई त्वालाकी कमरपर बना हुआ सांपका गोदना दिखाके कहा, कि इस लड़केका यह शाही निशान देखके तुम लोग इसके राजा होनेका विश्वास करो; आजसे इमोतूकी जगह यह त्वाला तुम्हारा राजा हुआ। ऐसे समय राजा इमोतू अपने तीन सालके बच्चे और अपनी रानीके साथ झोपड़ेसे निकल आया। यह देखके त्वालाने उसके ऊपर टूटके उसकी छातीमें छुरा भोंकके मार डाला। कुकुवाने कुछ भी कर न सके। अपने पहले राजाको मरा हुआ देखके उन सबने त्वाला हीको अपना राजा मान लिया।

मैं। और इमोतूके बच्चे और औरतका क्या हुआ? क्या वह भी मार डाले गये?

इ१०। नहीं। अपने पतिकी मौत देखते ही रानी अपने उस बच्चेको लेके भाग गई। तीन दिन बाद इसी शैबा-पहाड़के पास वह अपने बच्चेके साथ भूखी-प्यासी दिखाई दी। त्वालाके डरसे लोग उसे खानेको अन्न और पीनेको दूध न देते थे। अन्तमें एक लड़कीने रातको उसे खाना और दूध दिया। वह उस लड़कीको आशीर्वाद देती हुई अपने बच्चेके साथ इसी शैबा-पहाड़की तरफ चली गई। जान पड़ता है, कि वह दोनों मर गये; क्योंकि तबसे अबतक उनका कोई पता न लगा।

मैं। तो अगर वह लड़का जीता होगा, तो वही कुकुवानोंका असली राजा होगा?

इन०। बेशक है। उसकी भी कमरपर साँपका राजचिह्न बना हुआ है। लेकिन उसके जीते रहनेकी कोई आशा नहीं।

कुछ दूर आगे बढ़नेपर इनफादूसने खाई और बेड़ेसे घिरे हुए बहुतेरे झोपड़ोंको दिखाके कहा,—"इसी क्रालमें इमोतूकी रानी और उसका बच्चा अन्तिम बार दिखाई दिया था और आज हमारा भी पड़ाव इसी क्रालमें होगा। रात होनेपर क्या आपलोग भी सोया करते हैं ?

मैंने बड़ी शानके साथ जवाब दिया,—"हमलोग जबतक तुम्हारे देशमें हैं; तबतक वैसा ही करेंगे, जैसा तुम सब किया करते हो।" इतना कहके बात उड़ानेके लिये मैं जैसे ही पलटा; वैसे ही उम्बोपा मुझसे टकरा गया। वह मेरे पीछे ही पीछे था और इसमें शक नहीं, कि उसने ऊपरकी सब बातें अक्षर-अक्षर सुनी थीं। उसके चेहरेसे विचित्र भाव दिखाई दे रहे थे। ऐसा जान पड़ता था, मानो वह अपनी किसी बड़ी ही पुरानी यादगारको ताजा करनेकी कोशिश कर रहा हो।

अब हमलोग शेबा-पहाड़ अपने पीछे छोड़के एक बड़े ही उपजाऊ और हरेभरे देशमें पहुंच गये थे। सूरजकी किरनें चमकीली और गर्म थीं; किन्तु तकलीफ न पहुंचाती थीं। ठण्डी हवाके झोंके बड़ा ही आनन्द दे रहे थे। समूचा देश प्राकृतिक सौन्दर्य और धन-से भरा-पुरा जान पड़ता था। दक्षिण-अफरिकाका ट्रान्सवाल देश अच्छा है; किन्तु कुकुवाना देश ट्रान्सवालसे भी अच्छा— स्वर्ग है।

सामनेका क्राल इनफादूसकी सैनिक अधीनतामें था। उसने अपने आनेका समाचार लेके अपने सिपाहियोंको उस क्रालकी ओर दौड़ाया। कुकुवाना सिपाहियोंको दौड़-धूपका बड़ा अभ्यास कराया जाता है। वह सिपाही बड़ी ही फुरतीसे दौड़ता हुआ क्रालकी ओर गया। जब हमलोग क्रालके समीप पहुंचे, तब हमें कुकुवाना

जवानोंकी टुकड़ियां कालसे निकलके अपनी ओर बढ़ती हुई दिखाई दीं। इन्हें देखके सर हेनरीके मनमें भय उत्पन्न हुआ। उनका भाव समझके इग्नोसीने कहा,—"हमलोगोंसे दगाकी आशङ्का न कीजिये। यह फौज मेरे मातहत है और मेरी आज्ञासे आपलोगोंका स्वागत करनेके लिये आ रही है।"

कालके बाहर एक ऊंची भूमि थी। उन सिपाहियोंकी पंक्तियां बड़ी शानके साथ बर्छियां चमकाती और अपने माथेपर लगे हुए परोंको उड़ाती हुई उस ऊंची जमीनपर पहुंचके खड़ी हो गईं। हर कम्पनीमें कोई तीन सौ जवान थे। सब मिलाके बारह कम्पनियां वहां खड़ी थीं; जिनमें कोई तीन हज़ार छः सौ जवान थे।

उनके पास पहुंचनेपर हमें दिखाई दिया, कि उनमेंका हरेक जवान कोई छः फुट ऊंचा था। कोई कोई इससे भी अधिक ऊंचा था। हरेक पकी हुई उम्र कोई चालीस सालका योद्धा था। उनके माथेपर शुतुरमुर्गके घने काले पर थे। उनकी कमर और दाहने घुटने सफेद बैलके चमड़ेसे बंधे थे। उनके बायें हाथमें कोई बीस इञ्च गर्भसूतकी ढाल थी। ढालें लोहेकी थीं, जिनपर बैलका चमड़ा मढ़ा हुआ था। दाहने हाथमें भाले थे, जिनके फल कोई छः इञ्च चौड़े होंगे। यह भाले फेंकनेके कामके नहीं; नज़दीकसे भोंकनेके कामके थे और बड़ी ही भयानक चोट कर सकते थे। सिवा इसके हरेक सिपाहीके पास तीन छुरे थे। इनमें एक छुरा कमरके तसमेसे लगा हुआ था; बाकी दो छुरे ढालमें खुंसे थे। कुकुआने इन्हें 'तोला' कहते हैं। जब वह दुश्मनपर चढ़ाई करते हैं, तब कोई पचास गजके फासिलेसे इन छुरोंको निशानेपर फेंका करते हैं। अफसरोंकी देहपर चीतेके चमड़ेकी पोस्तीनें थीं।

कुकुवानोंकी फौज मूर्त्तिकी तरह अचल खड़ी थी। जैसे ही हम पहली कम्पनीके सामने पहुंचे, वैसे ही अपने अफसरकी आज्ञा पाके उस कम्पनीके तीनो सौ जवानोंने एक साथ अपने भाले उठाये और एक स्वरसे उनके मुंहसे निकला,—कूम! इसका अर्थ है, महाराजकी जय। इसके बाद जैसे ही हमलोग सिपाहियोंकी पंक्तियां समाप्त करके क्रालकी ओर बढ़े; वैसे ही वह सब कम्पनियां पलटीं और हमारे पीछे-पीछे क्रालकी ओर चलीं। उनके पैरोंकी धमकसे पृथिवी हिलती हुई मालूम हुई।

सुलैमान राहके किनारे, एक मैदानमें, कोई आध कोसकी गहरी खाईके बीच बड़े-बड़े लट्ठोंकी दीवारोंके अन्दर वह क्राल बसाया गया था। द्वारपर एक उठनेवाला पुल था, जिसे द्वार-पालने हमारे वहां पहुंचनेपर गिरा दिया। क्रालकी बनावट बड़ी ही सुन्दर और नियमित थी। बीचमें ओरसे छोरतक एक चौड़ी राह थी। इस राहकी दोनो ओर कितनी ही सीधी राहें थीं, जिनके बीचमें चौखूंटे झोपड़ोंके अन्दर सिपाही और उस क्रालके अधि-वासी रहते थे। फूसके बने हुए झोपड़े ऊपरसे गुम्बदनुमा थे। जूलुओंके झोपड़ोंमें द्वार नहीं; झरोखे होते हैं; जिनसे घुटनोंके बल प्रवेश करना पड़ता है। इन झोपड़ोंमें ऊंचे-ऊंचे दर्वाजे थे। यह झोपड़े लम्बे-चौड़े भी अधिक थे और इनके गिर्द चूनेके पक्के फर्शवाले कोई छः फुटके चौड़े बरामदे थे।

क्रालके बीचकी उस बड़ी राहकी दोनो ओर सैकड़ों स्त्रियां हमारे देखनेके लिये खड़ी थीं। वह सब सुरूपा थीं। उनके बाल हबशियोंके बाल जैसे छोटे और सिकुड़े हुए नहीं; लम्बे और घुंघराले थे। वह सब कदमें लम्बी और बड़ी ही शानदार थीं। उनके अङ्ग सुडौल थे और होंठ अफरिकावासियोंके होंठोंसे मोटे और घिनहे न थे। सबसे अधिक असरदार उनका शान्त

भाव था। वह सब जूलू या मसाई आदि जातिकी स्त्रियोंजैसी नहीं; युरोपकी रईसजातिकी स्त्रियोंजैसी सलीकेदार थीं। वह सब अपनी नारीसुलभ कौतुकसे हमलोगोंके देखनेको राहमें निकल आई थीं, किन्तु हमें देखके जङ्गलियोंकी तरह आश्चर्य न दिखाती थीं। इनफादूसने गुड कप्तान साहबको दिखाके कहा,—"कितने सुन्दर और सांचेमें ढले हुए पैर हैं।" फिर भी; उन स्त्रियोंका धैर्य ज्योंका त्यों रहा। वह ठण्डे चेहरे और ठण्डे ही मनसे अपना बड़ी-बड़ी काली आंखोंसे कप्तान साहबकी गोरी-गोरी टांग निरखती रहीं। उधर बेचारे गुड मारे लाजके पानी-पानी हुए जाते थे।

क्रालके बीचमें बने हुए चौकमें एक बड़ा झोपड़ा था। इसके द्वारपर ठहरके इनफादूसने कहा,—"चांदके अधिवासियो! आपके आरामके लिये यह झोपड़ा हाजिर है। आपलोगोंके खाने-पीनेका प्रबन्ध जल्द ही किया जायेगा।"

सचमुच ही हमलोग बहुत ही थके हुए थे और हमें आरामका बड़ा ही प्रयोजन था। उस विशाल झोपड़ेमें घुसके हमने देखा, कि वहां हमारे सुखके बड़े सामन किये गये थे। हिरन और बैलके चमड़ेसे मढ़े हुए कोच करीनेसे लगे हुए थे; हमारे मुंह-हाथ धोनेके लिये कितने ही पात्र साफ पानीसे भरे हुए थे। हमारे थोड़ा आराम कर लेनेपर हमारे सामने दूध, शहद, फल, मांस आदि भांति-भांतिके भोजन लाये गये। स्काागा और इनफादूसको भी अपने साथ बैठाके हमलोगोंने भोजन आरम्भ किया।

भोजनके समय हमें दिखाई दिया, कि हमारे प्रति बुड्ढे इन-फादूसका भाव जैसेका तैसा था; किन्तु स्काागाका भाव बदल रहा था। हमारे दिखाये हुए चमत्कार देखनेके बादसे वह हमसे

बहुत डरा हुआ था; किन्तु अब वह हमलोगोंको मामूली आदमियोंकी तरह खाते-पीते देखके हमें शुबहेकी निगाहोंसे देखने लगा।

भोजनके उपरान्त हमलोग अपने-अपने पाइप या तम्बाकू नल जलाके पीने लगे। यह देखके कुकुवानोंको बड़ा अचम्भा हुआ। उनके देशमें तम्बाकूकी कमी न थी; किन्तु जूलुओंकी तरह वह भी उसे सूंघनेके ही काममें लाते थे; पीनेके काममें न लाते थे।

इन्फादूसने हमसे विदा होते समय कहा, कि कल सवेरे ही हमलोग त्वालाके प्रधान क्राल लूकी ओर रवाना होंगे। उसने यह भी कहा, कि जल्दी ही लूमें सालाना मेला लगनेको है; उसमें देशकी सारी फौज जमा होगी; जादूगरनियां नाचेंगी और तरह-तरहके कौतुक होंगे।

कुकुवानोंके जानेके बाद अपने एक साथीका पहरा बैठाके हमलोगोंने सोना आरम्भ किया।

नवां बयान।

राजा त्वाला।

लूके सफरका मुफस्सिल हाल लिखनेका प्रयोजन नहीं। कुकुवाना देशके बीचसे होके निकलनेवाली सुलैमान राहसे चलनेपर तीसरे दिन हमें लू दिखाई दिया। जैसे-जैसे हम आगे बढ़े; वैसे-वैसे हमें देश और भी उपजाऊ मिला। जगह-जगह छोटे-बड़े क्राल भी मिले, जिनका गठन पहलेके क्राल जैसा ही था। सभी क्रालोंमें छोटी या बड़ी फौज दिखाई दी। जूलू, मसाई, जर्मन आदि जातियोंकी तरह कुकुवाना देशमें भी हरेक जवान सिपाही बनाया जाता है। लड़ाईका समय आनेपर सारा देश कमर कसके

शत्रुसे सामना करनेपर तय्यार होता है। राहमें हमें कितनी ही बड़ी-बड़ी और निहायत शानदार फौजें सालाना मेलेमें शामिल होनेके लिये लूकी ओर जाती हुई दिखाई दीं।

तीसरे दिन सन्ध्याको जब हम एक पहाड़की चोटीपर पहुंचे, तब हमें दूसरी ओर एक विशाल और बड़े ही रमणीय देशके बीच लूकी बस्ती दिखाई दी। इस नगरका घेरा कोई ढाई कोसका था। घेरेके बाहर भी कितने ही छोटे-बड़े काल थे। इनमें मेले या लड़ाई आदिके समय आनेवाली फौजें ठहराई जाती थीं। लूसे कोई एक कोस उत्तर एक बड़ी ही सुन्दर अर्द्धचन्द्राकार पहाड़ी थी। उस समय हम यह न जानते थे, कि आगे चलके इस पहाड़ीसे हमलोगोंका बहुत बड़ा वास्ता होनेको था। लू नगरके बीचोंबीचसे एक नदी बहती थी। सम्भवतः यह वही नदी थी, जो हमें शैवा-पहाड़ीसे उतरते समय दिखाई दी थी। लू नगरमें इस नदीपर कितने ही पुल बने हुए थे। लूसे कोई तीस-पैंतीस कोस दूर हमें एक पहाड़की तीन विशाल चोटियां दिखाई दीं। ज्ञात पड़ता था, कि इस देशके दर्वाजेपर शैवा-पहाड़ और पीछे वह तीनो विशाल चोटियां थीं। हमलोगोंके उनकी ओर देखनेपर इफादूसने कहा,—"यह सुलैमान राह उसी पहाड़की तराईतक पहुंचके समाप्त हो जाती है। वह तीनों चोटियां तीन चुड़ैल कहलाती हैं।"

मैं। सुलैमान राह वहींतक क्यों समाप्त होती है?

इफा०। नहीं जानता। हां; यह जानता हूं, कि उस पहाड़में बहुतेरी गुफायें और सुरङ्गें हैं। दो पहाड़ोंके बीच एक बड़ा गड्ढा है। अगले समयमें बुद्धिमान् मनुष्य उस गड्ढेमें घुसके अपना गुप्त काम किया करते थे। इन दिनों उसमें इस देशके राजा मरनेपर रखे जाते हैं।

मैं। बुद्धिमान् आद्मी उस गड्ढेमें कौनसा काम किया करते थे ?

इ॰। मुझे क्या खबर? हां; आप चन्द्रलोकके रहनेवाले जानें, तो जान सकते हैं।

मैं। हां; हमलोग जानते हैं। वह सब चमकीले पत्थर और पोला नर्म लोहा जमा करनेके लिये उस गड्ढेमें जाया करते थे।

इ॰फाउलसने मानो बात उड़ाते हुए कहा;—"आपलोग सब कुछ जानते हैं। हमारी जादूगरनी गगूल भी बहुत कुछ जानती है। तुमें उससे आपलोगोंकी भेंट होगी।

जैसे ही इ॰फाउस हमारे पाससे हटा; वैसे ही मैंने अपने साथियोंको दूरकी वह तीनों चोटियां दिखाके कहा,—"वह देखो! हीरेकी खानि!"

मेरे पीछे ही उम्बोपा खड़ा होके सदाकी तरह कुछ सोच-विचार रहा था। मेरी यह बात सुनते ही उसने जूलूमें कहा,—"हां, गोरे आद्मी! वही हीरेकी खानि है। और जब तुम गोरोंको चमकीले खिलौनोंसे खेलनेका इतना शौक है, तो तुम्हें वह खिलौने अवश्य मिलेंगे।

मैंने चिढ़के पूछा,—"तू कैसे जानता है?"

उसने हँसके कहा,—"मैंने रातको सपनेमें देखा है।" इसके बाद वह भी मुस्कुराता हुआ वहांसे चला गया।

सर हेनरी। बड़ा ही विचित्र आद्मी है, यह उम्बोपा! अच्छा, अलान साहब! उम्बोपाको मेरे भाईकी भी कोई खबर मिली है?

मैं। नहीं। उसने बहुतेरे देशियोंसे पूछा था; किन्तु किसीने भी कोई सन्तोषजनक जवाब नहीं दिया।

गुड। लेकिन सवाल तो यह है, कि क्या आपके भाई यहांतक पहुंच भी सके थे? अरे जब नकशेका सहारा पानेपर भी हमलोग

मर-मरके यहांतक पहुंचे हैं, तब वह बिना नकशेके यहां कैसे पहुंचे होंगे!

हेनरी। यही तो देखना है!

कुछ देर बाद सूरज डूबे; चांद निकला। इनफादूसने कहा, कि अगर आपलोग आराम कर चुके हों, तो अब हम आगे बढ़ें। राजा त्वालाने कहलाया है, कि लूमें आपलोगोंके आराम और ठहरनेके लिये एक झोपड़ा तय्यार किया गया है। चांदकी निर्मल चांदनी राह दिखा रही है।

हमलोग उसी समय लूकी ओर चले। कोई एक घण्टेमें उसके पास पहुंचनेपर हमें कोसोंतक रोशनी जगमगाती हुई दिखाई दी। लूके एक फाटकके सामने खन्दकके पुलपर पहुंचनेपर हमें हथियारोंकी खड़खड़ाहट और सन्तरीकी तेज आवाज सुनाई दी। इनफादूसके मुंहसे एक शब्द निकलते ही सन्तरी सलाम करके एक किनारे खड़े हो गये और हमलोग फाटकसे पार होके नगरकी बड़ी राहमें पहुंचे। राहकिनारेके हजारों छोटे-बड़े झोपड़े पार करते हुए कोई आध घण्टेमें हमलोग एक ऐसे बड़े इहातेके सामने पहुंचे, जिसमें बहुतेरे झोपड़े बने थे। इस इहातेकी भूमि चूनेके सहारे पक्की और चिकनी बनाई गई थी। इनफादूसने कहा,—"यही तुच्छ स्थान आपलोगोंके ठहरनेके लिये चुना गया है।"

हमने अन्दर जाके देखा, कि हममें हरेकके लिये एक जुदा बड़ा झोपड़ा रहनेके लिये सजाया गया था। अबतकके देखे हुए कुल झोपड़ोंकी सजावटसे इन झोपड़ोंकी सजावट अच्छी थी। हरेक झोपड़ेमें कमाये हुए चमड़ेके मोटे और नर्म बिछौने थे। खाना भी तय्यार था। जैसे ही हम नहा-धो चुके; वैसे ही सुन्दरी स्त्रियां तरह-तरहकी कठवतोंमें फल, दूध, मधु, मांस आदि ले आईं। खाना खा चुकनेपर मेरी सलाहसे सारे बिस्तर एक

ही कोठरीमें लगाये गये और उनपर लेटके हम सब लगे खर्राटे मारने।

हमलोग कुछ दिन चढ़नेपर सोके उठे। हमारी दासियां हमारे उठनेसे पहले ही हमारी चारपाईके गिर्द आ खड़ी हुई थीं। यहांकी स्त्रियां अधिक लाज करना न जानती थीं। मैंने अपने साथियोंसे कहा, कि अब हमलोगोंको नहा-धोके कपड़े पहन लेना चाहिये। इसपर कप्तान साहबने झल्लाके कहा,—"हुंह! कपड़े पहन लेना चाहिये! भला जिसके पास सिवा एक कमीजके और कुछ है ही नहीं, वह कपड़े क्या पहनेगा अपना माथा? अलान भाई! उस बूढ़े खूसटसे कह-सुनके मेरे कपड़े दिलवादे, मेरे यार!"

मैंने इनफादूससे गुडके कपड़े मांगे, तो उसने बड़ी गम्भीरतासे कहा,—"वह सब राजा त्वालाके पास भेज दिये गये हैं और दोपहरसे पहले आपलोग भी उनके पास भेजे जायेंगे।"

दासियोंको झोंपड़ेके बाहर निकालके हमलोगोंने खूब स्नान किया। कप्तान गुडने तो यहांतक किया, कि अपनी आधी दाढ़ी पानीके सहारे फिर बना डाली; बाकी आधी ज्योंकी त्यों रही। सर हेनरीकी कन्धेतक लटकती हुई सुनहरी जुल्फें बड़ी ही भली मालूम होती थीं। मेरे सूअरके बाल जैसे कड़े खिचड़ी बाल बढ़के आध इञ्चसे कोई एक इञ्चके हो गये थे। हमलोगोंके नाश्तेसे फरागत पाते ही इनफादूसने आके हमसे कहा,—"चलिये राजा त्वालाने आपलोगोंको बुलाया है।" जवाबमें मैंने कहा,—"चलेंगे; लेकिन जरा ठहरके!"

बात यह है, कि नेटिवोंके कहनेके अनुसार काम होते ही वह हम युरोपियनोंको दब्बू समझने लगते हैं, इसीलिये हमलोगोंने राजाके पास जानेमें नाहककी देर लगाई। हमने वेएटवोगेलकी बन्दूक उसके कारतूस और कितनी ही कांचकी मालायें राजा

त्वालाकी भेंटके लिये चुने। कांचकी मालाओंसे 'नैटिव' बहुत ही प्रसन्न होते हैं; क्योंकि उनसे उनकी स्त्रियां अपने शरीरकी शोभा बढ़ाती हैं। अन्तमें हमलोग राजा त्वालासे भेंट करनेके लिये चले।

कोई पांच घण्टा राह चलनेपर हमलोग एक विशाल बेड़ेके सामने पहुंचे। उसमें बहुसंख्यक बड़े-बड़े झोपड़े थे। इर्दगिर्दके झोपड़ोंमें राजाकी रानियां रहती थीं; फाटकके सामनेके एक बड़े मैदानमें बना हुआ एक बहुत ही बड़ा झोपड़ा राजा त्वलाका था। उस झोपड़ेके सामनेका मैदान फौजोंसे भरा हुआ था। कोई आठ हजार कुकुवाना योद्धा उस समय वहां एकत्र थे। वह सब मूर्त्तियोंकी तरह निश्चल खड़े थे। उनके बर्छे धूपमें चमक रहे थे, उनके माथेके पर हवामें लहरा रहे थे।

राजा त्वलाके झोपड़ेका विशाल और सुन्दर बरामदा खाली था; सिर्फ कुछ तिपाइयां वहां रखी हुई थीं। इनफादूसके कहनेसे हम तीनों तीन तिपाइयोंपर बैठ गये; उम्बोपा हमारे पीछे खड़ा हुआ। सबकी निगाहें हमलोगोंपर जमी हुई थीं। कोई दश मिनट बाद उस झोपड़ेका दर्वाजा खुला और उसके अन्दरसे चीतेके लबादेसे ढँका हुआ एक विशाल शरीर निकला। उसके पीछे राजकुमार स्काागा और परोंके कपड़े पहने हुए बूढ़े बन्दरजैसा एक सूखा-साखा शरीर था। वह विशाल शरीर एक तिपाईपर बैठ गया; स्क्रागा उसके पीछे खड़ा हुआ और वह बन्दरजैसा जीव अपने हाथों और घुटनोंके बल चलके बरामदेके अंधेरे भागमें जा बैठा। चारों ओर सन्नाटा छा गया!

एकाएक उस भीमजैसे जीवने अपना वह चीतेके चमड़ेका चमकता हुआ लबादा अपने बदनसे सरकाके उतार दिया और हमलोगोंके सामने खड़ा हो गया। ऐसा दैत्यजैसा भयानक आदमी हमने अपने सारे जीवनमें देखा न था। उसके होंट हब-

शियोंके होंटजैसे मोटे-मोटे; उसकी नाक चिपटी थी। आंख एक ही थी; दूसरी आंखकी जगह बहुत बड़ा गड्ढा था। उसकी सारी बनावटसे क्रूरता और भैयाशी टपक रही थी। शिर बहुत बड़ा था, जिसपर शुतुरमुर्गके परोंका समूह लहरा रहा था। देहपर फौलादकी कड़ियोंका बना हुआ एक कुरता था। कमरमें कमरबन्द और घुटनोंके पास चमड़ेके मुंदरे थे। हाथमें एक बहुत बड़ा बर्छा था। गलेमें सोनेका तौक और माथेपर बहुत बड़ा एक बेतराशा हुआ हीरा था। ऐसा ही कुकुवानोंका राजा त्वाला था!

उसके खड़े होनेपर भी छाया हुआ सन्नाटा न टूटा। इसके बाद उसने जैसे ही अपना बर्छा उठाया; वैसे ही आठ हजार बर्छे उठे और आठ हजार योद्धाओंके कण्ठसे निकला,—"कूम!" तीन बार यह सलाम की गई और तीनों बार बादलके गर्जनजैसी ध्वनि हुई;—वहांकी भूमि कांपी!

साथ ही अंधेरेमें बैठे उस बन्दरजैसे जीवने अपनी पिपिहरी जैसी पतली और तेज आवाजमें कहा,—"अदब! अदब! तुम्हारे सामने तुम्हारा राजा बैठा है!"

आठ हजार जवानोंने स्वरसे स्वर मिलाके कहा,—"हमारे सामने हमारा राजा बैठा है।"

इसके बाद फिर वही अटल सन्नाटा छा गया। ऐसे समय बायें खड़े हुए एक सिपाहीकी ढाल उसके हाथसे खिसक गई और वह बड़े झन्नाटेके साथ नीचेके पक्के फर्शपर गिरी।

त्वालाने बड़ी ही घृणासे उस सिपाहीकी ओर देखा और बड़ी ही गम्भीरतासे कहा,—"इधर आ!"

एक बड़ा ही सुन्दर नवयुवक अपने साथियोंकी पंक्तिसे निकलके त्वालाके सामने आ खड़ा हुआ। त्वालाने गड़गड़ाके कहा,—"बेहूदे कुत्ते! बता; अपनी ढाल क्यों गिराई? क्या इन

अजनबियोंके सामने मुझे नीचा दिखानेके लिये ? क्या ठ्याब देता है ?"

उस सिपाहीका दम सूख गया। उसके चेहरेपर मुर्दनी छा गई। उसने बड़े ही धीमे स्वरमें कहा,—"भूलसे बेजाने यह अपराध हुआ।"

त्वालाने कड़कके कहा,—"तो उस अपराधकी सजा तुझे जरूर मिलेगी। तूने मुझे अहमक बनाया है; मरनेके लिये तय्यार हो जा!"

अपराधी अधमरा हो गया! उसके मुंहसे बड़ी कठिनतासे सिर्फ इतना निकला,—"जो हुक्म!"

त्वाला। स्कागा! चला तो अपना भाला! मार तो इस पाजी कुत्तेको!

स्कागा विकट मुस्कुराहटसे मुस्कुराता हुआ आगे बढ़ा और उसने अपना भाला उठाया। उस अभागे सिपाहीने अपनी छाती खोल दी और एक हाथसे अपनी आंखें ढंक लीं। हमलोग मारे हैरतके सन्नाटेमें आ गये।

स्कागाने एक, दो, तीन कहके भाला फेंका। उफ! हत्यारेने कितनी सफाई दिखाई। उसका भाला उस बेचारे सिपाहीको छाती तोड़के कोई एक हाथ पीठके पीछे निकल गया। उस सिपाहीके मुंहसे खून निकला और वह दोनों हाथ उठाके जमीनपर गिरा और मर गया। यह हत्या इतनी शीघ्रतासे हुई, कि उसके होते समय हम उसे अच्छी तरहसे समझ भी न सके। सर हेनरी बड़े जोशके साथ अपनी जगह खड़े हो गये।

त्वाला। वाह! अच्छा वार किया। ले जाओ, इस कुत्तेकी लाशको।

चार सिपाही आगे बढ़े और अपने साथीकी लाश उठा ले गये। उस सिपाहीकी छाती और पीठसे निकला हुआ खून चूनेका चूर छिड़कके छिपा दिया गया। सर हेनरी अबतक खड़े ही थे। मैंने उनका हाथ पकड़के उन्हें समझाया और बैठा दिया।

अब त्वालाने हमारी ओर पलटके कहा,—"गोरे आदमियो! कहो, तुमलोग कहांसे आये हो और क्या चाहते हो?"

मैं। हमलोग चन्द्रलोकसे तुम्हारे देशकी सैर करनेके लिये आये हैं।

त्वाला। तो तुमलोगोंने छोटीसी चीज देखनेके लिये बड़ा ही लम्बा सफर किया है। और यह हमलोगोंजैसा आदमी कौन है? क्या यह भी चन्द्रलोकसे ही आया है?

मैं। और क्या। चन्द्रलोकमें तुम्हारी रङ्गतकी भी बहुतेरी जातियां बसती हैं। किन्तु त्वाला! उस लोकका हाल न पूछो; कारण, हमारे समझानेपर भी तुम उसे समझ न सकोगे।

इसपर त्वालाने बड़ी ही कड़कके भावसे कहा,—"चन्द्रलोकके अधिवासियो! ज्यादा ढिठाई न करो। तुम्हारा लोक बहुत दूर है और मैं तुम्हारे पास हूं। अगर मैं उस सिपाहीकी तरह तुम सबको भी मरवा डालूं, तो तुम मेरा क्या करोगे?"

उसकी यह बात सुनके मैं दिलमें तो कांप गया; लेकिन दिखानेको खूब खिलखिलाके हंसा। मैंने कहा,—"खबरदार! ऐसा न हो, कि तुम्हारे हाथका बर्छा तुम्हारी ही छातीमें घुस जाये। हमारा एक बाल भी बांका करनेसे पहले तुम्हारा नाश हो जायेगा। क्या स्कागा और इन्फाडूसने तुम्हें हमारा हाल नहीं सुनाया? क्या तुमने हमारेजैसे आदमी कभी देखे हैं?"

त्वालाने हमलोगोंको; विशेषतः हमारे साथी कप्तान गुडको अच्छी तरहसे देखनेके बाद कहा,—"सच है; तुमजैसे आदमी मैंने कभी देखे न थे।"

मैं। क्या इन्फादूसने तुमसे यह नहीं कहा, कि हम दूरसे अपने शिकारका निशाना किया करते हैं?

त्वाला। कहा तो है; लेकिन मुझे उनकी बातोंका एतबार नहीं। मेरे सामने अपना करतब दिखाओ। वह सामने मेरे फाटकके अन्दर कितने ही आदमी खड़े हैं; उनमें किसीको मार गिराओ।

मैं। नाहककी हत्या करना हमारा काम नहीं। फिर भी, अगर तुम हमारा करतब देखा चाहते हो, तो अपने आदमियोंसे किसी बकरेको यहां लानेके लिये कहो। वह फाटकमें घुसते ही मारा जायेगा।

त्वालाने हंसके कहा,—"नहीं; जब तुम आदमीको मारोगे, तब मुझे तुम्हारे बलका विश्वास होगा।"

इसपर मैंने बड़ी शान्तिके साथ कहा,—"यही सही। तुम आप उठके उस फाटककी ओर चलो; वहां पहुंचते-पहुंचते तुम्हें मार न गिराऊं, तो कहना। या तुम नहीं जाया चाहते, तो अपने बेटे स्क्रागा होको भेजो।"

हमारी यह बात सुनके स्क्रागा चीख मारके झोपड़ेके अन्दर भागा और त्वालाके माथेपर क्रोधकी सिकड़न पड़ गई। अन्तमें उसने कहा,—"एक बकरा ले आओ!"

दो आदमी दौड़ते हुए बकरा लाने गये। मैंने पलटके सर हेनरीसे कहा,—"अबके आप निशाना मारिये। मैं इस सरको यह दिखाया चाहता हूं, कि हममें हरेक पक्का जादूगर है। डेढ़ सौ

गजके फासिलेपर उस समय गोली चले, जब बकरेकी बगल आपके सामने आये।"

सर हेनरी 'एक्सप्रेस' बन्दूक लेके तय्यार हो गये। उधर वह दोनो सिपाही एक बहुत बड़े बकरेको हांकके फाटकमें लाये। वह पशु घुसनेको तो फाटकमें घुस आया; किन्तु वहां उतने सिपाहियोंको देखके घबराया और अपनी बगल हमलोगोंके सामने मोड़के लगा मेमियाने।

मैंने कहा,—"हां; सर हेनरी!" साथ ही बन्दूक चली; वह बकरा जमीनपर लोट गया। हजारों सिपाहियोंके मुंहसे आश्चर्यकी ध्वनि हुई।

मैंने पलटके त्वालासे कहा,—"क्यों त्वाला! अब तुम्हें एतबार हुआ?"

उसके घबराके 'हां' करनेपर मैंने कहना आरम्भ किया,—"सुनो त्वाला! हमलोग यहां लड़ने-झगड़ने नहीं; घूमने-फिरने आये हैं। इसका सबूत यह है, कि जैसे नलसे हमलोग शिकार मारा करते हैं; एक वैसा ही नल हम तुम्हें भेटमें देते हैं। लेकिन याद रखना, अगर तुम इससे किसी आदमीको मारना चाहोगे, तो यह नल तुम्हींको मार डालेगा। यह न समझो, कि यह तुम्हें दिया जानेवाला नल निरा खिलौना है। अपने एक सिपाहीको आज्ञा दो, कि वह अपना बर्छा कोई पचास कदम दूर जमीनमें इसतरह गाड़ दे, कि उसके फलकी चौड़ाई हमारे सामने रहे।"

ऐसा ही किया गया। मैंने त्वालाको दी जानेवाली बन्दूक उठाके निशाना साधा और गोली चलाई। गोली बर्छेके फलपर पड़ी, वह चूर-चूर हो गया। एकबार फिर सबके मुंहसे आश्चर्यकी ध्वनि हुई।

मैंने वह बन्दूक ग्वालाके पास रख दी। ऐसे समय वह बन्दर जैसी सूरत बरामदेकी छायासे निकलके सामने आई और जब ग्वालाके सामने पहुंची, तब अपने ऊपरकी पोस्तीन फेंकके खड़ी हो गई। अब हमें जान पड़ा, कि वह बहुत बड़े उम्रकी कोई बुढ़्ढी थी। उसका चेहरा सूखके चकनाचूर हो गया था। असलमें उसके मुंहपर चेहरा नहीं; एक मुट्ठी झुर्रियां थीं। उसीमें एक बड़ा खपाचा उसका मुंह था। ठुड्डी नुकीली थी। उसकी नाक सूखके गुम हो गई थी। अगर उसकी जलती हुई दोनो आंखें न होतीं, तो वह जीवित स्त्रीके बदले कई सालकी सूखी हुई लाश जान पड़ती। उसके नङ्गे माथेका पीला चमड़ा उसके मनोभावोंके अनुसार विषैले सांपकी तरह सिकड़ता और बढ़ता था।

जिस समय वह अपने दोनो पैरोंपर खड़ी हुई; उसकी भयानक सूरत देखके हमलोग दहल गये। उसने और भी आगे बढ़के अपना दाहना हाथ ग्वालाके कन्धेपर रख दिया। उस हाथकी उंगलियोंके नाखुन कोई एक-एक इञ्चके होंगे। अन्तमें उसने अपनी पिपिहरीजैसी आवाजसे कहना आरम्भ किया,—"सुनो, राजा! सुनो, सिपाहियो! सुनो, सूरज और चांद! मुझ गमूलकी भविष्यद्वाणी सुनो!"

उसकी रुलाईजैसी भीषण आवाज सुनके सारे कुकुवाना थोड़ा कांप गये; हमलोग भी कांप गये। उसने कुछ दम लेके फिर कहना आरम्भ किया,—"मुझे भविष्य दिखाई दे रहा है। मैं क्या देखती हूं? खून!—खून!—खून! मुझे खूनकी महक आ रही है; मुझे पृथिवीसे आकाशतक लाल ही लाल दिखाई दे रहा है। और सुनाई क्या देता है? पैरोंकी आवाज! गोरे आदमियोंके पैरोंकी आवाज; उनके चलनेसे कुकुवाना देश कांप रहा है।

तुम मिट जाओगे; क्योंकि वह सब तुम्हें भक्षण कर जायंगे। किसलिये? काहेको?—त्वाला! देख अपने माथेके उस चमकीले पत्थरको।"

इसके बाद उसने अपनी चमरगिद्धकी गर्दनजैसी गर्दन हमारी ओर मोड़के हमसे कहा;—"चन्द्रलोकके रहनेवालो! हा—हा—हा! चन्द्रलोकके रहनेवालो! तुम इस देशमें किसे ढूंढने आये हो? जिसे खो चुके हो; वह इस देशमें नहीं। शताब्दियोंसे यहां कोई गोरा नहीं आया। एक आया था, वह जीता-जागता न लौटा। तुमलोग यहां चमकीले पत्थरोंके लिये भी आये हो। खून सूखनेपर वह भी तुमको मिल जायगे। पर सवाल यह है, कि क्या तुम उन्हें लेके लौट सकोगे? हा—हा—हा—हा!"

अब उसने अपनी अजगरी आंखें उम्बोपापर जमाईं और उसकी ओर तर्जनी उठाके बोली,—"और तू! काले चमड़े और घमण्डी स्वभावके आदमी! कौन है तू? क्या ढूंढने आया है यहां? चमकीले पत्थर? नहीं। पीला लोहा? वह भी नहीं! उन दोनोंको तूने इन चन्द्रलोकके जीवोंके लिये छोड़ दिया है! तब तू क्या चाहता है? ऐं!—ऐं! मैं यह क्या देखती हूं? पहचान गई! तेरे खूनकी महकसे पहचान गई। तू—तू! खोलो! खोलो इसका कमरबन्द—"

इतना कहते-कहते उसकी सारी देह एकाएक अकड़ गई। वह पछाड़ खाके गिरी और अचेत हो गई। उसके मुंहसे झाग बहने लगी। कुछ लोग आगे बढ़के उसे झोपड़ेमें उठा ले गये।

त्वाला कांप रहा था। उसने अपनी जगहसे उठके अपने हाथका इशारा किया। उसकी फौजोंमें हलचल हुई और वह

सब वहांसे जाने लगीं। कुछ ही देरमें सिवा त्वाला, उसके कुछ दरबारी और हमलोगोंके वहां और कोई बाकी न रहा।

त्वाला। गोरे आदमियो! सुनीं तुमने गगूलकी बातें? कैसी विचित्र थीं? मैं चाहता हूं, कि तुम सबको मरवा डालूं!

मैंने जोरसे हँसके कहा,—"त्वाला! हमें मारना हँसी-खेल न समझो। भूल गये उस बकरेकी मौत?"

त्वालाने बड़ी ही कठोरतासे कहा,—"राजोंके धमकानेका फल बहुत ही बुरा होता है।"

मैं। मैं तुम्हें धमकाता नहीं, सच्ची बात सुनाता हूं! एतबार न हो, तो आगे बढ़ो; हमपर हाथ उठाओ!

वह भयानक दैत्य कुछ विचारमें पड़ गया। सरपर हाथ रखके सोचता रहा। अन्तमें बोला,—"कुशलसे चले जाओ। डरना नहीं; आज रातको नाचमें आना। तुम्हारे बारेमें जो फैसला होगा, वह आज नहीं कल होगा।"

हमलोग उठे और इन्फाडूसके साथ अपने झोपड़ेमें वापस आये।

दसवां बयान।

जादूगरनियां।

अपने झोपड़ेमें पहुंचके बैठनेपर मैंने इन्फाडूससे कहा,— "इन्फाडूस! मैं तुमसे कुछ बातें किया चाहता हूं।"

इ०। कहिये!

मैं। मुझे तो त्वाला बड़ा ही जालिम राजा जान पड़ा।

इन०। हमलोग इस बातको बहुत दिनोंसे जान रहे हैं। सारा देश उसके जुल्मसे कराह रहा है। आज रातको तमाशा देखना। जादूगरनियोंका नाच होगा और उसमें बहुतेरे आदमी मारे जायगे। राजा जिसकी सम्पत्ति या स्त्री छीन लिया चाहता है या जिससे बगावतका भय करता है; उसे जादूगरनियोंसे चुनवाता और मरवा डालता है। आज रातका सवेरा होनेसे पहले ऐसे बहुतेरे आदमियोंकी हत्या की जायेगी। शायद मैं भी मारा जाऊं। अभीतक मैं इसलिये जीता हूं, कि मैं फौजोंको लड़ाना जानता हूं और फौज मेरा आदर करती है। फिर भी, मेरे जीवन- का कोई ठिकाना नहीं। हम सब त्राहि-त्राहि पुकार रहे हैं!

मैं। तो प्रजा ऐसे जालिमको हटाके दूसरा राजा क्यों नहीं चुनती?

इन०। अगर त्वाला हटाया और मारा जायेगा, तो उसका बेटा स्कागा राजा होगा और वह त्वालासे भी ज्यादा नीच है। हाय! आज अगर राजा इन्दोनूका बेटा इगनोसी जीता होता! लेकिन दुःख करनेसे क्या होगा, वह बेचारा तो मर चुका है!

ऐसे समय मेरे पीछेसे किसी गम्भीर स्वरने पूछा,—"इनफा-दूस! तुम कैसे जानते हो, कि इगनोसी मर चुका है?" मैंने पलटके देखा, कि इस बातका कहनेवाला कौन था? मुझे दिखाई दिया, कि वह और कोई नहीं; हमारा साथी वही चिरशान्त उम्बोपा था।

इनफादूसने कुछ खिजलाके कहा,—"लड़के! तू क्यों दखल देता है? तुझसे कौन बातें करता है?"

उमशोपा। सुनो, इनफादूस! मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूं। तुम यह तो जानते ही हो, कि अबसे बहुत साल पहले राजा इमोतूके मारे जानेपर उनकी रानी अपने छोटे बच्चे इगनोसीको लेके यहांसे भाग गई!

इन०। जानता हूं।

उमशोपा। तो अब यह भी जान लो, कि मा-बेटे दोनो मरे नहीं; जीते रहे। वह दोनो शैबा-पहाड़ पार करनेपर एक घुमन्ती जङ्गली जातिके साथ हो गये और वह बालूका मैदान पार करनेपर हरी-भरी भूमिमें पहुंचे।

इन०। तुझे कैसे मालूम हुआ?

उमशोपा। आगे सुनो। इसके बाद मा-बेटे भटकते-भटकते आमा जूलू जातिके देशमें पहुंचे। वह सब कुकुवाना जाति हीकी एक शाखा हैं। वहां कई सालतक रहनेपर इगनोसीकी माका देहान्त हुआ। इसके बाद इगनोसी भटकता हुआ गोरे आदमियोंकी बसतीमें गया और वहां कई सालतक रहके उसने गोरोंकी बुद्धि सीखी।

इन०। एतबार नहीं होता।

उमशोपा। सुनो तो सही। इगनोसी कई सालतक कभी मजदूर और कभी सिपाही बनके गोरोंकी बसतीमें रहा। फिर भी; उसके मनमें उसकी माताकी कही हुई बातें जागती रहीं। वह बरसोंतक कुकुवाना देशमें लौटनेकी चिन्ता करता रहा। अन्तमें कुछ गोरे आदमी अपने एक खोये हुए भाईको ढूंढनेके लिये इस देशमें आनेपर तय्यार हुए। इगनोसी उनके साथ हो गया। उन गोरोंने वह रेतका बयाबान पार किया; बरफसे ढंका हुआ शैबा-पहाड़ पार किया और कुकुवाना देशमें पहुंचे। यहां पहुंचनेपर, इनफादूस! तुम उनसे मिले!

इन०। तू पागल तो नहीं होगया है ?

उम्शोपा। नहीं; कभी नहीं; चाचाजी! मेरी ओर देखिये! मेरा ही नाम इगनोसी है; मैं ही कुकुवाना देशका सच्चा राजा हूं।

यह कहके उसने अपना कमरबन्द खोल दिया। उसका 'मूचा' नामक तहमद नीचे खिसक गया। वह माताकी गोदके बच्चे-जैसा नङ्गा हो गया। उसने अपनी कमरकी ओर दिखाते हुए कहा,—"देखो! यह क्या है?"

उसके पीछे कमरसे लेके दोनों जांघोंतक नीले रङ्गके गोदनेसे एक बड़ा सांप बना हुआ दिखाई दिया। इनफादूसने उसे झपटके देखा। देखते-देखते उसकी आंखें निकल आईं; उसका चेहरा तमतमा उठा। उसने उम्शोपाके सामने घुटने टेकके कहा,—"कूम! कूम! निश्चय हो तुम मेरे भतीजे हो; तुम्हीं इस देशके सच्चे राजा हो!"

उम्शोपाने अपने मूचापर कमरबन्द कसते हुए कहा,—"अब एकबार हुआ, चाचाजी! उठो। अभीतक मैं राजा नहीं हुआ हूं, लेकिन तुम्हारी मदद और इन गोरे आदमियोंकी मददसे एक दिन अवश्य राजा बन जाऊंगा। फिर भी; मेरे राजा बननेसे पहले गगूलके कहनेके अनुसार बड़ी मारकाट होगी। उस मार-काटमें गगूल भी मारी जायेगी; क्योंकि उसीने मेरे पिताका खून कराया और मुझे मेरी माताके साथ इस देशसे निकाला है। अब इनफादूस! फैसला करो! तुम हमलोगोंका साथ दोगे या अपने जालिम सौतेले भाई त्वालाका? बोलो!"

इनफादूस कुछ देरतक सोचता रहा। इसके बाद उसने उम्शोपा या इगनोसीके पास पहुंचके घुटने टेके और उसका दाहना हाथ अपने हाथमें लेके कहा,—"इगनोसी! कुकुवानोंके असली

राजा! मैं अपना हाथ तुम्हारे हाथमें देता हूं और मौततक तुम्हारा ही साथ दूंगा। जब तुम बच्चे थे, तब मैं तुम्हें अपनी गोदमें खिला चुका हूं; अब मेरी यह पुरानी भुजायें तुम्हारे लिये राजत्वकी राह खोलेंगी।"

उम्बोपा। तो चाचाजी! अगर मैं जीत गया, तो अपने बाद तुम्हींको इस देशका प्रधान अफसर बनाऊंगा। और अगर मैं हारा, तो तुम मारे जाओगे और दो दिन बाद मरना तो तुम्हें है ही। उठो, चाचाजी!"

इसकेबाद उसने हमलोगोंकी तरफ पलटके कहा,—"गोरे साहबो! क्या तुमलोग मुझे मदद दोगे? बदलेमें मैं तुम्हें चमकीले पत्थर दूंगा। जितने पत्थर तुम उठा सकोगे, उतने पत्थर मैं तुम्हें दूंगा। कहो, तुम्हारा क्या कहना है?"

मैंने उसकी यह बात अपने साथियोंसे कही। इसपर सर हेनरीने कहा,—"इससे कह दो, कि सीधी राहसे मिलनेवाले धनके लेनेमें कोई हर्ज नहीं; लेकिन भलेआदमी धनके लिये अपनेको बेचा नहीं करते। रह गया मैं। मैंने शुरूसे अबतक उम्बोपाको पसन्द किया है और उसके इस गाढ़े समयमें भी मैं उसका साथ दूंगा। जालिम त्वालासे बदला लेनेका मुझे एक बहाना मिल जायेगा। गुड और अलान साहब! आपलोगोंका क्या कहना है?"

गुड। कह दो इससे, कि मुझे भी झगड़ा और मार-काट बहुत पसन्द है। लड़ने-भिड़नेसे आदमीका दिल गर्म होता है। फिर भी; जबतक मैं अपना पायजामा पहन न लूंगा, तबतक लड़ाईके मैदानके पास भी न जाऊंगा।

मैंने यह दोनो जबाब उम्बोपा या अब इगनोसीको सुना दिये। इसपर उसने मुझसे कहा,—"पुराने और चतुर शिकारी! अब तुम कहो, तुम्हारा क्या जबाब है?"

मैंने कुछ देरतक सोचके कहा,—"उम्बोपा!—नहीं—इगनोसी! मुझे मार-काट पसन्द नहीं ; क्योंकि मैं शान्तिप्रिय आदमी हूं और थोड़ासा डरपोक भी हूं। फिर भी ; मैं अपने दोस्तोंका साथ छोड़ा नहीं चाहता हूं। तुमने हमलोगोंका साथ दिया है, तो मैं भी तुम्हारा साथ दूंगा। लेकिन यह न भूलना, कि मैं गरीब आदमी हूं और उन चमकीले पत्थरोंको बहुत पसन्द करता हूं। दूसरी बात यह है, कि हमलोग सर हेनरीके भाईको ढूंढने इस देशमें आये हैं। इस बारेमें तुम हमें मदद देना।"

इगनोसी। ऐसा ही होगा। अच्छा, इनफादूस! तुम्हें मेरी कमरके सांपकी कसम ; सच कहो ; क्या तुम्हारी जानमें इस देशमें कोई गोरा आदमी आया है?

इन०। नहीं।

इग०। अगर कोई गोरा आदमी यहां आता, तो तुम्हें उसके आनेकी खबर मिल जाती?

इन०। जरूर। क्योंकि शेबा-पहाड़के नीचेके सारे क्रालोंमें मेरी ही फौजें रहती हैं।

इग०। सुना, सर हेनरी! तुम्हारा भाई यहां नहीं आया।

सर हेनरीने एक ठण्डी सांस खींची। मैंने बात उड़ानेके लिये कहा,—"लेकिन इगनोसी! तुम अपने जन्मके हिसाबसे राजा होनेपर भी यहांका राज्य कैसे पा सकोगे?"

इग०। नहीं जानता!

इन०। सुनो, इगनोसी! आज रातको बहुतेरे बेगुनाहोंके मारे जानेपर लोगोंके मनमें भरी हुई ज्वालाको घृणा भड़क उठेगी। वहां देशके बड़े-बड़े सरदार जमा होंगे। मार-काट हो जानेपर मैं उन्हें उनकी फौजोंके साथ तुम्हारे दलमें मिलानेकी कोशिश करूंगा। वह लोग यहां आके तुम्हारे बदनका सांपका गोदना

देखेंगे। मेरी तरह उन्हें भी अगर तुम्हारे इगनोसी होनेका एतबार हो गया, तो कल सवेरेतक तुम कमसे कम बीस हजार सिपाहियोंके राजा हो जाओगे। अब मैं जाता हूं। जादूगरनियोंके नाचके बाद अगर हमलोग जीते बचेंगे, तो आज पिछली रातको इसी जगह फिर मिलेंगे।"

ऐसे समय हमें राजा ट्वालाके भेजे हुए आदमियोंके आनेका समाचार मिला। तीन आदमी हाथोंमें तीन लोहेके कुरते और तीन बड़े कुल्हाड़े लिये हुए उस कोठरीमें आये। इन सब चीजोंको हमारे सामने रखके उनमें एकने हमसे कहा,—"हमारे राजाने यह सब चीजें आपकी भेंटके लिये भेजी हैं।"

मैं। जाओ। राजाको हमारा धन्यवाद और सलाम कहना।

उनके जानेपर हमलोगोंने देखा कि तीनों कुरते फौलादकी चमकीली कड़ियोंके बने थे। कारीगरने उनके बनानेमें कमाल किया था। हरेक कुरता सिकोड़नेपर दोनों हथेलियोंके बीच आ जाता था। मैंने इनफादूससे पूछा, कि यह तुम्हारे देशकी कारीगरी है?

इन०। नहीं, सरकार! यह पोशाक अगले समयकी बनी हुई है। केवल राजा और राजपरिवारके लोग ही इसे पहना करते हैं। लड़ाईमें इसके पहननेवालेपर तीर, छुरे और बर्छोंका कोई असर नहीं होता। ट्वाला आपलोगोंसे या तो बहुत प्रसन्न हुआ है या डर गया है; तभी उसने ऐसी पोशाक आपलोगोंके लिये भेजी है।

इनफादूसके जानेपर हमलोग सारे दिन आज सवेरेकी घटनापर सोचते-विचारते रहे। अन्तमें सूरज डूबा; समूचा लू नगर रोशनीसे जगमगा उठा। सांझके अंधेरेमें नाचके मेलेमें शामिल होनेके लिये जाती हुई फौजोंकी हजारों कदोंकी

खड़खड़ाहट सुनाई दी; उनके पैरोंकी धमकसे पृथ्वी डोलती हुई जान पड़ी। कुछ देर बाद अफरिकाका चमकीला चांद निकल आया। हमलोग अपने झोपड़ेसे निकलके चांदकी शोभा निरख रहे थे; ऐसे समय लड़ाईकी पोशाकसे सजा हुआ इनफादूस बारह रक्षक सिपाहियोंके साथ हमलोगोंको नाचके मेलेमें ले जानेके लिये आया। हमलोग अपने कपड़ोंके नीचे वह लोहेके कुरते पहले ही पहन चुके थे। मेरे और गुडके बदनपर वह कुरते कुछ ढीले आये; किन्तु सर हेनरीकी देह-पर बड़ी ही चुस्तीसे आया; मानो वह उन्हींके लिये बनाया गया हो। तपञ्चोंसे सुसज्जित कमरबन्द कस और हाथोंमें ट्वालाके भेजे हुए वह कुल्हाड़े लेके हमलोग मेलेकी ओर चले।

हमलोगोंने राजा ट्वालाके झोपड़ेमें पहुंचके देखा, कि दालान-का सारा मैदान कोई बीस हजार सिपाहियोंके एकत्र होनेसे भरा हुआ है। हरेक फौज रेजिमेण्टोंमें; रेजिमेण्ट कम्पनियोंमें और कम्पनियां पंक्तियोंमें बंटी हुई थीं। हर दो पंक्तियोंके बीच ऐसा अन्तर रखा गया गया था, जिससे जादूगरनियां आ-जा सकें। बड़ा ही शानदार दृश्य था। वह सिपाहियोंका समुद्र शान्तभावसे खड़ा था और चांदकी नाचती हुई किरनें उन सिपाहियोंके अचल और तने हुए शरीरको; उनके हाथके हजारों बर्छोंको; उनके सरोंपर लहराते हुए परों और उनके हाथकी रङ्ग-बरङ्गी ढालोंको चमका रही थीं। जहांतक हमारी निगाहें जाती थीं; वहांतक हमें सिपाही-सिपाही नजर आते थे।

मैंने इनफादूससे पूछा, कि क्या देशकी सारी फौजें यहां आई हैं?

इ०। नहीं, सरकार। यह तो एक तिहाई है। हर साल नाचके मेलेमें इतने ही सिपाही यहां जमा होते हैं। सिवा इनके बारह हजार सिपाही इस कालके बाहर मैदानोंमें जमा हैं। मार-काट होनेके समय यहां बलवा होनेपर वह सिपाही मददके लिये बुलाये जा सकते हैं। सिवा उनके दस हजार सिपाही लू शहरकी चारो ओरकी चौकियोंमें हैं। बाकी सिपाही देशके जुदा-जुदा कालोंमें हैं।

गुड। इन सबके मुंहसे एक बोल भी नहीं निकलता।

इ०। निकले कैसे? जिनपर मौतकी छाया पड़ चुकती है; उनके मुंह इसीतरह बन्द हो जाते हैं।

मैं। क्या बहुतेरे सिपाही मारे जायंगे?

इ०। बहुतेरे!

मैं। क्या हमलोगोंकी जानें भी खतरेमें हैं?

इ०। मैं नहीं जानता। फिर भी; अगर आजकी रात हमलोग जीते रहंगे, तो बाजी मार लेंगे। सिपाहियोंके दिल त्वालाकी तरफसे खट्टे हो गये हैं।

यह बातें करते हुए हमलोग त्वालाके झोपड़ेके सामनेकी एक खुली भूमिमें पहुंचे। यहां कितनी ही तिपाइयां रखी हुई थीं। वहां पहुंचते ही हमें त्वालाके झोंपड़ेकी ओरसे आते हुए कितने ही आदमी दिखाई दिये।

इ०। वह देखिये राजा त्वाला अपने बेटे स्कागा और गगूलके साथ आ रहा है। उनके साथ हाथोंमें बर्छे और छुरे लिये हुए भयङ्कर मनुष्य जल्लाद हैं।

त्वाला आके तिपाईपर बैठ गया। गगूल उसके पैरोंके नीचे बैठ गई। अन्यान्य लोग त्वालाके पीछे खड़े हो गये। त्वालाने हमलोगोंको देखके कहा,—"गोरे आदमियो! जरा अपनी चारो

ओरके इन सिपाहियोंको देखो। क्या ऐसा दृश्य तुमने कभी चन्द्रलोकमें भी देखा है? देखो! उनमें जो पापी हैं, वह अपनी मौतके डरसे कैसा डर रहे हैं।"

गगूलने चीखके कहा,—"शुरू करो! गीदड़ भूखे हैं। वह सब मांसके लिये रो रहे हैं।"

इसके बाद सन्नाटा और भी गहरा हो गया। उस भयानक सन्नाटेमें त्वालाने अपना बर्छा उठाया; साथ ही बीस हजार योद्धाओंने एक साथ अपने पैर उठाये और जमीनपर जोरसे पटक दिये। ऐसा ही उन सबने तीन बार किया। इसके बाद किसीने बहुत दूरसे मानो रो-रोके गाना आरम्भ किया, जिसका अर्थ था,—"जो मर्द औरतसे पैदा होता है, उसका नतीजा क्या होता है?"

सारे योद्धाओंने स्वरसे स्वर मिलाके जवाब दिया,—"मौत!"

इसके बाद ही सारी फौजने मिलके कोई गीत गाना आरम्भ किया। उस गीतको समझना कठिन था। एक गीत समाप्त होनेपर कई गीत गाये गये। अन्तमें एक अन्तिम गीत गाके और उसके भी अन्तमें एक अतीव भयानक रोनेजैसी ध्वनि करनेपर सब सिपाही चुप हो गये। फिर सन्नाटा छा गया।

इस बार त्वालाने अपना हाथ उठाया! उसी समय सिपाहियोंके पीछेसे बहुतेरे पैरोंके शब्द सुनाई दिये। कुछ ही समयमें हमें बहुतेरी विचित्र और भयानक सूरतें दौड़के आती हुई दिखाई दीं। उनके पास आनेपर जान पड़ा, कि वह सब जादूगरनियां थीं। उनमें कितनी ही बुड्ढी; बाकी जवान थीं। उनके कमरतक लटकते हुए बालोंमें मछलियोंके अन्दरकी हवाकी थैलियां बंधी थीं और चर्बी लगी हुई थी। उनके चेहरोंपर सफेद और पीली धारियां बनी

हुई थीं। उनकी पीठपर सांपके चमड़े और उनकी कमरसे आद-मियोंकी हड्डियोंकी झालरें लटक रही थीं। उनके दाहने हाथोंमें एक-एक चिमटे-जैसी लकड़ियां थीं। ऐसा ही उनका वेश था। वह सब ग्वालाके सामने आके खड़ी हो गईं। उनमें एकने अपने हाथकी उस लकड़ीको गमूलकी ओर उठाके कहा,—"माता! हम सब आ गईं।"

गमूल। आ गईं! जादूगरनियो! क्या तुम अंधेरेमें देख सकती हो?

जादूगरनियां। देख सकती हैं!

गमूल। दिलकी बातें सुन सकती हो?

जादूगरनियां। सुन सकती हैं!

गमूल। क्या तुम सब पापियोंको पहचान सकती हो?

जादूगरनियां। पहचान सकती हैं!

गमूल। तो जाओ! चुड़ैलो! अपना काम करो! जल्लादोंके हथियार खून पियें। चन्द्रलोकसे आये हुए—हा-हा-हा—चन्द्र-लोकसे आये हुए यह आदमी तुम्हारे करतब देखें!

एक भयानक ध्वनि करती हुई और अपने कमरकी हड्डियां बजाती हुई वह जादूगरनियां चारो ओर छिटकके सिपाहियोंकी पंक्तिके बीच घुस गईं। उन सबको देखना असम्भव था, इसलिये मैं एक उसी जादूगरनीको देखने लगा, जो मेरे पास और सामने थी। जब वह दौड़ती हुई बढ़के सिपाहियोंकी पंक्तिके पास पहुंची, तब लगी चीख-चीखके गाने और भयानक नाच नाचने। नाचते-नाचते वह फिरकीकी तरह बारंबार घूमने भी लगी। धीरे-धीरे वह और भी तेजीसे नाचने लगी। अन्तमें उसका जोश इतना बढ़ा, कि उसके मुंहसे झाग निकलने लगी; उसकी आंखें निकलके नाचने लगीं और उसका शरीर प्रत्यक्षमें कांपने लगा। अन्तमें वह एकाएक ठहर गई और

अपने हाथकी लकड़ी दिखाती हुई सिपाहियोंकी ओर बढ़ने लगी । मौतसे भी न डरनेवाले वह सिपाही उस लकड़ीको देखके पीछे झुक गये । हमलोग भय और आश्चर्यसे उसका तमाशा देखते रहे । अब वह जादूगरनी शिकारपर झपटनेवाली बिल्लीकी तरह ज़मीनसे चिपकके धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगी । अन्तमें उसने एक बड़ी ही भयानक आवाज की और अपनी जगहसे उछलके एक लम्बे सिपाहीकी देहसे वह अपनी चिमटेजैसी लकड़ी छुला दी । उसी समय उस सिपाहीके दोनों ओर खड़े हुए दो सिपाहियोंने अपने बीचके उस सिपाहीकी भुजायें पकड़ लीं और उसे ट्वालाके सामने ले चले ।

उस अभागे कैदीकी जान मानो सूख गई थी। उसके पैर मानो बेजान हो जानेकी वजह उठते न थे। उसकी उंगलियां किसी लाशकी उंगलियोंकी तरह अकड़ गई थीं। जैसे ही वह ट्वालाके सामने लाया गया; वैसे ही दो जल्लाद उसके पास पहुंचे। उन सबने ट्वालाकी ओर मुड़के देखा।

ट्वाला। मारो!

गगूल। मारो-मारो!

स्कागा। हां-हां; मारो!

स्कागाके मुंहसे अभी पूरी बात निकलने न पाई थी, कि उस अभागे सिपाहीका काम तमाम कर दिया गया। एक जल्लादने उसकी छातीमें बर्छा घुसेड़ दिया; दूसरेने लोहेके मुगदरसे उसकी खोपड़ी चूर-चूर कर दी। ट्वालाने पुकारके गिनती गिनी,—"एक!"

यह हत्या अभी अच्छी तरहसे समाप्त भी न होने पाई थी, कि दूसरा जवान बकरेकी तरह मारा जानेके लिये लाया गया। वह सिपाही नहीं; कोई फौजी अफसर था; क्योंकि उसकी देहपर

चीतेकी खाल थी। एकबार फिर उसी तरह 'मारो-मारो'की आज्ञा दी गई। एक और हत्या पूरी की गई। त्वालाने फिर पुकारके कहा,—"दो!"

अबके हमलोगोंने उठके त्वालाको समझानेकी कोशिश की; किन्तु उसने बड़ी ही सख्तीसे झिड़कके हमें बैठा दिया। फिर तो आदमीपर आदमी मारे जाने लगे। कुछ ही देरमें कोई एक सौ लाशें त्वालाके सामने पड़ी हुई दिखाई दीं।

रात कोई साढ़े दस बजे यह हत्याकाण्ड रुक गया। जादूगरनियाँ अपना खूनी खेल करते-करते थकके लौट आईं। हमलोगोंने अनुमान किया, कि उनका भयानक नाच समाप्त हुआ। किन्तु यह हमारी भूल थी। इसबार गगूल उठी और लकड़ी टेकती हुई आगे बढ़ी। हमें यह देखके बड़ा ही आश्चर्य हुआ, कि कुछ ही दूर आगे बढ़नेपर उसमें बड़ी शक्ति आ गई और वह दूसरी जादूगरनियोंकी तरह लगी इधरसे उधर दौड़ने। वह दौड़ते-दौड़ते झपटी और उसने अपने हाथकी लकड़ी एक फौजी अफसरको देहसे छुला दी। साथ ही उस अफसरकी फौजके सारे सिपाहियोंके मुंहसे दुःखकी आवाज निकल गई। फिर भी; उसके साथी दो अफसर उसे पकड़के मारे जानेके लिये त्वालाके सामने लाये। वह अभागा अफसर बड़ा ही धनी और त्वालाका सम्बन्धी था।

वह मारा गया और त्वालाने कहा,—"एक सौ तीन!" इसके बाद गगूल फिर इधर-उधर दौड़ने लगी। इतना ही नहीं; दौड़ते-दौड़ते वह हमलोगोंके पास पहुंचने लगी।

कप्तान गुडने घबराके कहा,—"उफ! यह चुड़ैल तो हमीं लोगोंकी तरफ बढ़ रही है।"

सर हेनरी। लेकिन इससे क्या!

मेरे मुंहसे एक शब्द भी न निकला। गगूल जैसे-जैसे हमारे पास पहुंच रही थी; वैसे-वैसे मेरा दिल बैठा जा रहा था। ऐसे समय मेरी निगाह अपने सामने पड़ी हुई उन लाशोंके ढेरपर पड़ी। मैं सिरसे पैरतक कांप उठा!

फेरा लगाती हुई गगूल और भी पास आई। उसकी आंखोंसे चिनगारियां निकल रही थीं। सारी जनता उसका तमाशा देख रही थी। अन्तमें उसने हमारे सामने ठहरके हमलोगोंकी ओर अपनी लकड़ी उठाई।

सर हैनरी। किसकी ओर इशारा है?

दूसरे ही क्षण सारा सन्देह जाता रहा। गगूलने अपनी जगहसे उछलके हमारे पीछे खड़े उम्बोपा या इगनोसीको अपने हाथकी लकड़ीसे छू दिया और चीखके कहा,—"मारो! मारो! खूनकी नदी बहनेसे पहले; इसे मार गिराओ।"

चारो ओर सन्नाटा छा गया। मैंने तुरन्त उठके उस सन्नाटेमें कहा,—"राजा त्वाला! यह तुम्हारी प्रजा नहीं; हमारा नौकर है। इसे मारना और हमें मारना बराबर है। हम तुम्हारे मिहमान हैं। तुम्हारा धर्म है, कि तुम हम सबकी रक्षा करो।"

त्वालाने झिड़कके कहा,—"चुप रहो! गगूलकी आज्ञा टल नहीं सकती। वह जरूर मारा जायेगा।"

मैंने भी कड़कके कहा,—"कभी नहीं। वह न मरेगा; मरेगा वह, जो उसे मारनेके लिये आगे बढ़ेगा।"

त्वालाने खूनसे डूबे हुए जल्लादोंकी ओर मुड़के गर्जन किया,—"पकड़ो, इस कुत्तेको!"

वह सब कुछ दूरतक हमारी ओर बढ़के ठिठक गये। उधर इगनोसीने अपना बर्छा रखके अपनी बन्दूक उठाई। वह वीर मरनेसे पहले मारनेपर तय्यार हुआ।

मैंने जल्लादोंको झिड़कके कहा,—"कुत्तो! अगर जान प्यारी है, तो खबरदार! आगे न बढ़ना। इस आदमीपर वार करते ही मैं तुम्हारे राजा त्वालाको मार डालूंगा।"

यह कहके मैंने अपना तपञ्चा निकालके त्वालाकी तरफ सीधा किया। सर हेनरी और गुडने भी अपने-अपने तपञ्चे निकाले। सर हेनरीने बड़े जल्लादका और गुडने गगूलका निशाना साधा।

जैसे ही मेरे तपञ्चेका मुंह त्वालाकी छातीके सामने हुआ; वैसे ही वह घबराके पीछे झुक गया। उसी समय मैंने पूछा,—"क्यों त्वाला! क्या विचार है?"

त्वाला। इस जादूके नलको सामनेसे हटाओ। मैं तुमसे डरता नहीं; तुमने धर्मकी दुहाई दी, इसलिये मैं अपना धर्म पालन करता हूं। जाओ, तुमलोगोंको कोई न छेड़ेगा।

मैंने बड़ी ही लापरवाईसे कहा,—"हमलोग भी यहां ठहरना नहीं चाहते; क्योंकि यहांकी मार-काट देखते-देखते उकता गये हैं। क्या नाच समाप्त होगया?"

त्वाला। समाप्त हो गया। इन मारे गये आदमियोंको यहांसे उठाके गिद्ध और कव्वोंके खानेके लिये फेंक दो।

इतना कहनेपर उसने अपना बर्छा उठाया। उसी समय वहांकी फौजें फाटककी ओर चल पड़ीं। कुछ ही देरमें मैदान खाली हो गया। हमलोग भी उठे और त्वालाको सलाम करनेपर अपने झोपड़ोंकी ओर चले।

झोपड़ेमें पहुंचनेपर सर हेनरीने एक तिपाईपर बैठके कहा,—"उफ!"

गुड। अबतक मैं त्वालासे लड़नेमें जरा सङ्कोच कर रहा था; लेकिन आज रातको उसकी करतूत देखके मेरा वह सङ्कोच भाग गया

है। उस खूनी नाचके समय मैं बड़ी मुशकिलसे अपना क्रोध रोक रहा था। हत्याके समय मैं अपनी आंखें बन्द कर लेता था; किन्तु वह कम्बख्त ऐन चोट होनेके समय ही खुल जाया करती थीं। उम्बोपा, यार! तुम बाल-बाल बच गये, भाई!

इगनोसी। तुमलोगोंका यह एहसान मैं कभी न भूलूंगा। मेरा चाचा इनफादूस भी अब आता ही होगा।

हमलोग बैठके लगे अपने पाइप पीने।

ग्यारहवां बयान।

सबूत।

हमलोग कोई दो घण्टेतक चुपचाप बैठे रहे। हरेकका मुंह कुछ न कहता था; लेकिन मन उस खूनी नाचके बारेमें तरह-तरहकी कल्पनायें कर रहा था। रात ज्यादा आनेपर जब हमलोग सोनेकी तय्यारी करनेके लिये उठे, तब हमें बहुतेरे पैरोंकी आवाजें सुनाई दीं। इसके बाद हमारे इहातेके द्वारपर खड़े हुए सन्तरीकी आवाज सुनाई दी। इस आवाजके जवाबमें एक दूसरी आवाजने कुछ कहा; इसके बाद फिर पैरोंकी आवाजें हुईं। दूसरे ही क्षण कितने ही शानदार सर्दारोंके साथ इनफादूस हमारे झोपड़ेमें आया।

इन०। सरकार! मैं अपने वादेके अनुसार आ पहुंचा। यह मेरे साथी चुने हुए अफसर और सर्दार हैं। इनमें हरेक तीन-तीन हजार सिपाहियोंका अफसर है। मैंने जो कुछ देखा और सुना है, वह इनलोगोंसे कह दिया है। अब यह लोग भी अपनी आंखोंसे

उस राजकीय गोदनेको देखना चाहते और अपने कानोंसे इगनोसी-की बातें सुनना चाहते हैं। इसके बाद् यह सब इगनोसीका साथ देने या न देनेका फैसला करेंगे।

इगनोसीने एकबार फिर अपना कमरबन्द् खोलके 'मूचा' गिरा दिया। हरेक सर्दारने बारी-बारीसे इगनोसीकी कमरपर बने हुए उस सांपके गोदनेको देखा और बिना कुछ कहे सुने दूसरी ओर जा खड़ा हुआ। इसके बाद् इगनोसीने 'मूचा' पहनके अपने भागने और लौटनेकी सारी कहानी उनलोगोंसे कह सुनाई। उसकी कहानी समाप्त होनेपर इनफादूसने कहा,—"अब कहो, सर्दारो! तुम्हारा क्या कहना है? क्या तुम कुकुवाना देशके इस सच्चे राजाकी मदद् किया चाहते हो? त्वालाके जुल्मसे यह देश हिल रहा है। आज रातकी मार-काटमें तुम्हारे तीन साथी सर्दार भी मारे गये। गीदड़ उनकी लाशें खा रहे होंगे। अगर अब भी तुम न चेतोगे, तो एक दिन तुम्हारी लाशोंकी भी ऐसी ही दुर्दशा होगी। त्वालासे बदला लेनेका यह सुअवसर आया है। कहो; तुमलोगोंका क्या कहना है?"

इसपर सफेद् बालोंवाले एक मोटे-ताजे सर्दारने अपने साथियोंके झुण्डसे निकलके कहा,—"सच है, इनफादूस! सच-मुच ही त्वालाके पापसे यह देश कांपने लगा है। आज रातको मेरा एक सगा भाई मारा गया है। फिर भी; मामला ज़रा टेढ़ा है। त्वालाको सिंहासनसे उतारनेमें खूनकी नदियां बहेंगी। इस-लिये हम उसके विरुद्ध बगावत करनेसे पहले यह जानना चाहते हैं, कि इगनोसी और उसके यह गोरे साथी सच्चे हैं या नहीं। यह लोग अपनी सच्चाईका कोई ऐसा सबूत दें, जो सारे देशको दिखाई दे और जातिके सब लोग उसे देखनेपर त्वालाका साथ छोड़के हमलोगोंका साथ दें।"

मैं । क्या उस सांपके गोड़नेका सबूत तुमलोगोंने नहीं देखा ?

सर्दार । उतनेसे हमारा सन्तोष हो नहीं सकता । हमलोग बिना जबरदस्त सबूत पाये इस टेढ़े कामको हाथ न लगायेंगे ।

उस सर्दारके साथियोंने भी यही बात कही और मैंने पलटके यह सब बातें गुड और सर हेनरीको समझाईं ।

गुड । ओह ! सबूत देना कौनसी बड़ी बात है । जरा इन सबसे सोचनेका समय ले लो ।

उन सबके दूसरे झोपड़ेमें जानेपर गुडने अपना 'नोट-बुक' निकाला, जिसके आरम्भमें कुछ छपे हुए वर्कोंमें पञ्चाङ्ग था । उसे दिखाके उन्होंने कहा,—"कल ४ थी तो जून है न ?"

मैं । हां ; ४ थी जून !

गुड । बस, तो बाजी मार ली । पञ्चाङ्गमें लिखा है, कि ४ थी जूनको पूरा चन्द्रग्रहण है । रात सवा आठ बजे लगेगा । दक्षिण-अफरिकामें दिखाई देगा । अब इन सबसे कह दो, कि हमारी जादूगरीका निशान यह है, कि हम कल रातको समूचा चांद अपने जादूके जोरसे काला कर देंगे ।

बात बहुत ही अच्छी थी ; लेकिन सवाल यह था, कि गुडका पञ्चाङ्ग शुद्ध ठहरेगा या नहीं । अगर वह शुद्ध न ठहरा, तो हमलोगोंका एतबार सदाके लिये मिट जायेगा ; साथ-साथ इगनोसीका राज्य पाना भी कठिन हो जायेगा । लेकिन गुडको अपने पञ्चाङ्गका बड़ा भरोसा था । उन्होंने कहा,—"मेरा पञ्चाङ्ग झूठा हो नहीं सकता । मैं बरसोंसे यही पञ्चाङ्ग और नोट-बुक व्यवहार कर रहा हूं । इसकी कोई बात आजतक झूठी नहीं निकली है । यह ग्रहण विलायतमें सवा आठ बजे, तो इस दक्षिण-अफरिकामें रात दस बजे जरूर दिखाई देगा और रात कोई साढ़े

बारह बजेतक दिखाई देता रहेगा। कोई डेढ़ घण्टेतक पूरा अंधेरा छाया रहेगा।"

अन्तमें हमलोगोंने यही सबूत देना स्थिर किया। उन सर्दारोंके आनेपर मैंने उनसे कहा,—"सर्दारो और इनफादूस! मेरी बात सुनो। हम अपनी जादूगरी दिखाया नहीं चाहते; क्योंकि दिखानेसे कुदरतके कामर्मे फर्क आ जाता है। फिर भी; जब बात यहांतक बढ़ गई है और हमें जालिम त्वालाके जुल्मसे कुकुवानोंको बचाना और उनके सच्चे राजा इगनोसीको सिंहासनपर बैठाना है, तो हमें ऐसा सबूत देना ही पड़ेगा, जिसे सारा देश देख सके। मेरे पास आओ! इस खिड़कीके बाहर आसमानमें तुम क्या देख रहे हो?"

एक सरदार। डूबता हुआ चांद!

मैं। ठीक है। अच्छा; क्या तुमलोगोंमें कोई भी आदमी आस्मानमें चमकते हुए इस चांदको काला बनाके पृथ्वीपर अंधेरा फैला सकता है?

इसपर उस सर्दारने हँसकर कहा,—"नहीं हुजूर! ऐसा कोई नहीं कर सकता। चांद बहुत दूर और आदमीसे बहुत बड़ा है।"

मैं। अच्छा तो सुनो! कल आधी रातसे दो घण्टा पहले मैं इसी चांदको छिपाके सारी पृथिवीपर कोई डेढ़ घण्टेके लिये अंधेरा फैला दूंगा। यही हमारी बड़ाई और इगनोसीके सच्चा राजा होनेका सबूत होगा। क्या यह सबूत पानेपर तुम्हें सन्तोष हो जायेगा?

उस सर्दारने बेएतबारीसे मुस्कराके कहा,—"जरूर! अगर आप कल चांदको ढंक सकेंगे, तो हमलोगोंको जरूर एतबार हो जायेगा।"

मैं। तो हमलोग चांदको जरूर ढंकेंगे। तुमने भी सुन लिया इनफादूस?

इन०। सुन तो लिया; लेकिन कल पूर्णिमाके चांदको ढकना हंसी-खेल न समझिये।

मैं। तुम अपनी आंखों देख लेना।

इन०। बेहतर! आज दो घण्टा रात जानेपर त्वाला आपलोगोंको क्वांरी कन्याओंका नाच देखनेके लिये बुलायेगा। उनमें जो कन्या सबसे अधिक सुन्दरी होगी, वह उस सामनेकी तीन चोटियोंकी चुड़ैलोंको भेंट चढ़ाई जायेगी। स्काग़ा उस सुन्दरीकी हत्या करेगा। मैं चाहता हूं, कि उसी हत्याके समय आपलोग चांद छिपाके उस अबलाकी जान बचा लें, तो सारे देशको आपलोगोंकी सत्ताका सबूत मिल जायेगा।

इसपर एक सर्दारने भी मुस्कुराके कहा,—"और हमलोगोंको भी एतबार हो जायेगा।"

इन०। इस लू शहरके पीछे कोई एक कोस दूर एक अर्द्धचन्द्र पहाड़ी है। वहीं मेरी और इन तीन दूसरे सर्दारोंकी फौजें पड़ी हैं। आज हमारी कोशिशसे और भी दो तीन फौजें वहां पहुंच जायेंगी। अगर आपलोग चांदके ढांकनेका सबूत दे सकेंगे, तो हम आपलोगोंको लेके उसी पहाड़ीपर चलेंगे और वहीं त्वालाकी फौजोंसे लड़ाई होगी।"

इनफादूसके अपने साथियोंके साथ चले जानेपर इगनोसीने हमलोगोंसे कहा,—"दोस्तो! क्या सचमुच ही तुमलोग चांदको छिपा सकोगे!"

मैं। जरूर!

इन०। मैं तुम्हारे एहसानोंको कभी न भूलूंगा।

सर हेनरी। इगनोसी! तुम एक बातका ख्याल करो।

इगनोसीने मुस्कुराके कहा,—"सर हेनरी! मैं तुम्हारी बात सुननेसे पहले कहता हूं, कि तुम जैसा कहोगे; मैं वैसा ही करूंगा। अब कहो, तुम क्या कहा चाहते हो?"

सर हेनरी। यही, कि राज्य पा जानेपर तुम जादूगरनियोंका नाच और लोगोंके मारे-काटे जानेका मेला बन्द कर देना; साथ ही बिना विचारके किसी भी आदमीकी हत्या न करना।

इगनोसीने कुछ सोचके कहा,—"साहबो! हमलोगोंमें जानका इतना ख्याल किया नहीं जाता। फिर भी; मैं वादा करताहूं, कि जहांतक मेरा वश चलेगा, मैं जादूगरनियोंका नाच होने न दूंगा और बिना विचारके किसी भी आदमीको मौतकी सजा न मिलेगी।"

सर हेनरी। अपना यह कौल याद रखना। आओ, अब हमलोग आराम करें।

सारे दिन और रातकी थकावटकी वजह हमलोग बिस्तरपर लेटते ही सो गये और दूसरे दिन दोपहरतक सोते रहे। हमारा सारा दिन खाने-पीने और विश्राममें बीता। रात कोई साढ़े आठ बजे त्वालाके भेजे हुए दूतने आके हमें खबर दी, कि राजाने हमें क्वांरी कन्याओंका नाच देखनेके लिये बुलाया है।

हमलोगोंने लोहेके कपड़ेके ऊपर जल्द-जल्द अपने कपड़े पहने। कमरसे तमञ्चे लगाये, हाथमें बन्दूकें लीं और ऊपरसे हंसते-मुस्कुराते; लेकिन मन ही मन डरते हुए त्वालाके बेड़ेकी ओर चले। कारण; यह दो रातें हमने उस झोपड़ेमें बिताई थीं; न जानते थे, कि हमारी तीसरी रात कहां बीतनेको थी। त्वालाके बेड़ेमें पहुंचके हमने देखा, कि वहांके खुले हुए मैदानने दूसरा ही रूप धारण किया है। जहां कल कठोर और भीमकर्मा सिपाहियोंकी कतारें खड़ी थीं; वहां आज हजारों क्वांरी कन्यायें खड़ी थीं। उन सबकी देहपर अधिक

कपड़े न थे। फिर भी; हरेक कुमारीके माथेपर फूलोंका मुकुट और एक हाथमें 'पाम' वृक्षकी शाखा और दूसरे हाथमें खिली हुई कमलिनी थी। अपने झोपड़ेके सामने उसी खुली हुई जगहमें एक तिपाईपर त्वाला बैठा था। उसके पैरोंके पास गगूल बैठी थी और उसके पीछे इनफादूस; स्क्रागा और बारह रक्षक सिपाही खड़े थे। सिवा इन सबके; बारह या चौदह बड़े सर्दार भी मौजूद थे, जिनमें अधिकांश वह सर्दार थे, जो कल रातको हमलोगोंसे मिल चुके थे।

त्वालाने हमलोगोंका स्वागत किया; किन्तु इगनोसीको अपनी एक आंखसे खूब तरेरके देखा। उसने हमलोगोंसे हंसते हुए कहा,—"गोरे आदमियो! आज मर्दोंकी जगह औरतें हैं;—क्वांरी लड़कियां। क्या तुम इनमें किसीके साथ विवाह किया चाहते हो? अगर तुम सबकी इच्छा हो, तो मैं आज्ञा देता हूं, कि तुममें हरेक जितनी कुमारी कन्यायें चाहे, उतनी अपने लिये चुन ले।"

कप्तान गुडका चिकने स्वभावका हाल मैं बहुत अच्छी तरहसे जानता था; इसलिये उनके चोंच खोलनेसे पहले ही मैं बोल उठा,—"धन्यवाद। लेकिन, त्वाला! हमलोग दूसरे देशकी स्त्रियोंके साथ नहीं; अपने ही देशकी गोरी स्त्रियोंके साथ विवाह किया करते हैं।"

त्वालाने हंसके कहा,—"अच्छी बात है; लेकिन वही जोरू और धन ठीक समझा जाता है, जो आंखोंके सामने रहता है।" इसके बाद उसने इगनोसीकी ओर मुड़के कहा,—"गोरे आदमियोंके गुलाम! कल अगर गगूलकी बात रह जाती, तो अबतक तू एक दिनकी पुरानी लाश होता। तेरा बड़ा सौभाग्य है, कि तू भी चन्द्रलोकसे आया हुआ है। हा-हा-हा!"

इसपर इगनोसीने बड़ी ही गम्भीरतासे जवाब दिया,—"त्वाला! मेरे मरनेसे पहले तू मारा जाता और आज मेरी लाशसे अधिक कठोर तेरी ही लाश होती।"

यह पैना जवाब पाके त्वाला चौंक पड़ा। उसने क्रोधसे कहा,—"लौंडे! इसतरह बढ़-बढ़के बोलना ठीक नहीं।"

इग०। सच्चा आदमी बोलनेमें सङ्कोच किया नहीं करता। सच्चाईका भाला कभी अपना निशाना नहीं चूकता। त्वाला! यह याद रखना, यह चन्द्रलोकका संदेसा है।

त्वालाने इगनोसीकी ओरसे मुंह फेरके कहा,—"हां; नाच आरम्भ हो।"

यह आज्ञा मिलते ही युवती कन्याओंकी टोलियां गाती हुई आगे बढ़ीं और लगीं पासकी पत्तियां और कमलिनीके फूल हिला-हिलाके नाचने। चांदकी रोशनीमें परियां नाचती हुई मालूम होती थीं। वह सब नाचते-नाचते कभी घूमती थीं; कभी लड़ाईकी नकल करती थीं; कभी एकाएक आगे बढ़ती थीं; कभी पीछे हट जाती थीं। अन्तमें वह सब ठहर गईं और एक बड़ी ही सुन्दरी युवती कुमारी उनकी पंक्तिसे निकलके लगी नाचने और गाने। उसकी शानदार भाव-भङ्गी देखके हमलोग मुग्ध और चकित हुए। उसके थकके अपनी जगह लौटनेपर दूसरी निकली; तीसरी निकली; कितनी ही लड़कियां निकलीं; किन्तु उस पहलीके सामने एक भी न जंची।

नाच समाप्त होनेपर त्वालाने पूछा,—"तुमलोगोंको इन लड़कियोंमें कौनसी लड़की सबसे अधिक सुन्दर जान पड़ी?"

मेरे मुंहसे एकाएक निकल आया,—"वही पहली।" हाय! यह मैंने क्या किया? क्योंकि अब मुझे याद आया, कि उन कन्याओंमें जो कन्या परमा सुन्दरी होगी, वही मारी जायेगी।

त्वालाने मेरी बातके जवाबमें कहा,—"तब तुम्हारे मतसे मेरा मत मिल गया। वही सबसे अधिक सुन्दरी है। उसीको बलि चढ़ाई जायेगी।"

उस मौतसे अज्ञान मुस्कुरा-मुस्कुराके बातें करती हुई कन्याकी ओर अपनी अशुभ दृष्टिसे घूरके गगूलने कहा,—"हां; जरूर बलि चढ़ाई जायेगी।"

मैंने कुछ क्रोधसे कहा,—"त्वाला! उस लड़कीको क्या मौतहीका इनाम मिलना चाहिये?"

त्वालाने हंसके कहा,—"गोरे आदमी! इस नगरके पीछे बहुत दूर जो तीन चोटियां दिखाई देती हैं, वह तीन चुड़ैले हैं, उन्हें हर साल आजकी रात एक सुन्दरी क्वांरी कन्याकी बलि मिलती है। आज यह बलि न मिलनेपर मेरा राजत्व मिट्टीमें मिल जायेगा। एक साल मेरे भाईने एक कन्याको रुलाईसे पिघलके उसे छोड़ दिया, तो उसी साल वह मेरे हाथसे मारा गया। नहीं! वह जरूर मारी जायेगी।" फिर उसने अपने पीछे देखके कहा,—"सिपाहियो! उस लड़कीको पकड़ लाओ! स्कागा! अपना बर्छा संभाल!"

दो सिपाही उस लड़कीकी ओर बढ़े। उसने उन सबको जैसे ही अपने समीप पाया; वैसे ही असली बात उसकी समझमें आ गई। वह डरसे चीखके एक ओर भागी। किन्तु दो जवानोंके हाथोंसे बचके वह कहां जा सकती थी। उन दोनोंने उसे शीघ्र ही पकड़ लिया और घसीटके त्वालाके सामने पहुंचाया।

गगूलने अपनी पिपिहरीजैसी आवाजसे पूछा,—"तेरा नाम क्या है, लड़की? क्या तू जवाब न देगी? क्या स्कागा अपना काम करे?"

यह सुनके स्कोगा अपना बर्छा तानके आगे बढ़ा। मैंने देखा, कि स्कोगाके बढ़ते ही कप्तान गुडका हाथ अपनी कमरसे लटकते हुए तपञ्चेकी तरफ गया। बर्छेकी चमक देखके वह अभागी लड़की घबरा गई। वह रोना-चिल्लाना छोड़के हाथ जोड़के लगी गायकी तरह थर-थर कांपने!

स्कागा। यह तो मेरे बर्छेकी सूरत ही देखके मरी जाती है। हा-हा-हा!

इधर गुडने धीरे-धीरे कहा,—"पाजी! मौका मिलनेपर तेरी निठुरताका बदला मैं गिन-गिनके लूंगा।

गगूलने मानो तानेसे कहा,—"रोने-धोनेसे क्या लाभ? बता, तेरा नाम क्या है?"

उस लड़कीने सिसक-सिसकके कहा,—"मा! मैं सुकोकी बेटी फोलता हूं। मैंने कोई पाप नहीं किया है; मुझे न मारो!"

गगूल। घबरा नहीं। तू उन तीनों चुड़ैलोंकी बलि चढ़ेगी। तेरा अन्त बन जायेगा। एक राजकुमार तेरा वध करेगा।"

फोलता। हाय! मैंने अभी दुनियामें देखा ही क्या है? मैंने क्या किया है, कि मैं कल सवेरेके सूरजका उगना; फूलोंका मुस्कुराना और चिड़ियोंका गाना देख-सुन न सकूंगी? हाय! मैं अब अपने पिताको भी देख न सकूंगी; अपनी मातासे भी मिल न सकूंगी; अपने बीमार बछड़ेका भी प्यार कर न सकूंगी।

यह कहते उसने अपनी आंसुओंसे भरी हुई आंखें आसमानकी ओर उठाईं! उस समय वह करुणाकी बड़ी ही सुन्दर और जीती हुई मूर्त्ति जान पड़ती थी। उसकी सूरत देखके पत्थर भी पसीज सकता था; किन्तु त्वाला और गगूलका पत्थर न पसीजा। त्वालाके पीछे खड़े हुए रक्षक सिपाहियोंका भी दिल पसीज गया। इधर कप्तान गुडने मुंहसे एक शब्द किया; मानो वह आगे

बढ़के उसकी रक्षा करनेपर तय्यार थे। अपनी स्त्री-बुद्धिसे फौलता भी गुडके मनका भाव समझ गई। वह झपटके गुडके पैरोंसे लिपट गई और रो-रोके कहने लगी,—"दया! दया! मुझे अकाल मौतसे बचाओ।"

कप्तान गुडने अङ्गरेजीमें कहा,—"न घबराओ, प्यारी! कौन तुम्हें मार सकता है? बस; रोना-धोना छोड़के निश्चिन्त मनसे मेरे पास खड़ी हो जाओ।"

त्वालाने स्कागाको ओर इशारा किया। वह अपना बर्छा हिलाता हुआ फौलताकी ओर बढ़ा।

सर हेनरी। अलान साहब! हमलोगोंको कुछ करना चाहिये। आप शान्तिके साथ बैठे क्या हैं?

मैं। बैठा हूं, गहन लगनेके इन्तजारमें। मैं आध घण्टेसे चांदकी तरफ बारबार देख रहा हूं; लेकिन कमबख्तपर थोड़ीसी छाया भी पड़ती हुई दिखाई नहीं देती है।

सर हेनरी। चांदको तो पीछे गहन लगेगा; लेकिन इस लड़कीके जीवनको गहन लग चुका है। उधर त्वाला बेचैन हो रहा है।

एकबार और चांदको तरफ देखके मैं उठा ओर बड़ी शानके साथ उस लड़की और बढ़ते हुए स्कागाके बीचमें डटके खड़ा हो गया।

मैं। त्वाला! यह लड़की मारी न जायेगी। हमसे एक निरपराधा कुमारी कन्याकी हत्या देखी न जायेगी। इसे कुशलसे अपने घर लौटनेकी आज्ञा दो।

मेरी यह बात सुनते ही त्वाला ज्वाला की तरह धधकके उठा। उसकी आंखोंसे चिनगारियां निकल रही थीं; उसका चेहरा क्रोधसे लाल हो रहा था। उसने चीखके कहा,—"क्या कहा, मारी न जायेगी? गोरे कुत्ते! सिंहकी मांदमें घुसके तू उसे

छेड़नेकी हिम्मत करता है? ऐसा न हो, कि इस लड़कीके साथ-साथ तू और तेरे साथी भी मारे जायें। कौन है, तू! मेरे हुकमपर एतराज़ करनेवाला! हट जा पीछे! स्काागा! मार इस कुतियाको! सिपाहियो! गिरफ्तार कर लो!"

झोपड़ेके अन्दर बहुतेरे सिपाही, शायद ऐसे ही समयके लिये, पहले हीसे छिपा रखे गये थे। वह सब बाहर निकल आये। उन सबको देखते ही सर हेनरी, गुड और इगनोसी अपनी-अपनी बन्दूकें संभालके मेरी बगलमें आ खड़े हुए।

मेरी छाती धड़क रही थी; फिर भी, मैंने कड़कके कहा,—"ठहरो! हम चन्द्रलोकके रहनेवाले फिर कहते हैं, कि यह कन्या मारी न जायेगी। सावधान! अगर तुमलोग ज़रा भी आगे बढ़े, तो मैं चांदको छिपाके सारे कुकुआना देशपर अंधेरा फैला दूंगा।"

मेरी यह बात सुनके सिपाही और स्काागा सभी ठहर गये। गागूलने चीखके कहा,—"झूठा है! झूठा है! अगर यह दियेकी तरह चांदको भी बुझा दे, तो बचा दो इस लड़कीकी जान! लेकिन अगर इसकी बात ठीक न निकले, तो इस लड़कीके साथ इन सबको भी ठिकाने लगा दो!"

इस बार मैंने बड़ी ही बेचैनीके साथ चांदकी तरफ देखा। पञ्चाङ्ग सच्चा निकला। चांदपर गहनकी छाया पड़ने लगी थी। मैंने उसी समय अपने दोनो हाथ चांदकी तरफ उठाये। सर हेनरी और गुडने भी ऐसा ही किया। मैं बाइबलकी कुछ पंक्तियां बड़े जोशके साथ पढ़ने लगा। देखते-देखते गहनकी छाया गहरी हुई। इसके बाद ही एक ओरसे चांद छिपने लगा। वहां खड़े हुए सभी आदमियोंके मुंहसे भय और आश्चर्यकी ध्वनि हुई।

मैंने चीखके कहा,—"देखो त्वाला और गागूल! देखो यहांके लोगो! चमकता हुआ चांद छिप रहा है। अब तुम्हीं बताओ, कि

हम चन्द्रलोकके आदमियोंने जो कुछ कहा था, वह मिथ्या था या सत्य ?"

चारों ओरसे भयसूचक आवाजें आईं। कितने ही आदमी डरसे थर-थर कांपने लगे। कितने ही आदमी मुंहके बल गिरके लगे चीखने-चिल्लाने। रचाला अपनी तिपाईपर बैठ गया। मारे डरके उसका काला चेहरा पीला पड़ गया। सिर्फ गमूलने हिम्मत न छोड़ी। उसने चीखके कहा,—"यह छाया है, अभी दूर हो जायेगी। घबराओ नहीं; शान्त होके बैठो! मैंने ऐसी बहुतेरी छायायें देखी हैं।"

मैंने भी कड़कके जवाब दिया,—"यह छाया सारे चांदको ढांक लेगी। तुम्हारे मनकी तरह तुम्हारे समूचे देशको भी काला बना देगी। देखो, मेरा तमाशा!"

यह कहके मैं मन्त्र पढ़नेकी तरह लगा एक अङ्गरेजी किताबकी रटी हुई कुछ सतर पढ़ने। मैं शिकारी आदमी; मेरी पढ़ाई-लिखाई कितनी? कुछ ही देरमें जब वह सतरें समाप्त हो गईं; तब मैंने गुडसे कहा, कि भाई! अब तुम मदद दो।

कहने भरकी देर थी। कप्तान गुड उठके लगे अङ्गरेजी गालियाँ सुनाने। यों तो सभी जहाजी अफसरोंको गाली-गलौजका मजा रहता है; किन्तु इतनी गालियां मैंने किसी भी जहाजी अफसरको देते सुनी न थीं। कोई दस मिनटतक वह लगातार गालियां देते रहे और तमाशा यह था, कि एक बारकी दी हुई गाली; उन्होंने फिर मुंहसे न निकाली।

इस अवसरमें गहन बढ़ता ही जाता था। सारी जनताकी निगाहें आस्मानकी ओर लगी हुई थीं। मनहूस छायाकी चादरें पृथिवीपर बिछती हुई मालूम होती थीं। चारों ओर मौतजैसा सन्नाटा छा गया। फिर भी; गहन बढ़ता ही जाता था। देखते-

देखते आधेसे अधिक चांद छिप गया। बाकी आधा बिलकुल धुंधला पड़ गया। हवा बजनी हो गई। लोगोंका चेहरा देखना कठिन हो गया। किसीके भी मुंहसे कोई शब्द निकलता न था। कप्तान गुडने भी अपनी गालियोंका फव्वारा रोक दिया।

अन्तमें स्कागाने रोके कहा,—"हाय! इन गोरे ब्रपडालोंने चांदको मार डाला। अन्धकारमें हम सब भी मारे जायेंगे।" यह कहके पाजीने बड़े जोशमें आके अपने पास खड़े हुए सर हेनरीकी छातीपर अपना बर्छा बहुत जोरसे मारा। इसमें शक नहीं, कि वह अगर लोहेका कुरता पहने न होते, तो मारे जाते। उस कुरतेकी वजह बर्छा उचट गया। स्कागा दूसरा वार करनेपर तय्यार हुआ; किन्तु सर हेनरीने उसके हाथसे बर्छा छीनके उसीकी छातीमें घुसेड़ दिया। स्कागा एक लम्बी चीख मारके गिरा और मर गया।

एक तो ग्रहनका मनहूस भय; दूसरे यह खून; जनताकी हिम्मत और भी ढील गई। नाचमें शामिल होनेवाली लड़कियां चीख-चीखके बेड़ेके फाटककी ओर भागीं। स्वयं ट्वाला अपने रक्षक सिपाहियों और गगूलके साथ अपने झोपड़ेमें जा घुसा। मैदान हमारे हाथ रहा। सिर्फ हम, इनफादूस, उसके साथी सर्दार और वह लड़की फौलता वहां रह गई। हमारे पास ही पाजी स्कागाकी लाश भी पड़ी हुई थी।

मैं। सर्दारो! देखा मेरा दिया हुआ सबूत? अब अगर तुम्हें हमलोगोंका विश्वास हो गया हो, तो आओ उस पहाड़ीकी ओर चलो। कोई डेढ़ घण्टेतक यह अंधेरा रहेगा और इस अंधेरेमें ही हमें अपना काम बना लेना चाहिये।"

इनफादूसने कहा,—"तो अब देर न कीजिये, आइये।"

वह आगे-आगे चला; हम सब उसके पीछे-पीछे चले। हमलोगोंके उस बेड़ेके फाटकतक पहुंचते-पहुंचते चांद पूरी तरहसे छिप गया। पृथिवीपर छाया हुआ वह अंधेरा और भी भयानक और गाढ़ा हो गया। तारे छिटक गये!

हमलोग हाथमें हाथ दिये हुए उस अंधेरेमें आगे बढ़े।

बारहवां बयान।

लड़ाईसे पहले।

सौभाग्यसे इनफादूस और उसके साथी लू नगरकी राह-बाटसे अच्छी तरहसे वाकिफ थे; इसीलिये अंधेरेमें भी हम-लोग बहुत दूर निकल गये।

कोई एक घण्टा राह चलनेपर हमें गहन छूटता दिखाई दिया। चांदका जो कोना पहले ढंका था; वह कोना धीरे-धीरे साफ हुआ। उससे चमकीला प्रकाश निकलके पृथिवी-पर आया। फिर तो क्रम-क्रमसे चांदका प्रकाश बढ़ने लगा; तारोंकी रोशनी धुंधली पड़ने लगी।

देखते-देखते इतना प्रकाश हो गया, कि हमलोग अपने चारो तरफका स्थान पहचानने लगे। उस समय हम लू नगरसे निकलके एक चौरस चोटीकी पहाड़ीकी ओर बढ़ रहे थे। कोई दो सौ फुट ऊंची यह पहाड़ी अर्द्धचन्द्रके आकार या घोड़ेके नालजैसी थी; इसके करारे दूसरी पहाड़ियोंके करारोंकी तरह ढालुयां नहीं; बल्कि दीवारकी तरह सीधे खड़े थे। इसकी समतल चोटीपर घाससे छिपा हुआ कोई एक कोस लम्बा मैदान था। यह मैदान फौजोंकी छावनीके मसरफमें लाया जाता था।

इसमें बारहो महीने एक फ़ौज या तीन हजार सिपाही रहते थे, किन्तु आज जब हम अर्द्धचन्द्र पहाड़ोंके एक बाजूसे ऊपर चढ़ने लगे, तब वहां हमें बहुतेरी फ़ौज दिखाई दीं।

अन्तमें हमलोग पहाड़की उस समतल चोटीपर पहुंचे। वहां हमें बहुतेरे सिपाही गहनको देख-देखके मारे डरके कांपते हुए दिखाई दिये। इनलोगोंके बीचसे निकलके हम उस समतल मैदानके बीचोबीच बने हुए एक झोपड़ेमें पहुंचे। यह देखके हमें आश्चर्य्य हुआ, कि वहां दो आदमी बैठके हमलोगोंका इन्तजार कर रहे थे। यह सब हमारा लूटे शहरमें छूटा हुआ सारा साज-सामान लेके हमारे पहुंचनेसे पहले ही वहां पहुंच गये थे।

इनफादूसने कहा,—"यह सामान मैंने मंगाया है और इसीके साथ यह भी।" यह कहके उसने उस सामानके बीचसे कप्तान गुड-का वह खोया हुआ पतलून निकालके दिखाया। कप्तान गुड मारे आनन्दके चीख पड़े और झपटके आपने अपना इतने दिनोंका छूटा हुआ पतलून लेके चढ़ा लिया। इसके बाद फिर कभी कुकु-वानोंने कप्तान साहबके उन गोरे-गोरे पैरोंका दर्शन न पाया। दूसरे ही दिन कप्तान साहबकी वह बढ़ी हुई आधी दाढ़ी भी साफ़ हो गई।

दूसरे दिन बड़े सवेरे हमारे उस झोपड़ेकी बगलके मैदानमें उस पहाड़ीपर एकत्र कुल फौजें जमा हुईं। इनमें कुल कोई बीस हजार सिपाही होंगे। यह सब कुकुवाना देशके चुने हुए योद्धा कहलाते थे और इनके अफसर इनफादूस और उसके साथी वह सब सर्दार थे, जो हमलोगोंसे मिल गये थे। यह सब सिपाही सामने और दाहने-बायेंको तीन पंक्तियोंमें खड़े थे। चौथी ओरकी खुली हुई जगह सर्दारों और हमलोगोंके खड़े होनेके लिये रक्षित थी। हमलोग उन सिपाहियोंको बलवेका कारण समझाने और उन्हें उनका भावी सच्चा राजा दिखानेको थे।

हम सबके अपनी-अपनी जगह खड़े हो जानेपर इनफादूसने बड़े ही ज़ोर-शोरसे इगनोसीके पिताके त्वालाके हाथों मारे जाने और शिशु इगनोसीके अपनी माताके साथ देशसे भागनेका हाल कहा। इसके उपरान्त त्वालाके ज़ुल्म और निर्दयताकी कहानियां सुनाईं। इसके उपरान्त यह कहा, कि जब कुकुवानोंपर होता हुआ ज़ुल्म बहुत बढ़ गया, तब उससे हमें बचानेके लिये यह चन्द्रलोकके गोरे अधिवासी पृथिवीपर आये और हमारे सच्चे और दयालु राजा इन इगनोसीको अपने साथ लेके शेबा-पहाड़ लांघते हुए इस देशमें पहुंचे। इन्हीं सबने अपनी विद्याके बलसे फौलताको जान बचाई; स्कागाकी हत्या की और चांदको छिपा दिया। अब यह सब हमलोगोंके साथ रहके हमें त्वालाके मार गिराने और इगनोसीके राजा बनानेके काममें मदद देंगे।

इनफादूसकी बातोंसे सीधे-सादे सिपाहियोंका दिल हिल गया। इसके बाद इगनोसीने आगे बढ़के कहना आरम्भ किया,— "सुनो, सर्दारो! अफसरो! सिपाहियो! मेरी बात सुनो! तब फैसला करो, कि तुमलोग किसे चाहते हो; खूनी त्वालाको या उसके ज़ुल्मसे सताये हुए मुझ सच्चे राजाको? मेरी कमरपर बने हुए राजकीय सांपको तुम्हारे इन सर्दारोंने देखा है। अगर मैं सच्चा राजा न होता, तो यह चन्द्रलोकके अधिवासी मेरा साथ कभी न देते! इनकी ताकतकी पूजा करो। इन्हीं सबने त्वालाको नीचा दिखाने और मुझे लूसे यहांतक सही-सलामत पहुंचानेके लिये पहलेसे कह-सुनके पूरे चांदको ढंक दिया है।"

कितने ही सिपाहियोंने कहा,—"उफ!"

इगनोसीने अपनी विशाल देहको तानके और अपने हाथका कुल्हाड़ा उठाके कहा,—"मैं ही तुम्हारा सच्चा राजा हूं। तुम-लोगोंमें जो आदमी मेरी बातका एतबार न करता हो, वह आगे

बढ़े और मुझसे लड़के देख ले। उसका खून उसकी गर्दनपर होगा।"

यह कहके इगनोसीने फिर अपना कुल्हाड़ा चमकाया; लेकिन कोई सिपाही उससे लड़नेपर राजी न हुआ। यह देखके इगनोसीने फिर कहना आरम्भ किया,—"मैं ही तुम्हारा सच्चा राजा हूं। अगर तुम मेरा साथ दोगे, तो सारे देशमें विजयी और यशस्वी कहलाओगे। मैं तुम्हें स्त्रियां दूंगा; भूमि दूंगा और पशु दूंगा। और अगर तुम गिरोगे, तो मैं भी तुम्हारे साथ ही गिरूंगा। और सुनो! राज्य पाते ही मैं सारे कुकुवाना देशसे खून-खराबी उठा दूंगा। तुममें कोई भी बिना विचारके मारा न जायेगा। जादूगरनियोंका नाश कर दिया जायेगा। सारा देश शान्ति और न्यायसे भर जायेगा। अब बताओ, तुम किसे अपना राजा चुनते हो?"

हजारों सिपाहियोंने मिलके कहा,—"तुम्हें! तुम्हीं हमारे सच्चे राजा हो।"

इगनोसी। ठीक है। पीछे पलटके तू शहरकी ओर देखो। उसके चारों फाटकोंसे निकल-निकलके हरकारे दौड़ते हुए दिखाई देंगे। यह सब हरकारे हम सबकी हत्या करनेके लिये देशकी फौजोंको बुलाने जाते हैं। कल या परसोंतक ट्वाला अपनी फौज लेके हम सबपर चढ़ाई करेगा। उस लड़ाईमें मर्द और हिजड़ोंकी पहचान होगी। जो मर्द साबित होगा; वह बड़ा ऊंचा पद पायेगा। मुझे जो कुछ कहना था, कह चुका: अब तुमलोग अपनी-अपनी जगह जाके लड़ाईकी तय्यारी करो।

एक क्षणतक सन्नाटा छाया रहा। इसके बाद एक सर्दारने अपना हाथ उठाके राजकीय सलामी उतारी,—'कूम!' साथ ही बीस हजार जवानोंने अपने बर्छे उठाके सलामी उतारी,—

'क्रूम !' मानो फौजने इगनोसीको अपना राजा मान लिया। इसके बाद सब फौज अपनी-अपनी जगह वापस गईं।

कोई आध घण्टे बाद हमलोगोंने एक मन्त्रणा-सभा की, जिसमें हरेक फौजके छोटे-बड़े अफसर भी शामिल किये गये। हमलोगोंको इस बातका विश्वास हो गया था, कि बहुत ही शीघ्र ट्वाला अपनी बड़ी जबर्दस्त फौजके साथ हमलोगोंपर हमला करनेको था। उस ऊंचाईसे हमें लूकी चारों ओर फौज जमा होती हुई दिखाई देती थीं। हमारे पास कुल बीस ही हजार सिपाही थे, लेकिन यह सभी सिपाही चोटीके थे। उधर ट्वाला पैंतीससे चालीस हजारतक सिपाही लेके कल दोपहरतक हमपर चढ़ आ सकता था। चढ़ाईकी तय्यारी होने लगी थी। हमें अपनी पहाड़ीकी चारों ओर ट्वालाके सिपाही गश्त लगाते हुए दिखाई देते थे।

फिर भी; उस दिन आक्रमण होनेकी कोई आशङ्का न थी। ट्वालाको फौज जमा करने और कल रातके गहनका असर अपने सिपाहियोंके दिलसे हटानेके लिये समय चाहिये था। इस समयसे हमलोग भी लाभ उठाया चाहते थे। हमने अपने साथके हरेक आदमीको काममें लगा दिया। उस पहाड़ीकी दोनों ओरकी राहोंमें जगह-जगह पत्थरके ढोंके चुन दिये गये। बड़े-बड़े पत्थर ऐसी जगह रखे गये, कि वह सब शत्रुओंकी बढ़ती हुई फौजोंपर लुढ़काये जा सकें। फौजोंके लिये जगहें चुनी गईं; पहाड़ीके नीचे सिपाहियोंके लिये चौकियां बनाई गईं। मतलब यह, कि उतने समयमें हमलोगोंसे जो कुछ बन पड़ा, वह हमने किया।

सन्ध्या समय सूरजके डूबनेसे कुछ पहले हम बैठके जरा दम लेने लगे; ऐसे समय हमें कई आदमियोंका एक छोटासा झुण्ड लूसे निकलके अपनी पहाड़ीकी ओर बढ़ता दिखाई दिया। उनमें

एकके हाथमें पामकी शाखा थी; इससे यह प्रकट होता था, कि वह हमारे पास दूत बनके आ रहा था।

उसके पास आनेपर हमलोग इन्फादूस तथा अन्यान्य कितने ही सर्दारोंके साथ पहाड़ोंके नीचे उतर गये। दूत बड़ा ही निडर जान पड़ता था; उसकी देहके चोतेके चमड़ेसे जान पड़ता था, कि वह कोई फौजी अफसर था। हमारे पास पहुंचके उसने पुकारके कहा,—"सिंहने गीदड़ोंको सलाम कहलाया है; राजा त्वालाने कुल बागियोंको सलाम कहलाया है।"

मैं। और क्या कहलाया है?

दूत। और यह कहलाया है, कि त्वालाके कोपका वज्र गिरनेसे पहले तुमलोग हथियार रख दो।

मैं। हमलोगोंके हथियार रख देनेपर त्वाला हमारे साथ कौनसी दया दिखायेगा?

दूत। राजोंके राजा त्वालाने कहलाया है, कि अगर तुमलोग हथियार रख दोगे, तो बहुत ही थोड़ा खून बहाया जायेगा। हर दस सिपाहियोंमें एक सिपाही मारा जायेगा; हां, स्कागाको मारनेवाला गोरा आदमी; उसका काला नौकर और बलवा करानेवाला इन्फादूस; यह तीनो बुरी मौत मारे जायंगे। हमारे राजा तुम बागियोंके लिये ऐसी ही दया दिखाया चाहते हैं।

अपने साथियोंसे सलाह करनेके बाद मैंने बड़ी कड़कीली आवाजमें; जिसमें वहांके सभी सिपाही सुन सकें, कहा;—"कुत्ते! लौटके कह दे अपने त्वालासे, कि चांदको फीका बनानेवाले हम चन्द्रलोकके रहनेवाले; कुकुवानोंका सच्चा राजा इगनोसी और त्वालाका भाई इन्फादूस; यह सब मिलके कहते हैं, कि हम सब आलिम त्वालासे लड़ेंगे और दो ही दिनमें

इवालाके दर्वाजेपर उसकी लाश गिरायेंगे। बस; चला जा! ठहरेगा, तो तेरी पीठपर चाबुकोंकी मार पड़ेगी।"

मेरी यह बातें सुनके वह दूत ठठाके हँसा। उसने जोरसे कहा,—"बातोंसे वीर डरा नहीं करते। चांदको फीका बनानेवालो! कल मैदानमें आना। तुम्हारा मांस गिद्ध और कव्वे नोच-नोचके खायेंगे। तुम्हारे मुंहकी सफेदी तुम्हारी हड्डियोंपर दिखाई देगी। देखना! कहीं लड़ाईसे पहले ही चन्द्रलोक सिधार न जाना।" यह ताने देता हुआ वह चला गया। उसके जाते ही सूरज डूबा।

वह रात, बड़े कामकी रात थी। हमलोग अपनी थकावट भुलाके चांदके प्रकाशमें लड़ाईकी तय्यारी करते रहे। रात कोई एक बजेतक काम चलता रहा। अन्तमें कलकी लड़ाईमें जूझनेके लिये, सन्तरियोंका पहरा खड़ा करनेके बाद फौजोंको विश्राम करनेकी आज्ञा दी गई। पहाड़ीपर सन्नाटा छा जानेके बाद मैं; सर हेनरी, इगनोसी और कई सर्दारोंके साथ पहाड़के नीचेकी अपनी फौजी चौकियोंका गश्त लगानेके लिये निकला। राहमें जगह-जगह हमें झोपड़ियों, चट्टानों और वृक्षोंके पीछे अपने सन्तरी खड़े हुए दिखाई दिये। उनके रोकनेपर हम उन्हें साङ्केतिक शब्द सुनाके आगे बढ़ते थे। सन्तरियोंकी तरह चौकियोंकी भी सतर्क पाके हमलोग वापस लौटे।

राहमें हमें सोती हुई फौजें दिखाई दीं। चांदके प्रकाशमें सोते हुए योद्धाओंके बर्छे चमक रहे थे; माथेके पर हिल रहे थे। कोई लम्बा; कोई करवट और कोई हाथ-पैर सिकोड़के पड़ा हुआ आराम कर रहा था। सर हेनरीने उन सबको देखके कहा,—"आज रातको तो यह सब यहां सो रहे हैं; कल रातको इनमें बहुतेरे कहां सोयेंगे?"

मुझे अपने हृदयकी आंखोंसे दिखाई दिया, कि उन सोये योद्धाओंपर मौतकी छाया पड़ चुकी थी। मनुष्यका जीवन कितना असार है। आज रातको वह मनुष्य थे; कल राततक उनमें बहुतेरे—उनके साथ शायद हमलोग भी—मिट्टीके ढेर बन जानेको थे! उनकी स्त्रियां विधवा बन जानेको थीं; उनके बच्चे अनाथ बन जानेको थे। आजकी तरह, कल भी; केवल चांद उसीतरह मुस्कुरानेको था; पृथिवी उसीतरह विश्राम करनेको थी।

लेकिन मनुष्य मरता नहीं। केवल उसकी देह मर जाती है और उसकी आत्मा पुरानी देह छोड़के नई देह धारण करती है।

इन सब बातोंको विचारते-विचारते मेरा माथा चकरा गया। मैंने कहा,—"सर हेनरी! मुझे बड़ा ही डर जान पड़ता है।"

सर हेनरीने हंसके कहा,—"अलान साहब! तुम्हारी यह बात तो मैं पहले भी कई बार सुन चुका हूं।"

मैं। लेकिन इसबार मैं सिर्फ बात नहीं करता हूं; भयका अनुभव कर रहा हूं। कौन जानता है, कि कल हमारा क्या हाल होगा। हम अपने मुट्ठीभर सिपाहियोंसे त्वालाकी विशाल फौजोंका सामना कैसे कर सकेंगे?"

हेनरी। सुनो, अलान साहब! इसमें शक नहीं, कि हमलोग बुरे फंस गये हैं। क्या ही अच्छा होता अगर हम इस कीचसे दूर रहते; लेकिन एकबार इसमें पैर रख चुकनेपर हमें पीठ दिखाना न चाहिये। मैंने तो पीठ दिखानेके बदले जान दे देनेका फैसला कर लिया है। फिर भी; निराश होनेकी जरूरत नहीं। सौभाग्य, हिजड़ोंका नहीं; वीरोंका साथ दिया करता है। हमलोगोंको उचित है, कि कलकी लड़ाईमें जिस-जिस जगह

गहरी मार-काट होती दिखाई दे; उसी-उसी जगह पहुंचके हम अपना पुरुषार्थ दिखायें।

यह अन्तिम बात सर हेनरीने सुनानेको बड़े दुःखके स्वरमें सुनाई; लेकिन उनकी आंखोंकी चमकसे मुझे जान पड़ा, कि उनका दुःख सच्चा दुःख न था। वह हृदयसे लड़ाई पसन्द करते थे।

बड़े सबेरे इनफादूसने हमें जगाके कहा, कि लू शहरमें बड़ी हलचल दिखाई देती है और त्वालाकी फौजोंके गश्ती सिपाही हमारी चौकियोंपर हमले कर रहे हैं। कितनी ही चौकियोंके हमारे सिपाही अपनी चौकियोंसे पीछे भी हटा दिये गये हैं।

हमलोग भी लड़ाईके लिये तय्यार हुए। हमने अपने वह लोहेके कुरते पहने। सर हेनरीने कहा,—"कुकुवानोंके बीचमें रहनेपर उनकी ही पोशाक पहनना चाहिये।" यह कहके वह लगे अपनेको कुकुवाना वेशसे सजाने। सबसे पहले उन्होंने वह लोहेका कुरता पहना, जो उनकी विशाल देहपर चिपकके बैठ गया। इसके बाद उन्होंने देशी अफसरोंका पहनावा चीतेके चमड़ेके ओढ़ावके वस्त्र अपने गलेसे बांधे। फिर; माथेपर अफसरोंके पर खोंसे और कमरसे बैलके चमड़ेका 'मूचा' या तहमद बांधा। इसके भी बाद खड़ाऊं पहने; गैंडेकी सींगके दस्तेका कुल्हाड़ा हाथमें लिया; फेंकेजानेवाले छुरे लटकानेके साथ-साथ तपञ्चे भी लगाये। उस देशी पोशाकमें सर हेनरीका मर्दाना सौन्दर्य और भी उभरा। ऐसे समय वैसी ही पोशाकमें सजकर इगनोसी आया। विशाल देहके वीरोंका ऐसा अच्छा जोड़ा मैंने पहले कभी देखा न था।

हम दोनोंके लोहेके कुरते ढीले थे। कप्तान साहब नीचे पतलून, ऊपर वही ढीला-ढाला कुरता, मुंहमें नकली दांत और एक आंखपर एक चश्मा चढ़ाये हुए थे। इस वेशमें उनका

नाटा और मोटा शरीर शानदार दिखाई देनेके बदले बड़ा ही भद्दा और बेहूदा दिखाई देता था। मैंने अपने सारे कपड़ोंके ऊपर वह लोहेका कुरता पहना। फिर भी, कम्बख्त चिपकके न बैठा। अपना पतलून उतारके मैंने केवल आंघिया पहन लिया था। मतलब यह था, कि अगर भागनेका समय आये, तो मैं बेतहाशा भाग सकूं। माथेपर पर, ढाल, बर्छे, छुरे आदि मैंने भी लिये; लेकिन मुझे बर्छा चलाना और छुरा फेकना आता ही न था। मैंने और गुडने अपने-अपने तपञ्चे लगानेके साथ-साथ अपनी बन्दूकें भी ले लीं। हमने अपने पीछे एक-एक आदमी रखे; उनके हाथ कारतूसके सन्दूक दे दिये।

कपड़े-बपड़े पहन लेनेपर हमने जल्द-जल्द थोड़ासा खाना निगल लिया और चले लड़ाई देखने। उस पहाड़ीके ऊपरके मैदानमें एक जगह चट्टानोंका एक टीला था। उस टीलेकी चोटी बुर्जका भी काम देती थी और बड़े सेनापतिके सदरका भी। यहां अपनी पूरी फौजके साथ इनफादूस मौजूद था। मेरी समझमें इनफादूसकी 'भूरी' फौज ही कुकुवानोंकी सबसे अच्छी फौज थी। इस फौजमें कोई साढ़े तीन हजार सिपाही थे। यह सब रक्षित रखे गये थे; इसलिये वह उस टीलेके गिर्द घासपर लेटके लूसे त्वालाकी फौजोंका निकलना देख रहे थे।

लूके बाहर त्वालाकी फौजें तीन भागोंमें बांटी गई थीं। हरेक भागमें कमसे कम बारह हजार जवान थे। हमारे देखते-देखते वह तीनों फौजें चलीं। एक दाहने चली; दूसरी बायें; तीसरी हमारे ठीक सामने। यह देखके इनफादूसने चौंकके कहा,—"ओहो! त्वाला हम सबपर एक साथ तीन ओरसे हमला किया चाहता है।"

हमारे लिये,यह एक बड़ी ही कठिन समस्या थी; लेकिन कोई उपाय न था। हमने भी अपनी फौजोंको तीन भागोंमें बांट दिया और हरेक भागको शत्रुसे सामना करनेकी विधि बताई।

तेरहवां बयान।

हमला।

त्वालाकी फौजके तीनों भाग बहुत ही धीरे-धीरे; लेकिन बिना रुकावटके हमारी पहाड़ीकी ओर लगातार बढ़ते आये। ऊपर कहा जा चुका है, कि यह पहाड़ी अर्द्धचन्द्राकार थी। त्वालाकी प्रधान फौज इस अर्द्धचन्द्र पहाड़ीके बीचकी संकरी भूमिके सामने उस जगह खड़ी हुई, जिस जगहसे यह भूमि लगातार ऊंची होके अर्द्धचन्द्रके दोनों किनारोंके बीचसे पहाड़ीके माथे तक पहुंची थी। इस फौजके ठहरनेका कारण यह था, कि उसके साथकी बाकी दोनों फौजें पहाड़ीके दाहने और बायें किनारे पहुंच जायं। हमारी पहाड़ीपर दाहने, बायें और बीच; तीनों ओरसे एक साथ आक्रमण होनेको था।

गुड। हाय! इस समय एक छोटी सी भी तोप हमारे पास होती, तो हम बीस मिनटमें इस समूची फौजको उड़ा देते।

सर हेनरी। लेकिन जो चीज अपने पास नहीं; उसके लिये अफसोस करनेसे क्या फायदा? अलान साहब! इस प्रधान फौजके प्रधान सेनापतिको देखते हो? वही लम्बा आदमी, जो अपनी फौजसे बाहर निकलके पहाड़ीको देख रहा है। इसे अपनी गोलीका निशाना क्यों नहीं बनाते?

मैंने एक्सप्रेस बन्दूक हाथमें ले ली। इस अवसरमें वह अफसर टहलता हुआ अपनी फौजसे और आगे बढ़ा और लगा ऊपर चढ़नेकी राह देखने। उसके पीछे सिर्फ एक ही सिपाही था। जब वह अफसर स्थिर होके खड़ा हुआ, तो मैंने उसकी छातीका निशाना साधके बन्दूक छोड़ दी। लेकिन यह क्या? उस अफसरके पीछेका सिपाही गिरके मर गया; लेकिन वह अफसर अछूता रहा और अपने साथके सिपाहीका गिरना देखके अपनी फौजकी ओर भागा। मारे शर्मके मेरे माथेपर पसीना आ गया। मैंने भागते हुए अफसरका निशाना साधके दूसरी फैर की। इस बार गोली निशानेपर बैठी। वह अपनी फौजके पास पहुंचके लड़खड़ाया और गिरके मर गया। इस हत्याको देखके मेरी पशुता बड़ी ही आनन्दित हुई।

हमारी फौजोंने जोरकी हर्षध्वनि की। कारण; उस अफसरकी मौतको हमारे सिपाहियोंने अपनी विजयका निशान मान लिया। उधर इस घटनासे उस प्रधान फौजमें बड़ी हलचल पड़ी। वह बिना प्रधान अफसरकी हो जानेके कारण घबराके पीछे हट गई। उसके पीछे हटते-हटते कप्तान गुड और सर हेनरीने भी कई गोलियां चलाईं। कोई छः आदमी मारे गये।

ऐसे समय हमारे दाहने और बायेंसे लड़ाईका भयानक शोर सुनाई दिया। जान पड़ा, कि ट्वालाकी दोनों फौजोंने अर्द्ध-चन्द्र पहाड़ीके दोनों किनारोंपर पहुंचके हमारी फौजोंपर हमला कर दिया। यह शोर सुनते ही हमारे सामनेकी ट्वालाकी प्रधान फौज गम्भीर स्वरसे लड़ाईका गीत गाती हुई धीरे-धीरे हमारे मोर्चोंकी ओर बढ़ी। हम तीनोंके साथ इगनोसीने भी उस बढ़ती हुई फौजपर कितनी ही गोलियां चलाईं; बहुतेरे सिपाही भी मारे; किन्तु इससे उस फौजकी गतिमें कोई फर्क न आया

सागरकी बढ़ती हुई लहर, जैसे ढेलेबाजीसे नहीं रुकती; त्वालाकी वह फौज वैसे ही हमारी गोलियोंसे न रुकी ।

देखते-देखते हमारे सामनेकी भूमिमें भी युद्ध आरम्भ हो गया । जब दोनों फौज बहुत समीप पहुंचीं, तब 'तोहा' नामक छुरोंकी मार हुई । इसके बाद दोनों ओरके सिपाही अपने-अपने बर्छे संभालके एक-दूसरेपर टूट पड़े । भाला मारते समय दुश्मनके सिपाही कहते थे,—"त्वाला ! त्वाला ! शो ! शो !" हमारी ओरके सिपाही कहते थे,—"इगनोसी ! इगनोसी । शो !—शो !"

कुछ देरतक दोनों ओरकी फौजोंमें बड़ी रेल-पेल हुई । कभी हमारी फौजें आगे बढ़तीं; कभी त्वालाकी । बड़ी ही भयानक मार-काट चल रही थी । पतझरके मौसममें गिरनेवाली पत्तियोंकी तरह सिपाहियोंकी लाशें ढेरकी ढेर गिर रही थीं । अन्तमें त्वालाकी जबर्दस्त फौज आगे बढ़ी; हमारी कमजोर फौज पहाड़के नीचेका अपना पहला मोर्चा छोड़के पहाड़की कमरपर बने हुए दूसरे मोर्चेमें वापस आई । इस मोर्चेमें और भी भयानक युद्ध हुआ । अन्तमें यह मोर्चा भी शत्रुके हाथ लगा और लड़ाई आरम्भ होनेके कोई बीस मिनट बाद हमारी फौजें अपना दूसरा मोर्चा भी छोड़के पहाड़ीकी चोटीके किनारे बने हुए तीसरे मोर्चेमें वापस आईं ।

इस अवसरमें त्वालाकी फौज बहुत थक चुकी थी । उसके बहुतेरे सिपाही भी मर-कट चुके थे । ऐसी दशामें उसके लिये वह तीसरा मोर्चा बड़ा ही भयानक हो गया । कुछ देरतक दोनों ओरके वीर बड़ा ही भयानक युद्ध करते रहे । यह जानना, कठिन था, कि अन्तमें विजय किसकी होगी । लड़ाई उलझ गई थी । सर हेनरीकी तेज निगाहोंने एक क्षणमें यह उलझन देख ली और वह बिना कुछ कहे-सुने कप्तान गुडके साथ आगे बढ़े

और जिस जगह बड़ी ही घमसान लड़ाई हो रही थी; उसी जगह घुस पड़े। मैं जहांका तहां रह गया!

सर हेनरीकी विशाल देह देखते ही हमारे सिपाहियोंने पुकारके कहा,—"हाथी! हाथी! शी! शी!" हमारे सिपाही सर हेनरीका डील-डौल देखके उन्हें हाथी कहा करते थे।

सर हेनरीके रणमें उतरते ही लड़ाईका रङ्ग पलट गया। ट्वालाकी फौज हर कदमपर भयानक युद्ध करती हुई धीरे-धीरे पीछे हटने लगी और कुछ ही देरमें पहाड़के नीचे उस जगह पहुंच गई, जिस जगहसे उसने चढ़ाई आरम्भ की थी। वहां पहुंचते ही वह फौज घबराके बहुत कुछ तितर-बितर हो गई। ऐसे समय जहां मैं इगनोसीके साथ खड़ा था, वहां एक दूतने आके समाचार दिया, कि सामनेकी तरह बायका भी शत्रुका हमला रोक दिया गया; और शत्रु पहाड़के नीचे उतार दिये गये। मैंने दिल ही दिल कहा, कि चलो बला टली; लड़ाई समाप्त हुई। ठीक ऐसे समय दिखाई दिया, कि पहाड़की चोटीके उस मैदानके दाहने छोरसे हमारी फौज भागी आती है और शत्रुकी फौजें उनका पीछा कर रही हैं। यह देखके मेरे प्राण सूख गये!

इगनोसीने उसी समय कड़कके एक आज्ञा दी। सबेरेसे अबतक पहाड़की चोटीपर बैठी हुई 'भूरी' फौज यह आज्ञा पाते ही उठी और पंक्ति बांधके खड़ी हो गई। इसपर इगनोसीने दूसरी आज्ञा दी, जिसे कप्तानोंने सिपाहियोंको सुनाया। यह दूसरी आज्ञा सुनते ही भूरी फौज जयध्वनि करती हुई मैदानमें बढ़ते हुए शत्रुओंसे सामना करनेके लिये झपटी। उस फौजके पीछे-पीछे इनफादूस, इगनोसी आदि भी शत्रुकी ओर झपटे। मेरी बड़ी इच्छा हुई, कि मैं शत्रुकी ओर न जाके उसकी उलटी दिशामें भागूं या विजयी सर हेनरीके पास उतर

जाऊं; किन्तु उस भीड़को चीरके निकलना कठिन था। वह भीड़ आगे बढ़ रही थी; उसके साथ इच्छा न रहनेपर मैं भी आगे बढ़ रहा था। शत्रुके सामनेसे अपने भागते हुए सिपाहियोंको चीरके हमलोग शत्रुसे भिड़ गये इसके बादकी बातोंको विस्तारपूर्वक लिखना कठिन है। कारण; मेरा चित्त चञ्चल था; माथा घूम रहा था। दोनों फौजोंके भिड़नेसे भयानक शब्द हुआ। इसके बाद मुझे एक दैत्यजैसा बदमाश हाथमें खूनी बर्छा लिये हुए अपनी ओर झपटता दिखाई दिया। उसका मुंह बड़ा ही भयानक था; उसकी आंखें अपने कोटरोंसे निकली पड़ती थीं। वह जब झपटता हुआ पास आया, तो मैं मुंहके बल जमीनपर लेट गया। इसका नतीजा यह हुआ, कि वह मुझसे टुकराके मेरे ऊपर भहरा पड़ा। उसके उठते-उठते मैं उठ खड़ा हुआ और मैंने उसकी पीठपर तपञ्चा लगाके उसे मार डाला। इसी समय मेरे माथेपर किसी चीजकी चोट हुई और मैं बेहोश होके गिर पड़ा।

जब मुझे होश आया, तब मैंने अपनेको उसी पहाड़की चोटीके टीलेपर पड़ा हुआ पाया। कप्तान गुड काठके एक प्यालेमें पानी लेके मेरे ऊपर झुके हुए थे। मेरे आंख खोलनेपर उन्होंने बड़ी ही घबराहटसे पूछा,—"क्यों, अलान साहब! कैसे हैं?"

मैंने उठके कहा,—"बहुत ही अच्छा!"

गुड। भाई! जब सिपाही तुम्हें उठाके यहां लाये, तो मैंने समझ लिया था, कि तुम चल बसे।

मैं। बिना समयके कैसे चला जाता? माथेपर चोट लगनेकी वजह मैं सिर्फ बेहोश हो गया था। लड़ाईका हाल कहो।

गुड। दुश्मनकी फौजें तीनों ओरसे मार भगाई गईं। बड़ी मार-काट हुई। हमारे कोई दो हजार सिपाही मरे और जख्मी

हुए। दुश्मनके कोई चार हजार जवान मरे और जखमी हुए होंगे। जरा उधर देखो!

मुझे दिखाई दिया, कि हमारी फौजके चार-चार सिपाही चमड़ेकी लम्बी तश्तरीजैसी किसी चीजपर अपने एक-एक जख्मी साथीको मैदानसे उठाके उसी टीलेके नीचे लाके सुला रहे हैं। सैकड़ो जखमी लाये जा चुके थे और सैकड़ो ही लाये जा रहे थे। जखमियोंका कोई अन्त दिखाई न देता था। कुकुवाना फौजोंमें हर दस सिपाहीके साथ एक डाक्टर होता है। इन लोगोंकी दवा बड़ी ही सीधी होती है। यह लोग साधारण जखमपर मरहम-पट्टी किया करते हैं; लेकिन जब जखम असाधारण पाते हैं; जखमीके बचनेकी आशा नहीं करते; तब उसकी कोई शाह नस धीरेसे खोल देते हैं। उससे खून बहता और जखमी सिपाही मिनट या दो मिनटमें बिना तकलीफके ठण्डा हो जाता है। कुकुवाना डाक्टर इसीतरह किसीको मार और किसीको जिला रहे थे।

मैं उस भयानक दृश्यसे घिनाके भागा और सर हेनरीके पास पहुंचा। उनका खूनी कुल्हाड़ा अभीतक उनके हाथमें था। इगनोसी, इनफादूस और कितने ही बड़े-बड़े सर्दार सर हेनरीसे बातें कर रहे थे। उन्होंने मुझे देखते ही कहा,—"आइये, अलान साहब! आपकी बड़ी जरूरत थी। जरा समझाके कहिये, कि इगनोसी क्या चाहता है। इस समय हमने बाजी मार ली है; लेकिन जान पड़ता है, कि त्वाला और भी फौजें मंगाके इस पहाड़ीको घेरा और हमें भूखों मारा चाहता है।"

मैं। यह तो बड़ी ही भयानक बात है।

हेनरी। इधर इनफादूसका यह कहना है, कि हमलोगोंका पानी खतम हो चला है।

इनफादूस। मैं झूट नहीं कहता। सोतेका पानी इतने आदमियोंकी प्यास बुझा नहीं सकता। रात होते-होते पीने लायक पानी न रहेगा। अब बताइये, हमलोग क्या करें। त्वाला हमें घेरके मारा चाहता है।

मैं। आगे कहो!

इनफादूस। आगे क्या कहूं? पानीके साथ-साथ खाना भी समाप्त हो चला है। इस समय हमारे लिये तीन ही राहें हैं; पहली, इस पहाड़ीपर घिरके जान देना; दूसरी, त्वालाकी फौजोंका घेरा तोड़के उत्तर-दिशामें निकल चलना और तीसरी, पहाड़से उतरके त्वालाकी राजधानी लू नगरपर टूट पड़ना। यह हाथीजैसे जवान सिर्फ लड़ सकते हैं; लेकिन आप लड़ भी सकते हैं और अपने दुश्मनको गिरानेकी चालाकी भी दिखा सकते हैं; इसलिये बताइये, कि इन तीनो राहोंमें कौनसी राह हमारे लिये ठीक होगी।

मैं। इगनोसी! तुम्हारा क्या कहना है?

इगनोसी। मैं कुछ भी कहा नहीं चाहता। क्योंकि बुद्धिमें मैं तुम्हारे सामने बच्चेजैसा हूं। तुम्हीं बताओ, कि हमें क्या करना चाहिये।

मैंने गुड और सर हेनरीसे सलाह करनेपर कहा, कि सबसे अच्छी राह यही है, कि हम त्वालाकी फौजोंपर हमला करें और वह भी अभी; नहीं तो हमारे सिपाहियोंका विजयका उत्साह ठण्डा पड़ जायेगा। मैंने यह भी कहा, कि घेरेकी तकलीफ बढ़नेपर हमारी कितनी ही फौजें हमारा साथ छोड़के शत्रुका साथ दे सकती हैं।

मेरी बातें वीर कुकुआनोंके बहुत पसन्द आईं। वह सब अपने राजा इगनोसीकी अन्तिम आज्ञा पानेके लिये उसके मुंहकी ओर देखने लगे। इगनोसीने कुछ देरतक गहरी चिन्ता करनेके

बार कहा,—"मेरे वीर गोरे मित्रो! और मेरे साहसी सर्दारो! मैं भी चाहता हूं, कि अपने और तुम सबके प्राणोंकी बाजी लगाके मैं आज ही त्वालाकी फौजपर हमला करूं। अब यह देखो, कि हमला कैसे होना चाहिये। तुम्हारे सामने पहाड़ीकी तीन राहें हैं। दो राहें दाहने-बायं हैं और तीसरी राह बीचमें।

मैं। ठीक है।

इगनोसी। इस समय दोपहर है। लड़ाईके बाद सिपाहियोंको खाना और थोड़ा आराम मिलनेकी बड़ी जरूरत है। सूरजके ढलते ही, चाचाजी! आपकी भूरी फौज और एक फौजके साथ इस बीचकी राहसे पहाड़के नीचे उतर जाये। त्वाला जैसे ही इस फौजको देखेगा; वैसे ही अपनी सारी फौजके साथ इसपर टूटके इसे कुचल डालनेकी कोशिश करेगा। लेकिन यह बीचकी राह बहुतही संकरी है। अधिकसे अधिक त्वालाकी एक ही फौज सामने आ सकेगी। तुम्हारी फौजको चाहिये, कि त्वालाकी जो फौज सामने आये, उसे वह मार गिराये। इसतरह घोर युद्ध होगा। त्वालाकी समूची फौज असावधान होके इस विचित्र और भयानक लड़ाईका तमाशा देखने लगेगी। तुम्हारे साथ, चाचाजी! मेरे दोस्त यह हाथी जायेंगे और इनके कुल्हाड़ेकी चमक देखके शत्रुकी छाती हिलेगी। तुम्हारे पीछेकी फौजमें मैं रहूंगा। तुमलोगोंपर विपद् देखके मैं तुम्हारी मदद करूंगा। मेरे साथ अलान रहेंगे।

इन्फादूसने इस लड़ाईके जोखोंको विचारके कहा,—"ऐसा ही होगा; आपकी यह आज्ञा है, कि जबतक हममें एक भी योद्धा जीता बचे, तबतक शत्रुसे सामना करे।"

इगनोसी। हां; और जिस समय यह लड़ाई जमके होने लगे; जिस समय त्वालाकी समूची फौजका ध्यान बंट जाये;

उस समय हमारे छः हजार सिपाही पहाड़ीके दाहनेसे और छः ही हजार सिपाही पहाड़ीके बायेंसे उतरके शत्रु पर टूट पड़ें। इसी समय मैं अपनी फौजके साथ भूरी फौजके बीचसे आगे बढ़के त्वालाकी छातीपर चोट करूंगा। अगर आपलोगोंका यह हमला पूरा उतरेगा, तो सन्ध्या होते-होते हमारी फौजें राजधानी लूपर अधिकार कर लेंगी। गुड साहब हमारी फौजके दाहने भागमें रहेंगे, जिसमें उन्हें देखके हमारे सिपाहियोंका हौसला बढ़े। बस; अब हमलोगोंको खा-पीके लड़नेके लिये तय्यार हो जाना चाहिये। समय बहुत ही थोड़ा है।

एक घण्टेमें खाना-पीना और आराम खतम हो गया। छः हजार सिपाही दाहने; छः हजार बायें भेजे गये। बाकी छः हजार सामनेसे हमला करनेके लिये रखे गये। इन छः हजारमें तीन हजार इनफादूस और सर हेनरीके साथ आगे और बाकी तीन हजार इगनोसीके और मेरे साथ पीछे रखे गये। पहाड़की चोटीपर सिवा जखमी सिपाहियों और कुछ पहरेदार सिपाहियोंके और कोई रह न गया।

दाहनेकी फौजके साथ जानेसे पहले कप्तान गुड मेरे और सर हेनरीके पास आये। आपने कहा,—"लो, यारो! मैं तो चला। कौन जानता है, कि फिर भेंट हो या न हो; इसलिये आओ हाथ तो मिला लें।"

हमलोगोंने बिना किसी तरहकी उत्तेजना दिखाये चुप-चाप हाथ मिलाये। अङ्गरेज जातिकी यह विशेषता है, कि वह बड़ीसे बड़ी मुसीबतके सामने होके भी घबराना या उत्तेजना दिखाना नहीं जानती। मौतको सामने पाके भी धीरज नहीं छोड़ती।

सर हेनरीने बड़ी ही गम्भीरताके साथ कहा,—"सच है, गुड साहब! कौन जानता है, कि कल सवेरेके सूरजका दर्शन किसके-किसके भाग्यमें लिखा है। जिस भूरी फौजके साथ मैं जा रहा हूं, असलमें वह दाहने-बायकी फौजोंको हमला करनेका सुअवसर देनेके लिये बलि चढ़ने जा रही है। शायद उसका एक भी आदमी जीता न बचेगा। फिर भी; मुझे विश्वास है, कि इस फौजका हरेक जवान कुत्तोंकी तरह नहीं; वीरोंकी तरह मरेगा। प्रभु ऐसी मौत हरेक मर्दको दें। विदा, दोस्त! भगवान् तुम्हारी रक्षा करें। अगर तुमलोगोंमें कोई बच जाये, तो यह बात न भूले, कि इन देशियोंके घराऊ झगड़ोंमें उसे कभी पड़ना न चाहिये।"

गुड हाथ मिलाके चले गये। सर हेनरी इनफादूस और उसकी भूरी फौजके साथ आये। मैं इगनोसी और उसकी फौजके साथ रह गया। हे भगवन्! मेरे कपालमें तुमने क्या लिखा है?

चौदहवां बयान।

भूरी फौजकी वीरता।

कुछ ही मिनटोंमें दाहने-बायेंसे हमला करनेवाली फौजें ऊंची भूमिके पीछे अपनेको छिपाती हुई बहुत ही धीरे-धीरे अपनी निर्धारित जगहकी ओर रवाना हो गईं।

उनके जानेके बाद कोई आध घण्टेतक बीचकी फौजें अपनी जगह खड़ी रहीं। वह दाहने-बायेंकी फौजोंको अपनी-अपनी जगह पहुंच जानेका समय दे रही थीं। ऊपर लिखा जा चुका है, कि सामनेकी भूमिसे दो फौजें आगे-पीछे उतरनेको थीं। इनमें आगे भूरी फौज होनेको थी। यह फौज प्रायः पूरी और ताज़ादम थी

सवेरेकी लड़ाईमें शरीक न हुई थी। सिर्फ पहाड़ीपर चढ़ आने-वाले शत्रुओंसे इसने सामना किया था और उस लड़ाईमें इसके दश-पांच जवान मरे-कटे थे। उसके पीछेकी फौजका नाम 'भैंसा' फौज था। यह हेनरोकी लड़ाईके तीसरे मोर्चेमें थी। तीसरा मोर्चा शत्रु तोड़ न सका था; इसलिये यह फौज भी बहुत कुछ पूरी और ताजादम थी।

इनफाडूस पुराना सेनापति था। वह इस महाभयानक युद्धसे पहले अपनी फौजोंको उत्साहित करनेपर तय्यार हुआ। उसने बड़ी ही जोशीली भाषामें अपनी भूरी फौजके हरेक सिपाहीको समझाया, कि आज उन्हें लड़ाईमें आगे रहनेकी बहुत बड़ी प्रतिष्ठा मिली है; उनके साथ गोरे हाथीके रहनेसे विजय उनकी चेरी होगी और उस फौजका जो सिपाही जीता बचेगा, वह बड़े-बड़े सम्मानसे सम्मानित किया जायेगा।

भूरी फौजके उन कठोर चेहरेके बली जवानोंको देखके मेरी छातीसे ठण्डी सांस निकल गई। उस समय वह कैसे उत्साहसे भरे हुए थे; लेकिन एक ही घण्टे बाद उनमें अधिकांश मिट्टीमें मिल जानेको थे। सच तो यह है, कि इस लड़ाईकी विजयके लिये भूरी फौज बलि चढ़नेके लिये चुनी गई थी। इस फौजके सिपाही भी अपने सामनेके सङ्कटको जानते थे। फिर भी; वह सब हिजड़े नहीं; वीर थे; इसलिये दूसरी मौतोंकी अपेक्षा रणकी मौतको श्रेष्ठ समझते थे। उन सबका उत्साह देखके मुझे लज्जा आ गई। जो लोग कर्त्तव्यके लिये अपने प्राण दे सकते हैं; वह लोग दुनियाके किसी भी दबावसे दबाये जा नहीं सकते।

इनफाडूसने अन्तमें कहा,—"सिपाहियो! कमानो! सर्दारो! राजा इग्नोसीको देखो। इनकी पूजा करो और आगे बढ़ो। आज

मैं और यह गोरे हाथी दोनो तुम्हें सम्मान और विजयकी राह दिखायेंगे।"

एकाएक छः हजार सिपाहियोंने अपनी बर्छियां उठाईं और मुंहसे 'कूम' कहा। जान पड़ा, कि पहाड़पर बादल गड़गड़ाया। पहाड़की गिरि और गुफायें प्रतिध्वनित हुईं। इगनोसा ऐसी जबर्दस्त फौजका राजा होनेके कारण जितना अभिमान करता; थोड़ा था।

इसके बाद भूरी फौज पंक्ति बांधके खड़ी हुई। हर पंक्तिमें अफसरोंको छोड़के कोई एक सौ जवान होंगे। ऐसी कोई पैंतीस पंक्तियां तय्यार हुईं। सर हेनरी और इनफादूस इन पंक्तियोंके आगे थे। इनफादूसकी आज्ञासे यह फौज बीचकी राहसे पहाड़के नीचे चली। इस समूची फौजके कोई पांच सौ कदम आगे बढ़ जानेपर 'भैंसा' फौजकी पंक्तियां तय्यार हुईं। इसमें भी प्रायः साढ़े तीन हजार सिपाही थे। इस फौजके आगे स्वयं राजा इगनोसी था और उसकी बगलमें मैं था। जिस समय यह फौज भूरी फौजके पीछे पहाड़से उतरने लगी; उस समय मैंने मन ही मन भगवान्से अपनी रक्षाकी वन्दना की। उससे पहले मैं बहुतेरे खतरोंका सामना कर चुका था; लेकिन ऐसा बेढब खतरा मुझे पहले कभी दिखाई न दिया था।

जिस समय हमारी फौज पहाड़ीकी चोटीके मैदानके किनारे पहुंची; उस समय हमारे आगे जानेवाली भूरी फौज पहाड़ीकी कमरसे नीचे उतरके समतल भूमिके पास पहुंच रही थी। उसे देखके ट्वालाकी फौजपर फौज भूरी फौजकी राह रोकनेके लिये झपटी हुई आ रही थी।

जिस जगह यह बीचकी राह पहाड़ छोड़के समतल भूमिसे मिली थी; उस जगह इसकी चौड़ाई कोई चार सौ कदमसे अधिक

न होगी। वहां पहुंचके भूरी फौजने अपने हजार-हजार जवानोंकी तीन पंक्तियां बनाईं और जमके खड़ी हो गई।

हमारी 'भैंसा' फौज 'भूरी' फौजके कोई एक सौ गज पीछे पहुंचके ठहर गई। जिस जगह वह ठहरी थी; वह जगह समतल भूमिसे बहुत ऊंची थी; इसलिये हमें नीचेकी त्वालाकी फौजें बहुत अच्छी तरहसे दिखाई देती थीं। इसमें शक नहीं, कि सवेरेकी लड़ाईके बाद बहुतेरी नई फौजें त्वालाकीफौजोंमें मिलाई गई थीं। त्वालाकी फौजोंके सिपाहियोंकी संख्या चालीस हजारसे कम न होगी। यह सब फौजें बड़ी ही फुरतीके साथ भूरी फौजकी ओर बढ़ रही थीं। लेकिन 'भूरी' फौजके सामने पहुंचनेपर वह रुक गईं। उन्हें दिखाई दिया, कि दोनो ओर दीवारजैसी पहाड़ी खड़ी थी; बीचकी उस संकरी राहकी रक्षाके लिये 'भूरी' फौज जान हतेलीपर लिये हुई खड़ी थी। उस राहसे एकबारमें एक ही फौज आगे बढ़ सकती थी।

'भूरी' फौजके सामने पहुंचके त्वालाकी फौजें जैसे ही ठहर गईं; वैसे ही एक लम्बा सेनापति अपनी फौजके बाहर निकला। उसके कोई आज्ञा देनेपर त्वालाकी एक फौज जयनाद करती हुई बड़े वेगसे 'भूरी' फौजपर झपटी। 'भूरी' फौज अपनी जगह अटल-अचल खड़ी रही। त्वालाकी फौजने कोई चालीस गज दूर पहुंचनेपर 'तोली' छुरे फेंके। लड़ाई आरम्भ हुई!

त्वालाकी फौजके कुछ और आगे बढ़ते ही 'भूरी' फौजने जय-ध्वनिकी और अपने बर्छे तान-तानके बड़े वेगसे शत्रुके दलपर टूट पड़ी। ढालोंके भिड़नेसे बड़ा ही भयानक शब्द हुआ। फिर तो लगी लड़ाईकी हुङ्कार होने और लगे चलते हुए भाले बिजलियोंकी तरह चमकने। दोनो फौजें गुंथके लड़ने लगीं। लेकिन यह लड़ाई ज्यादा देरतक न टिकी शत्रुकी फौज

घटने लगी। देखते-देखते 'भूरी' फौज बहुत ही धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगी और अन्तमें शत्रुकी फौजके ऊपरसे इसतरह निकल गई, जिसतरह समुद्रकी लहर चट्टानको डुबाती हुई उसके ऊपरसे निकल जाती है। त्वालाकी वह समूची फौज नाश हो गई। उसका एक भी सिपाही न बचा। इधर 'भूरी' फौजकी भी दोही पंक्तियां बाकी बचीं। समूची पंक्ति यानी एक हजारसे अधिक जवान लड़के मर गये।

'भूरी' फौजने आगे बढ़के फिर अपनी पंक्तियां दुरुस्त कीं। उसके सिपाही फिर कन्धेसे कन्धा मिलाके खड़े हुए और लगे दूसरे आक्रमणका इन्तज़ार करने। मुझे यह देखके बड़ा ही आनन्द हुआ, कि सर हेनरी जीते-जागते मौजूद थे। वह अपनी बची हुई फौजको दुरुस्त कर रहे थे। इन्फाद्स भी उनके साथ था।

'भूरी' फौजके आगे बढ़नेपर हमारी 'भैंसा' फौज जाके उस जगह खड़ी हुई, जिस जगह लड़ाई हुई थी। वहां कोई चार हजार सिपाही जमीनपर पड़े हुए थे। उनमें कितने ही मर गये थे, कितने ही मर रहे थे और कितने ही जखमी थे। वहांकी जमीन रक्तसे लाल हो गई थी। इगनोसीने वहां पहुंचते ही हुक्म दिया, कि शत्रुका कोई भी सिपाही मारा न जाये; बल्कि अपने जखमी सिपाहियोंकी तरह शत्रुके भी जखमी सिपाहियोंकी मरहम-पट्टी की जाये। इगनोसीकी यह दया देखके मुझे बड़ा ही सन्तोष हुआ।

इस अवसरमें शत्रुकी एक 'सफेद' फौज 'भूरी' फौजसे लड़नेके लिये आगे बढ़ी। उसके शिरके पर, ढाल, मूंछा आदि सभी सफेद थे। 'भूरी' फौजके बचे हुए सिपाही उसी धीर-गम्भीर भावसे अपनी जगह खड़े रहे। जैसे ही शत्रुकी फौज उनसे कोई चालीस गजके फासिलेपर पहुंची, वैसे ही उसपर वह सब 'मार

मार' कहते हुए भीम वेगसे टूट पड़े। एकबार फिर पहले लोहेकी ढाल लड़ी; एकबार फिर मार-काटका लाल बाजार गर्म हुआ।

लेकिन इस बारकी लड़ाईका फैसला उतनी फुरतीसे न हुआ। कुछ देरतक तो ऐसा जान पड़ा, मानो 'भूरी' फौज जीतेगी ही नहीं। 'सफेद' फौजमें नौजवान ही नौजवान थे और वह सब बड़े वेगसे मारते-काटते हुए हमारे सिपाहियोंको कुछ पीछे हटा ले गये। बड़ी ही भयानक खून-खराबी हुई। हर मिनटमें सैकड़ों आदमी मर-कटके गिरते थे। सिपाहियोंकी हुङ्कार; आहत योद्धाओंकी पुकार और अपने शत्रुकी देहमें बर्छा भोंकते हुए सिपाहियोंकी 'शो-शी!' से बड़ा हो भीषण शोर होने लगा।

फिर भी; अनुभवसे आदमी बहुत कुछ कर सकता है। इसमें कोई सन्देह नहीं, कि एक रण देखे हुआ अनुभवी सिपाही दो नौजवान सिपाहियोंके बराबर होता है। जिस समय हमलोग 'भूरी' फौजकी ओरसे बिलकुल निराश होके उसके नाश हो जानेका भय कर रहे थे; उस समय मुझे एकाएक सर हेनरीकी रणहुङ्कार सुनाई दी। मैंने देखा, कि वह अपने हाथका कुल्हाड़ा घुमाते हुए अपने साथियोंको आगे बढ़नेके लिये उत्तेजित कर रहे थे। इसके बाद ही लड़ाईका रुख बदल गया। 'भूरी' फौज चट्टानकी तरह जमके खड़ी हो गई और लगी शत्रुके हमलेपर हमले रोकने। कुछ ही देरमें 'भूरी' फौज आगे बढ़ने लगी। लड़ाई भी धीमी पड़ गई।

इगनोसीने बड़े ही शान्त भावसे कहा,—"भूरी फौजका हरेक सिपाही मर्द है और इस लड़ाईमें भी यही फौज जीतेगी। देखो! वह देखो!"

मैंने पलटके देखा, तो मुझे 'सफेद' फौजके सिपाही भागते हुए दिखाई दिये। उनके सफेद पर उनके पीछे उड़ रहे थे। लेकिन इधर 'भूरी' फौज भी साफ हो गई थी। चालीस मिनट पहले

जिस फौजमें साढ़े तीन हजार सिपाही थे ; इस समय उस फौजमें सिर्फ कोई छः सौ खूनसे डूबे हुए सिपाही बाकी रह गये। फिर भी ; वह सब बड़े ही आनन्दित थे। शत्रुके भागनेपर उन सबने अपने बर्छे उठाके आनन्दकी ध्वनि की। हम समझते थे, कि 'भूरी' फौजके बचे हुए सिपाही वापस लौटके हमारी फौजमें मिल जायगे; लेकिन पीछे रहनेके बदले वह सब और भी आगे बढ़ गये और एक छोटेसे टीलेके गिर्द तीन पंक्तियां बांधके डट गये। उनके बचे हुए अफसर उस टीलेपर चढ़ गये, जिनमें सर हेनरी और इस्फादस दोनो थे। ऐसे समय ट्वालाकी कई फौजें आगे बढ़ीं और 'भूरी' फौजके उन मुट्ठीभर सिपाहियोंका नाश करनेके लिये उनसे भिड़ गईं। एकबार फिर भयानक युद्ध होने लगा।

हमारे पाठकोंको यह बात अच्छी तरहसे विदित हो गई होगी, कि मैं थोड़ासा कायर हूं। सचमुच ही खून-खराबी मुझे पसन्द नहीं। मारनेके बदले भागना ही मुझे ज्यादा पसन्द है। फिर भी; 'भूरी' फौजपर शत्रुका दबाव पड़ते ही जीवनमें यह पहले-पहल मेरी छातीमें भी लड़ाईका जोश चक्कर मारने लगा। मेरी इच्छा हो रही थी, कि मैं झपटके शत्रुपर टूट पड़ूं और, उन्हें लगूं मारने-काटने। मैंने पलटके अपने साथियोंके चेहरे देखे। हरेक सिपाही अपने भालेका सहारा लिये खड़ा था। सबके चेहरेसे कठोरता दिखाई देती थी; सबकी आंखोंसे खूनकी प्यासकी ज्वाला निकलती हुई दिखाई देती थी। नहीं जानता, कि उस समय मेरा चेहरा कैसा होगा!

सारी फौजमें एक वीर इगनोसी अपने विशाल कुल्हाड़ेके सहारे बड़ी ही शान्तिके साथ खड़ा था। अपने उस समयके रण-वेशमें वह बड़ा ही सुन्दर जान पड़ता था। मैंने उससे पूछा,—

"उम्बोपा !—अरे इगनोसी ! क्या 'भूरी' फौजके सारे वीर मारे जायेंगे और हमलोग खड़े-खड़े उनकी मौतका तमाशा देखेंगे ?"

इगनोसी। नहीं; अलान साहब ! अभीतक हमारी फौजके हमलेका समय नहीं आया था; अब वह समय आ पहुंचा है।

यह कहके इगनोसीने अपना कुल्हाड़ा उठाके अपनी फौजको हमला करनेकी आज्ञा दी। 'भैंसा' फौज सागरकी दौड़ती हुई तरङ्गकी तरह गर्जन करती हुई शत्रु पर टूट पड़ी।

इसके बादका हाल विस्तारके साथ लिखना मेरी शक्तिके बाहरकी बात है। मुझे इतना ही याद है, कि हमलोगोंके शत्रु पर टूटते ही बड़ा ही भयानक शोर हुआ और इसके बाद मुझे अपनी चारो ओर सफेद रोशनीके बदले लाल रोशनी दिखाई देने लगी। शायद इसीको लोग आंखोंमें खूनका उतरना कहते हैं।

जब मेरे हवास ठिकाने हुए, तब मैंने अपनेको उस टीलेकी चोटीपर पाया, जिसके गिर्द खड़ी होके बची हुई 'भूरी' फौज लड़ रही थी। मेरी बगलमें सर हेनरी खड़े थे। उन्होंने मुझसे कहा, कि तुम 'भैंसा' फौजके धावेके साथ यहांतक पहुंचे; अन्तमें वह फौज शत्रुके दबावसे पीछे हटी, तो मैंने तुम्हारी भुजा पकड़के तुम्हें अपने पास खड़ा कर लिया।

रह गई इसके बाद होनेवाली भयानक लड़ाई। उसका सच्चा हाल कौन लिख सकता है। बारंबार शत्रुकी फौजोंने चारो ओरसे हमारी मुट्ठीभर फौजपर हमले किये; बारंबार हमने उन्हें मार-काटके पीछे हटा दिया। चारो ओर लाशोंके ढेर लग गये; खूनके परनाले बहने लगे। भयानक मार-काटके समय भी बुड्ढा इन-फादूस ज्योंका त्यों शान्त था। वह इसतरह खड़ा था; मानो किसी मेलेमें खड़ा हो। कभी वह आज्ञा देता था; कभी उत्साह देता था और कभी-कभी अपने सिपाहियोंको हिम्मत स्थिर रखनेके

लिये उनसे मजाक करता था। साथ ही जिस जगह लड़ाई उलझ जाती थी ; उस जगह भीड़में पैठके तलवार भी चलाता था। सर हेनरी इतफाकसे भी ज्यादा वीरता दिखा रहे थे। शत्रुके बर्छोंकी चोटने उनके सरपर खुंसे हुए काले परोंको उड़ा दिया था। अब परोंकी जगह उनकी वह सुनहरी जुल्फें वायुके झोंकोंमें लहरा रहीं थीं। वह सिरसे पैर तक खूनसे रंगे हुए थे। उनका कुल्हाड़ा जिसपर पड़ता था, वह सिर न उठा सकता था। मेरे देखते-देखते एक दैत्यजैसा अफसर उनसे लड़ने आया। उन्होंने एक ही वारमें उसकी खोपड़ी मुंहतक फाड़के उसे सदाके लिये सुला दिया। उनका यह पुरुषार्थ देखके त्वालाके सिपाही उनके पास आनेसे डरने लगे।

ऐसे समय शत्रुके सिपाहियोंने 'त्वाला-त्वाला'का शोर किया। दूसरे ही क्षण लोहेके कुरते और विशाल कुल्हाड़ेसे सुसज्जित त्वाला अपने सिपाहियोंको चीरके सामने आया। उसने सर हेनरीको ललकारके कहा,—"क्या गीदड़ोंको मारके शेखी दिखाता है ?— आ त्वालाके सामने।" यह कहके उसने हेनरीपर अपना छुरा फेंका, जो निशानेपर न पड़ा। इसके बाद ही वह सिंहकी तरह गरजकर झपटा और सर हेनरीपर उसने अपने कुल्हाड़ेका भरपूर वार किया। यह वार हेनरीने अपनी ढालपर रोका सही; किन्तु उसके वेगसे उनकेजैसे बलवान् आदमीको भी घुटने टेक देने पड़े।

सर हेनरीने उठके त्वालापर वार करनेके लिये अपना कुल्हाड़ा उठाया; किन्तु इस अवसरमें एकाएक लड़ाईका समां बदल गया। पहाड़ीके दाहने और बायेंसे हमारी जो फौजें भेजी गई थीं; वह इसी समय घोर रणहुङ्कार करती हुई शत्रुकी फौजोंपर टूट पड़ीं। बड़े अवसरपर यह हमला किया गया। त्वालाकी

सारी फौजें बची हुई 'भूरी' और 'भैंसा' फौजको घेरके लड़ रही थीं। जो फौजें लड़ न रही थीं; वह इस लड़ाईका तमाशा देख रही थीं। हमारी दाहने-बायेंकी फौज दबे पैर और जमीनपर झुकके आगे बढ़ीं। जब वह शत्रुकी पीठपर पहुंच गईं; तब हुङ्कार करती हुई टूट पड़ीं। शत्रु घबरा गया। उसकी फौजें अपनी पंक्तियांतक बांध न सकीं। भूखा शेर जैसे शिकारपर टूटता है, वैसे ही हमारी वह फौजें शत्रुपर टूटके लगीं उसे नाश करने।

कोई पांच ही मिनटकी भयानक मारके बाद लड़ाईका फैसला हो गया। 'भूरी' और 'भैंसा' फौजकी विकट लड़ाईसे बेदिल बनी हुई त्वालाकी फौजें इस एकाएककी मारसे घबरा गईं। देखते-देखते उनके पैर उखड़ गये; वह भागने लगीं। पहाड़ीसे लेके लूसकका मैदान त्वालाके भागते हुए सिपाहियोंसे भर गया। 'भूरी' और 'भैंसा' फौजको घेरके लड़नेवाली फौजें बरफके टुकड़ेकी तरह आप ही आप पिघलके न जाने कहां बह गईं। समुद्रके हट जानेसे जैसे चट्टानें निकल आती हैं; उन फौजोंके हट जानेसे इ१ दोनो फौजोंके बाकी बचे हुए सिपाही निकल आये। लेकिन इ१ फौजोंके; विशेषतः 'भूरी' फौजके कितने जवान बचे थे? सिर्फ पञ्चानवे। इसके कोई चौंतीस सौ सिपाही हत या आहत होके चारो ओर मैदानमें पड़े थे।

इनफादसने अपनी भुजाके एक जखमपर पट्टी बांधते हुए अपनी फौजके बचे हुए जवानोंसे कहा,—"वीरो! तुम सचमुच ही मर्द हो। आजका तुम्हारा यह काम सैकड़ो सालतक कहानियोंमें कहा जायेगा; गीतोंमें गाया जायेगा।" इसके बाद इन्फादूसने सर हेनरीसे हाथ मिलाके कहा,—"मेरे गोरे हाथी! मैंने बहुतसी लड़ाइयाँ देखीं; बहुतेरे वीरोंको देखा; लेकिन तुम-जैसा वीर मैंने अबसे पहले कभी देखा न था।"

ऐसे समय 'भैंसा' फौज हमारे पीछेसे निकलके लूकी ओर बढ़ी। इगनोसीने अपना हरकारा भेजके इनफादूसको; सर हेनरी-को और मुझे अपने पास बुलाया। हमलोग 'भूरी' फौजके जवानोंको अपने जखमी ढूंढनेके काममें लगाके इगनोसीके पास पहुंचे। वहां तय पाया, कि शत्रु को दम न मिलना चाहिये। अभी लूपर अधिकार और ट्वाला गिरफ्तार किया जाये। हमलोग अपनी फौजके पीछे-पीछे लूकी ओर बढ़ रहे थे; ऐसे समय हमारी निगाह कप्तान गुडपर पड़ी। वह हमसे कोई एक सौ गज दूरके एक मिट्टीके टीलेपर पैर फैलाये हुए बैठे थे। उनके पास ही किसी कुकुवाना सिपाहीकी लाश पड़ी थी।

हमलोगोंके देखते-देखते एक विचित्र घटना हुई। कप्तान गुडके पास पड़ा हुआ, वह कुकुवाना सिपाही एकाएक उठ खड़ा हुआ और कप्तान गुडको गिराके लगा उनकी देहमें अपना बर्छा भोंकने। हमलोग गुडकी ओर दौड़े। उधर वह सिपाही वारपर वार कर रहा था और हर वारके होनेपर कप्तान गुड अपनी देह जमी-नसे उठा दिया करते थे। हमलोगोंको समीप पाके उस कुकुवानाने,—"ले, गोरे जादूगर! यह अन्तिम वार ले" कहके गुडकी देहमें फिर बर्छा भोंका और वह एक ओर भाग गया। गुड हिलते-डोलते दिखाई न देते थे। हमलोगोंने अनुमान किया, कि वह परलोक पहुंच गये। हमलोग बड़े ही शोकके साथ उनके पास पहुंचे। हमें दिखाई दिया, कि वह पीले पड़ गये थे; लेकिन उनकी मुस्कुराहट उनके होंठोंपर थी; उनका चश्मा उनकी एक आंखपर था। उन्होंने हमें देखके सिर्फ इतना ही कहा,—"बचा लिया इस लोहेके कुरतेने; नहीं तो पाजीने मार ही डाला था।" इतना कहके वह बेहोश हो गये। हमने जांचके देखा, कि किसी छुरेकी चोटसे उनके पैरमें एक बड़ा जखम आया था; किन्तु बर्छेकी चोटोंसे उस लोहेके

कुरतेने उन्हें सचमुच ही बाल-बाल बचा लिया था। उनकी देहपर सिर्फ दो-चार खराशें आई थीं। हमलोगोंने चमड़ेकी चादर लिये हुए चार सिपाहियोंको बुलाके कप्तान गुडको उठाके लूका तरफ लानेका प्रबन्ध किया।

अपने बहुत करीबके लूके फाटकपर पहुंचनेपर हमें दिखाई दिया, कि उसके सामने इगनोसीकी आज्ञासे हमारी एक फौज खड़ी थी। लूके तमाम फाटकोंको हमारी फौजोंने घेर लिया था। उस फौजके अफसरने इगनोसीको सलाम करनेके बाद सूचना दी, कि ट्वाला मय अपनी हारी हुई फौजोंके लूमें पहुंच गया है। उसने यह भी कहा, कि ट्वालाकी फौजोंके दिल टूट चुके हैं, थोड़ा दबाव पड़ते ही वह सब हथियार रख देंगी। यह सुनके इगनोसीने हमलोगोंसे सलाह करनेके उपरान्त अपने एक-एक दूत हर फाटकके सामने भेजके ट्वालाके अफसरों और सिपाहियोंसे कहलाया, कि जो लोग शहरके फाटक खोलके हथियार रख देंगे; वह लोग जानकी अमानके साथ-साथ फिर सरकारी नौकरियां और इनाम पायेंगे। इस संदेसेका फल बहुत जल्द दिखाई दिया। हमारे सिपाहियोंकी जयध्वनिके बीच हमारे सामनेका खन्दकका पुल गिराया और फाटक खोला गया।

हमलोग बड़ी ही सावधानीके साथ शहरमें घुसे। हमें अपनी राहोंके दोनों ओर ट्वालाके हारे हुए सिपाहियोंकी भीड़ दिखाई दी। उन सबने अपने हथियार अपने पैरोंके पास रख दिये थे। जैसे ही इगनोसी उनके सामने पहुंचता था; वैसे ही वह उसे शाही सलाम करते थे। हमलोग सीधे ट्वालाके बेड़ेके सामने पहुंचे और उसमें दाखिल हुए। ट्वालाके झोपड़ोंके सामनेका वह विशाल मैदान, जिसमें जादूगरनियों और क्वांरी कन्याओंका नाच हुआ था; बिलकुल खाली पड़ा था। उसके एक किनारे

अपने झोपड़ेके सामने एक तिपाईपर सिर्फ त्वाला बैठा था। उसके पैरोंके पास गगूल बैठो था।

त्वालाकी वह दुर्दशा देखके मुझे उसपर दया आ गई। उसका पतन होते ही उसकी स्त्रियों, सिपाहियों, अफसरों और दरबारियोंने उसे छोड़ दिया था। वह अपनी ढाल और विशाल कुल्हाड़ा अपनी बगलमें रखके शिर झुकाये हुए चिन्ता कर रहा था। हाय! सौभाग्यकी चोटीसे दुर्भाग्यके गड्ढेमें गिरनेवालोंको कितनी तकलीफ होती है? उनके मित्र और आशायें दोनो उनसे दूर हो जाती हैं!

हमलोग मैदान पार करते हुए सीधे उस जगह पहुंचे, जिस जगह त्वाला बैठा था। हम अपने साथकी फौजको कोई पचास गज दूर ठहराके थोड़े रक्षक सिपाहियोंके साथ त्वालाके पास पहुंचे। गगूल हमें देखते ही गालियां देने लगी। हमारे बहुत पास पहुंचनेपर त्वालाने पहले-पहल अपना माथा उठाया। उसकी एक आंखसे क्रोधकी चिनगारियां निकलती हुई मालूम होती थीं।

उसने इगनोसीको कुछ देरतक देखनेके बाद तानेसे कहा,—"आओ, राजा साहब! तुमने मेरे घरानेका नमक खाके मुझसे दगा की। इन गोरे जादूगरोंकी मददसे मेरी फौजोंको बागी बनाया। अब कहो, मेरे लिये तुम्हारा क्या फैसला है?"

इगनोसी। वही फैसला, जो तुमने मेरे पिताके लिये किया था और जिन्हें मारके तुम राजगद्दीपर बैठ गये।

त्वाला। ठीक है। लेकिन मरनेसे पहले मैं तुझे यह दिखाऊंगा, कि वीर किसतरह मरते हैं। वह देख! सूरज खूनमें डूब रहा है। मैं चाहता हूं, कि इस सूरजके डूबनेके साथ-साथ, मेरे जीवनका भी सूरज डूब जाये। मुझे मरनेसे इनकार नहीं; लेकिन मैं कुकुवाना-राजवंशकी

पुरानी प्रथाके अनुसार लड़के मरना चाहता हूं। मुझे विश्वास है, कि तू मेरी यह अन्तिम बात मान लेगा।

इगनोसी। जैसा तू कहता है, वैसा ही होगा। बता, तू किससे लड़ा चाहता है?

यह बात सुनते ही त्वालाने अपनी आंख हमलोगोंकी ओर फेरी। मुझे जान पड़ा, कि उसकी आंख घूम-फिरके मुझपर ही जम गई। मेरा दम निकल गया। पाजीने मेरे ही साथ लड़नेका फैसला किया, तो क्या होगा? उस छः फोट पांच इश्चके भयानक देवका मैं क्या बिगाड़ सकता था? मेरी इच्छा होती थी, कि मैं आत्म-हत्या कर लूं। अन्तमें मैंने तय कर लिया, कि लोग चाहें जितना हँसें; मैं उसके साथ लड़नेसे इनकार कर दूंगा। उसके कुल्हाड़ेसे टुकड़े-टुकड़े किये जानेके बदले हँसे जानेमें कोई हर्ज न था।

अन्तमें त्वालाने हमलोगोंको देखभालके कहा,--"क्यों गोरे हाथी! लड़ेगा मेरे साथ? आज लड़ाईके मैदानमें मेरे और तेरे बीच जो लड़ाई आरम्भ हुई थी, वह समाप्त होगी या तेरी कायरतासे अधूरी ही रह जायेगी।"

इगनोसी। नहीं; वह बहुत थके हुए हैं। लड़नेके लिये तू कोई दूसरा आदमी चुन।

त्वाला। जान पड़ता है, कि वह मुझसे डर गया है।

सर हेनरी उसकी बातें समझ गये। उनका चेहरा लाल हो गया। उन्होंने आगे बढ़के कहा,—"त्वाला! मैं तुझसे लड़ूंगा और लड़ते समय दिखा दूंगा, कि मैं तुझसे कितना डरा हुआ हूं।"

मैंने समझाते हुए कहा,—"सर हेनरी! इस जान हतेलीपर लिये हुए दैत्यसे लड़ना पागलपन है। आजका तुम्हारा पराक्रम देख चुकनेके बाद कोई भी तुम्हें कायर समझ नहीं सकता।"

हेनरी। नहीं, मैं अवश्य लड़ूंगा। ललकारे जानेके बाद न लड़ना मेरी नीतिके विरुद्ध है।

इगनोसी। भाई! तुम्हारा लड़ना किसी तरह भी उचित नहीं। त्वालाकी जितनी चोटें तुमपर पड़ेंगी, वह मेरी छातीपर पड़ेंगी।

हेनरी। नहीं, इगनोसी! यह लड़ाई टल नहीं सकती।

इगनोसी। यही सही। वह देखो! त्वाला तय्यार है।

त्वाला बड़ी ही भयानक हँसी हँसके सर हेनरीके सामने खड़ा हुआ। कुछ देरतक दोनो एक दूसरेके सामने इसीतरह खड़े रहे। डूबते हुए सूरजकी लाल किरनोंने दोनोको जड़ी पोशाकोंको आगके रङ्गका बना दिया। इसमें सन्देह नहीं, कि दोनोका जोड़ बहुत अच्छा था।

धीरे-धीरे दोनो एक दूसरेके गिर्द चक्कर काटने लगे। सर हेनरीने चक्कर काटते-काटते एकाएक उछलके त्वालापर अपने कुल्हाड़े का एक भरपूर वार किया। त्वाला एक किनारे होके बच गया, किन्तु सर हेनरी अपने वारके झिटकेसे आप ही झुक गये। त्वालाने बिजलीकी तरह चमकके झुके हुए सर हेनरीपर अपने कुल्हाड़ेका एक पूरा हाथ लगाया। मेरा कलेजा मुंहको आ गया और मैं समझा, कि सर हेनरीका काम तमाम हुआ। किन्तु सर हेनरीने संभलके त्वालाका वार अपनी लोहेकी ढालपर रोका। उसका एक किनारा कट गया। ढालसे फिसलके त्वालाका कुल्हाड़ा सर हेनरीके कन्धेपर गिरा। किन्तु यह चोट उतनी गहरी न था। दूसरे ही क्षण सर हेनरीने त्वालापर दूसरी चोट की, जिसे उसने अपनी ढालपर रोक लिया। फिर तो दोनो ओरसे चोटपर चोट होने लगी। कोई ढालपर रोकी, तो कोई खाली दी जाती थी। देखनेवालोंकी उत्तेजना बढ़ गई। हमारी फौजोंके सिपाही अपनी

पंक्तियां तोड़के लड़नेवालोंके गिर्द घेरा बांधके खड़े हुए। हर चोटपर उनके मुंहसे कभी 'वाह' कभी 'आह' निकलती थी।

गुड साहब भी पास ही खड़े थे। उनकी बेहोशी दूर हुई, तो उन्होंने यह लड़ाई देखी। वह तुरन्त उठे और मेरी बांहका सहारा लेके उछलते हुए लड़नेवालोंके समीप गये और लगे गला फाड़-फाड़के सर हेनरीको बढ़ावा देने। आपने,--"वाह मेरे शेर! ऐ शाबाश! कमरपर-कमरपर! वाह!" इत्यादि वाक्योंका तांता बांध दिया।

ऐसे समय सर हेनरीने त्वालापर एक भरपूर वार किया। यह वार त्वालाकी ढाल काटके उसके कन्धेपर पड़ा। उसका लोहेका कुरता कट गया और उस कटे हुए स्थानसे खून बहता हुआ दिखाई दिया। इसपर त्वालाने बड़े ही भयानक गर्जनके साथ सर हेनरीपर अपने पूरे बलसे वार किया। इसबार उसका कुल्हाड़ा सर हेनरीकी लोहेकी ढाल काटके उनके चेहरेपर पड़ा। उनके भी ज़खमसे खून जारी हुआ। उनके हाथसे कुल्हाड़ा छूट गया।

हमारे सब सिपाहियोंके मुंहसे एक साथ 'आह' निकल गई। ऐसे समय त्वालाने अपना कुल्हाड़ा फिर उठाया और फिर भयानक गर्जन करता हुआ सर हेनरीकी ओर झपटा। मैंने अपनी आंखें बहुत ज़ोरसे बन्द कर लीं। जब मैंने आंखें खोलीं, तो मुझे दिखाई दिया, कि सर हेनरी अपनी ढाल फेंकके त्वालासे भिड़ गये थे, दोनोंके बीच कुश्ती हो रही थी। त्वालाने एक बड़ा ज़ोर लगाके सर हेनरीको ज़मीनसे उठा लिया। इसके बाद दोनो ही ज़मीनपर गिरे और वहांके पक्के फर्शपर लगे एक दूसरेकी छातीपर चढ़नेकी कोशिश करने। साथ-साथ त्वाला अपने हाथके कुल्हाड़से सर हेनरीपर वार क्रिया चाहता था और सर हेनरी अपने हाथके 'तोल्ला' छुरेसे त्वालाकी छाती चीरा चाहते थे। दोनोंके बीच बड़ी ही रेल पेल चल रही थी

ऐसे समय कप्तान गुडने "चीखके कहा,—"उसका कुल्हाड़ा छीन लो, यार! कुल्हाड़ा छीन लो!"

सर हेनरीने गुडकी बात सुन ली। उन्होंने अपने हाथका छुरा फेंकके त्वालाके कुल्हाड़ाका दस्ता पकड़ा। वह दस्ता चमड़ेके एक मजबूत तस्मेसे त्वालाकी कलाइसे बंधा हुआ था। सर हेनरी वह तस्मा तोड़नेका यत्न करने लगे; त्वाला उसे बचाने लगा। बहुत देरतक यह रेल-पेल चली। अन्तमें एकाएक वह तस्मा टूट गया; वह कुल्हाड़ा सर हेनरीके हाथ आया। इसके बादही सर हेनरीने बड़ा जोर लगाके अपनेको त्वालाके पञ्जेसे छुड़ाया और उठके खड़े हो गये। उनके चेहरेसे खूनकी धारा बह रही थी। त्वाला भी खूनसे नहाया हुआ था। त्वाला भी उठा और उसने उठते ही अपनी कमरसे 'तोला' नामक छुरा निकालके सर हेनरीको छातीपर वार किया। सर हेनरी अगर वह लोहेका कुरता पहने न होते, तो उस वारसे अपनी जान बचा न सकते। त्वालाने फिर वार किया और फिर उसका छुरा लोहेके कुरतेपर पड़के उचट गया। तीसरे बार त्वालाने फिर छुरा उठाया। किन्तु इस बार उसके छुरा चलानेसे पहले सर हेनरीने त्वालाके हाथसे छीना हुआ वह कुल्हाड़ा अपने पूरे बलसे घुमाके उसकी गर्दनपर वार किया। हजारों आदमियोंके मुंहसे जोशकी ध्वनि निकल गई। त्वालाका शिर अपने धड़पर ऊंचा हुआ; इसके बाद वह उससे जुदा होके गिरा और लुढ़कता तथा उछलता हुआ इगनोसीके पैरोंके पास जा पहुंचा। एक क्षणतक त्वालाका बेसिरका धड़ अपनी जगह सीधा खड़ा रहा। इसके बाद वह भद्से जमीनपर गिरा। त्वालाके गलेका सोनेका हार जमीनपर गिरा। साथ ही सर हेनरीपर भी बेहोशी आई; वह लड़खड़ाके त्वालाकी धड़पर गिरे और बेहोश हो गये।

कितने ही सिपाहियोंने दौड़के सर हेनरीको उठाया। उनके चेहरेपर पानीके छींटे दिये गये। उन्होंने आंखें खोल दीं। उनके जीवनका दिया बुझा न था।

इसके बाद मैंने त्वालाके माथेका वह हीरा काटके इगनोसीको दिया और कहा,—"इगनोसो! अब तुम सचमुच ही कुकुआनोंके राजा हुए।"

इगनोसीने वह हीरा अपने माथेपर बांधा और आगे बढ़के त्वालाकी धड़पर अपना दाहना पैर रखके अपनी भाषामें बड़ा ही मधुर और बड़ा ही गम्भीर एक गीत गाना आरम्भ किया।

इसतरह त्वालाका पतन और इगनोसीका उत्थान हुआ।

पन्द्रहवां बयान।

आगेका हाल।

लड़ाई समाप्त होनेपर सर हेनरी और गुड त्वालाके एक साफ़-सुथरे झोपड़ेमें बिस्तरपर पहुंचाये गये। दोनो ही अधिक खून निकलनेके कारण बहुत ही निर्बल हो गये थे। मेरी भी दशा अच्छी न थी। थकावटके मारे मेरे अङ्ग-अङ्ग शिथिल हो गये थे। सवेरेकी सरकी चोट और भी व्याकुल किये हुई थी। मैं अपने दोनो साथियोंको बगलमें एक बिस्तरपर लेट रहा। हम तीनो दुःखी थे सही; फिर भी, उन हजारों योद्धाओंसे बहुत अच्छे थे, जो लड़ाईके मैदानमें सदाके लिये सो रहे थे।

फोलताने हमलोगोंकी; विशेषतः कप्तान गुडकी बड़ी सेवा की। उसीके सहारे हमलोगोंने अपने लोहेके कुरते उतारे। उनके उतरनेपर हमें अपने बदनपर बहुतेरी खरोंचें दिखाई दीं। बेचारी फोलता

किसी वृक्षकी हरी-हरी पत्तियां लाई। उन्हें पीसके लगानेसे हमारी जलती हुई खराशें ठण्डी पड़ गईं। फिर भी; सर हेनरी और गुडकी दशा ज्योंकी त्यों रही। उन दोनोंकी देहोंपर जखम भी थे। गुडकी पिंडलीमें भालेके जखम थे और सर हेनरीके जबड़ेके ऊपरका भाग त्वालाके कुल्हाड़ेसे कटा हुआ था। सौभाग्यसे कप्तान गुड डाक्टरी जानते थे। जैसे ही दवाओंका सन्दूक हमारे झोपड़ेमें आया; वैसे ही उन्होंने सर हेनरीके और अपने जखम धो-पोंछके सी दिये और उनपर मरहम-पट्टी कर दी। इसके बाद हमलोग थोड़ा-थोड़ा गर्म दूध पीके सोये। इत्तफाककी बात; सर हेनरी उसी कोचपर सोये, जिसपर त्वाला सोया करता था।

हमलोग सोनेको सोये; लेकिन नींद कहां? उस रातके सन्नाटेमें समूचे लू नगरसे स्त्रियोंकी रुलाईकी आवाजें आ रही थीं। वह सब लड़ाईमें मारे जानेवाले अपने पति, पुत्र या भाईके लिये रो रही थीं। लड़ाई भी बड़ी भयानक हुई थी। समूचा कुकुवाना फौजका कोई पांचवां हिस्सा—कोई बारह हजार जवानोंका दल—रणचण्डीकी भेंट चढ़ गया था। स्त्रियोंकी रुलाई सुनके मुझे जान पड़ा, कि आज दिनको कितना भयानक काण्ड हुआ था। आधी रात बीतनेपर स्त्रियोंका रोना-धोना घटके बन्द हो गया। पिछली रातको रह-रहके सिर्फ गगूलकी भयानक चीख सुनाई देती रही। वह पास हीके एक झोपड़ेमें थी और त्वालाकी मौतपर रो रही थी।

बीच-बीचमें नींद आती भी थी, तो भयानक सपने दिखाई देने लगते थे। कभी लड़ाईका मैदान दिखाई देता था; कभी वह मुझपर हमला करनेवाला कुकुवाना दैत्य दिखाई देता था; कभी यह दिखाई देता था, कि हमलोग टीलेपर खड़े हैं और 'भूरी' फौजके योद्धा अपनी स्मरणीय वीरता दिखा रहे हैं। एकबार त्वालाका

कटा हुआ मुण्ड भी दिखाई दिया। हर भयानक सपनेके बाद मेरी नींद खुल जाया करती थी।

अन्तमें वह भयानक रात कटी; सवेरा हुआ। मैंने उठके मालूम किया, कि सर हेनरीको भी अच्छी नींद आई न थी। कप्तान गुडको तो बुखार ही आ गया था। सवेरा होनेके बाद ही वह बुखारकी तपनसे बेहोश हुए और लगे खुराफात बकने। कुछ देर बाद उन्होंने खूनकी कै की। उस कुकुवाना सिपाहीके बर्छेसे शायद उनका फेफड़ा चुटीला हो गया था। सर हैनरीका मुंह सूजा हुआ था; किन्तु वह बहुत कुछ ताजादम दिखाई देते थे।

दिन कोई आठ बजे हमारे पास इनफाडूस आया। दिखाई दिया, कि वह बुड्ढा ज्योंका त्यों था। उसने हमें देखके आनन्द और गुडको देखके दुःख प्रकाशित किया। सर हैनरीकी उसने बड़ी भक्ति की। कलकी लड़ाईमें अपना पराक्रम दिखाके सर हेनरीने सिर्फ इनफाडूस हीका नहीं; सारे सिपाहियोंका मन मोह लिया था। कुकुवाने किसी जबर्दस्त चोटको 'सफेद हाथीकी चोट'के नामसे पुकारने लगे थे। इनफाडूसने हमें सूचना दी, कि त्वालाके मरते ही सारा झगड़ा मिट गया। दूर-दूरके सर्दार आके इगनोसीको अपना राजा मान रहे हैं। अब कुछ समयतक कुकुवाना देशमें शान्ति विराजेगी।

इनफाडूसके जानेके कुछ देर बाद शाही ठाट-बाटके साथ इगनोसी आया। उसके माथेपर वह बड़ा हीरा झलझला रहा था; उसके पीछे रक्षक सिपाहियों और सर्दारोंका दल था। उसकी हर अदासे शाही शान दिखाई देती थी। आदमी देखते-देखते कहांसे कहां पहुंचता है। कहां वह दरबनमें आके नौकरी मांगनेवाला उम्बोपा और कहां कुकुवानोंका राजा इगनोसी!

मैंने उठके कहा,—"आइये, राजा साहब!"

इगनोसी। हां, अलान साहब! राजा हुआ; लेकिन आप दोस्तोंकी मददसे। मैं जल्द ही एक बड़ा दरबार करनेवाला हूं, जिसमें देशके सभी सर्दार और मुखिया शरीक होंगे।

मैं। गगूलका क्या होगा?

इग०। बड़ी ही भयानक है, यह औरत। मेरी समझमें, तो उसका मरना ही ठीक है।

मैं। लेकिन वह बहुतेरी बातें जानती है। ज्ञानको मारना सहज है, लेकिन संग्रह करना कठिन!

इग०। यही मैं भी सोचता हूं। उस तीन जादूगरनियोंके पहाड़का भेद सिवा उसके और किसीको मालूम नहीं।

मैं। और उसी पहाड़के अन्दर हीरे हैं। इगनोसी! गगूलको मारनेके बदले ऐसा यत्न करो, जिससे वह हीरेकी खानितक हमलोगोंको पहुंचा दे।

इगनोसीने ऐसा ही करनेका वचन दिया। उसके जानेके बाद मैं गुडके पास गया। देखा, कि उनकी दशा और भी बिगड़ गई थी।

तीन दिनोंतक गुडकी दशा बिगड़ती ही गई। अन्तमें दो दिनोंतक हमें ऐसा जान पड़ा, मानो वह इस संसारसे विदा हुआ चाहते हैं। एक फौलताको इस बातका विश्वास न हुआ। वह बिना खाये, पिये और सोये दिन-रात उनके पास रहके उनकी सेवा किया करती थी। उसका हृदय गुडकी तकलीफ देखके मानो फटा जाता था। स्त्रियां; चाहे किसी देश; किसी स्थिति और किसी रङ्गकी हों; उनका स्वभाव समान ही होता है।

पांचवें दिन सवेरे मैं दबे पैर गुडके झोपड़ेमें गया। वहांके लम्पके धुंदले प्रकाशमें मुझे दिखाई दिया, कि गुड तड़पनेके बदले लम्बे पड़े हैं। मैं धक्से रह गया। क्या गुडकी इस दुनियाको

लीला समाप्त हो गई ? मैं फूटके रोने चला। ऐसे समय गुडकी चारपाईकी बगलसे आवाज आई,—"चुप—चोप !"

अब मैंने आगे बढ़के देखा, कि गुड मरे नहीं; गहरी नींदसे सो रहे थे। उनके हाथमें फौलताका कोमल हाथ दबा हुआ था। अब मुझे ज्ञान पड़ा, कि रोगका जोर टूट गया; गुडकी जान बची। वह अट्ठारह घण्टेतक उसीतरह सोते रहे और अट्ठारह घण्टेतक उनके हाथमें हाथ दिये हुई कुकुवाना सुन्दरी फौलता बैठी रही। उसे भय था, कि उसके हाथ खींचनेसे कहीं गुडकी नींद टूट न जाये। अन्तमें जब गुडकी नींद टूटी; तब फौलता आपसे उठ न सकी। कुछ स्त्रियां आके उसे उठा ले गईं। उतनी देरतक बैठनेकी वजह उसका शरीर जकड़ गया था।

फिर तो कप्तान गुड दिन-दिन अच्छे ही होते गये। जब वह बहुत कुछ स्वस्थ और सबल हो गये, तब एक दिन उनसे सर हेनरीने फौलताकी कठिन सेवाका हाल सुनाया। उसे सुनते ही गुड साहब बौखला गये। वह दुभाषियेका काम करनेके लिये मुझे अपने साथ लेके उस झोपड़ेमें पहुंचे, जिसमें फौलता हम सबकी रसोई बना रही थी। आपने वहां पहुंचते ही मुझसे कहा,—"कह दीजिये, मिस फौलतासे, कि उन्होंने मेरी जान बचाई है और जन्मभर मैं उनकी इस दयाको न भूलूंगा।"

मेरे द्वारा गुडकी बात सुनके फौलताके सुन्दर मुखड़ेपर लाजकी लाली छा गई। इसके बाद उसने अपनी मृग-नयनजैसी बड़ी-बड़ी आंखें गुडके चेहरेपर जमाके कहा,—"नहीं; मैंने तुम्हारी जान नहीं बचाई; तुम्हींने मेरी जान बचाई है।"

और मैंने; सर हेनरीने भी क्या उसकी जान नहीं बचाई थी? लेकिन गुडके सामने वह हम दोनों हीको भूल गई। स्त्रियोंका ऐसा ही दस्तूर है मैं वहांसे टल गया मुझे 'मिस फौलता'की

यह नर्म निगाहें भली जान न पड़ीं। उधर गुड भी मानो फौलादसे प्रेम करनेके लिये कमर कसे हुए थे। दुनियामें दो चीजें रोकी नहीं जा सकतीं। एक जुन्नूका छेड़के लड़ना और दूसरा जहाजी आदमीका प्रेम करना।

इस घटनाके बाद एक दिन इगनोसीका दरबार हुआ, जिसमें देशके सभी सर्दारोंने शामिल होके उसे अपना राजा माना। दरबारके बाद सारे देशकी आई हुई फौजोंने इगनोसीको सलामी उतारी। सलामीके बाद 'भूरी' फौजके बचे हुए जवान बुलाये गये। इगनोसीने उन सबकी खुलके प्रशंसा की। उनमें हरेक सिपाहीको मवेशी और जमीनका पुरस्कार दिया गया। दूसरी 'भूरी' फौज तय्यार हो रही थी। इगनोसीने उन बचे हुए सिपाहियोंमें हरेकको बननेवाली 'भूरी' फौजका अफसर बनाया। साथ ही ल और सारे देशमें प्रचार किया गया, कि इगनोसीकी शक्ति और हमारी शक्तिमें कोई अलगाव नहीं; हमलोग भी इगनोसी हीकी तरह राजसम्मानके अधिकारी ठहराये गये। उसी समय इगनोसीने यह भी कहा, कि भविष्यत्में जादूगरनियोंका नाच न होगा और बिना विचारके कोई भी अपराधी प्राणदण्ड न पायेगा।

दूसरे दिन हमलोगोंने इगनोसीके पास जाके अपनी हीरेकी खानि देखनेकी इच्छा प्रकट की। इसपर उसने कहा,—"मेरे दोस्तो! मैं हीरेकी खानिकी ओरसे गाफिल न था। मुझे पता लगा है, कि उस तीन जादूगरनियोंवाले पहाड़के अन्दर ही हीरेकी खानि है। उसी पहाड़में एक गुफा है, जिसमें मरे हुए कुकुवाना राजाओंको समाधि दी जाती है। आपलोग वहां त्वालाकी भी लाश पायेंगे। वहीं एक गड्ढा है; जान पड़ता है, कि अगले समयमें लोगोंने चमकीले पत्थर पानेके लिये ही उसे खोदा था। वहीं एक कमरा है, जो मौतका कमरा कहलाता है। उसका रहस्य त्वाला

जानता था या गगूल जानती है। देशमें प्रसिद्ध है, कि अगले समयमें एक गोरा आदमी उस कमरेमें पहुंचा था; वह हीरे लिया चाहता था; ऐसे समय उस समयकी गगूल नाम्नी एक स्त्रीने उससे दगा की और वह राजाकी आज्ञासे इस देशसे निकाल दिया गया।

मैं। यह सच्ची बात है, इगनोसी! यह वही गोरा आदमी था, जिसकी लाश तुमने भी शैबा-पहाड़पर देखी थी।

इग०। ठीक है। तुमलोग अगर उस कोठरीतक पहुंच जाओगे और वहां चमकीले पत्थर पा जाओगे, तो जितने पत्थर तुम सब उठा सकना; उतने उठा ले जाना।

मैं। लेकिन सबसे पहले हमें उस खानितक पहुंचना चाहिये।

इग०। अकेली गगूल ही तुमलोगोंको वहांतक पहुंचा सकती है।

मैं। और अगर वह न पहुंचाये?

इग०। तो उसको सजा मौत होगी। इसीलिये मैंने उसे जिन्दा छोड़ा है। अभी इस बातका फैसला हुआ जाता है। सिपाहियो! जाओ; गगूलको यहां लाओ।

कुछ ही मिनटोंमें दो सिपाही सहारा देके गगूलको इगनोसीके सामने लाये। वह हर कदमपर उन दोनोंको गालियां दे रही थी। जैसे ही सिपाहियोंने अपना हाथ हटाया; वैसे ही वह निर्जीव थैलेकी तरह जमीनपर ढेर हो गई। अन्तमें उसने अपनी पिपिहरी-जैसी आवाजमें पूछा,—"क्यों इगनोसी! मुझे क्यों बुलाया है? सावधान! मुझे न सताना; नहीं तो एक ही छू मन्त्रमें तुम्हें इस लोकसे परलोक भेज दूंगी।"!

इग०। चुड़ैल! उस छू मन्त्रसे तूने अपने प्यारे ट्वालाको क्यों न बचा लिया। मुझे मारना हँसी-खेल न समझ। सुन! तू

मेरे इन मित्रोंके साथ जाके इन्हें वह कमरा दिखा, जिसमें चम-कोले पत्थर हैं।

गगूल। हा-हा-हा! सिवा मेरे और किसीको भी उस कमरेकी राह मालूम नहीं और मैं इन सबको वहांतक पहुंचाया नहीं चाहती। यह गोरे पिशाच एक भी चमकीला पत्थर न पायगे।

इग०। तुझे इन सबको वहांतक ले जाना ही पड़ेगा।

गगूल। कभी नहीं।

इग०। तो मरनेके लिये तय्यार हो जा!

यह सुनके बड़े भय और क्रोधसे गगूलने कहा,—"क्या, मरनेके लिये? नहीं-नहीं तू मुझे मारनेकी हिम्मत कर नहीं सकता। जानता है, मेरी उम्र क्या है? मैंने तेरे बापको; तेरे बापके बापको; तेरे बापके बापके बापको देखा है। मैं उस समयसे हूं, जिस समय तेरे बड़े ही नहीं; बल्कि जिस समय यह देश बच्चा था। अब यह देश बुड्ढा हो गया है। मुझे कोई मार नहीं सकता; किसीमें इतनी हिम्मत नहीं!"

इग०। मुझमें इतनी हिम्मत है और मैं तुझे मार डालूंगा।

गगूल!—बुड्ढ! जान पड़ता है, कि अब तुझे जीवनकी परवा नहीं। तेरी आंखें चली गईं; मुंह चला गया; दांत चले गये; शक्ति चली गई; केवल तेरा काला हृदय और ज़हरीली आंख रह गई हैं। तेरा मरना ही मुनासिब है!

गगूल। मूर्ख!—महामूर्ख! क्या तू समझता है, कि जीवन सिर्फ जवानों हीको प्यारा होता है। तुझे आदमीके मनका हाल मालूम नहीं। जवान आदमी जीवनसे उकताके कभी-कभी मर भी जाया करते हैं; लेकिन बुड्ढे जीवनको प्यार करते हैं। वह जब लोगोंकी मौत देखते हैं, तब हँसते

हैं। तू क्या जाने, कि बुड्ढोंको जान कितनी प्यारी होती है। हा—हा—हा!

इग०। चुप। बता तू मेरे मित्रोंको उस कोठरीकी राह दिखाया चाहती है या नहीं। अगर नहीं दिखाया चाहती, तो ले मर!

यह कहके इगनोसीने बर्छा उठाया। गगूल ने कुछ पीछे खिसकके फुफकार मारी,—"खबरदार! मुझपर हाथ न उठा! नहीं तो जन्मभर पछतायेगा।"

लेकिन इगनोसीने उसकी बात अनसुनी कर दी। उसने अपना तना हुआ बर्छा धीरे-धीरे उतारके उसकी जरासी नोक गगूलको पीठमें उतार दी। जङ्गली पशुकी तरह गगूल चीख उठी और मारे घबराहटके एकबार उठके जमीनपर गिर पड़ी। अन्तमें उसने कांपते हुए कहा,—"दिखा दूंगी; वह कोठरी मैं इन सबको दिखा दूंगी। मुझे जीने दे; धूपमें बैठने और एक टुकड़ा गोश्त चूसके जीने दे।"

इगनोसी। हां; अब तेरी बुद्धि ठिकाने आई। कल सवेरे तू इनफादूस और मेरे इन गोरे मित्रोंके साथ उस पहाड़ीकी ओर जा। याद रखना; अगर तूने छल किया, तो तू बुरी मौत मारी जायेगी।

गगूल। नहीं; मैं इन सबको वह कोठरी जरूर दिखाऊंगी। हा-हा-हा! अबसे पहले भी एक गोरे आदमीने वह कोठरी देखी थी और उसके देखनेके कारण ही उस आदमीका नाश हो गया। उसे वह कोठरी मुझ गगूल हीने दिखाई थी।

इगनोसी। चुप झूठी। यह बात कोई दस पुश्त पहलेकी है, उस समय तू इस दुनियामें कहां थी?

गगूल। कोई और गगूल होगी; लेकिन थी मेरे ही घरानेकी। उसका भी नाम गगूल ही था। कल सवेरे मैं जाऊंगी। वहां मौतका कमरा देखूंगी; इन सबको वह हीरेका खजाना दिखाऊंगी। हा-हा-हा!

सोलहवां बयान।

मौतका कमरा।

ऊपरके बयानके अन्तमें जिस दिनका हाल लिखा गया है; उसके तीसरे दिन सन्ध्याको हमलोगोंने 'तीन जादूगरनी' पहाड़की तराईमें बने हुए कुछ झोपड़ोंमें, सुलैमान राहके किनारे, अपना पड़ाव किया। हमारे दलमें हम तीनो मित्र थे; हमलोगोंकी साथिन या कप्तान गुडकी साथिन फौलता थी; इनफादूस था और कितने ही रक्षक सिपाही थे। एक डोलीमें बैठके आनेवाली गगूल भी थी। राहभर वह हमें और रक्षक सिपाहियोंको गालियां देती हुई आई थी। हमारे सामने एक विशाल पहाड़ था, जिसमें तीन चोटियां थीं। एक चोटी दाहने; दूसरी बायें और तीसरी बीचमें हमारे ठीक सामने थी। दूसरे दिन सवेरेके सूरजके प्रकाशमें उन चोटियोंका जो दृश्य मैंने देखा, वह मुझे जन्मभर याद रहेगा। विशाल चोटियां आकाशमें डूबी हुई जान पड़ती थीं। चोटियोंका माथा बरफसे ढंका हुआ सफेद था; बरफसे नीचेका भाग पीला था और तराई काली थी। हमारी बगलसे आगे बढ़के कोई ढाई कोस दूरकी बीचकी चोटीतक पक्की सुलैमान-राह बल खाती हुई चली गई थी। यह राह शेबा-पहाड़से आरम्भ होके इस जगह समाप्त हुई थी।

सवेरेका नाश्ता समाप्त करनेपर हमलोग जब उस राहसे उस बीचकी चोटीकी ओर बढ़े, तब हमारे मनमें तरह-तरहके भाव उत्पन्न होने लगे। जिस हीरेकी खानितक पहुंचनेके यत्नमें जोशे और उसके वंशधर सिलवेस्ट्रीने अपनी जान गँवाई; जिसके लिये शायद् सर हेनरीके भाईकी भी जान गई; वही हीरेकी खानि हमारे सामने थी। क्या जो हाल उन सबका हुआ; वही हाल हमारा भी होनेको था? क्या; गगूलके कहनेके अनुसार सचमुच ही हीरेकी खानि देखनेवालोंका नाश हुआ ही करता था? इन प्रश्नोंके होनेपर हम तीनो होके दिल, न जाने क्यों, आप ही आप धड़कने लगे।

हमलोग अपनी-अपनी धुनमें डूबे हुए बड़ी ही तेजीके साथ पहाड़पर चढ़ रहे थे। गगूलका डोला हमारे पीछे छूट गई। इसपर उसने अपनी डोलीके पर्देसे अपना सूखा हुआ सिर निकालके पिपिहरीजैसी आवाजमें कहा,—"गोरे आदमियो! इतनी उतावली न करो। मुसीबत तुम्हारे सामने है; उसे झेलनेके लिये इतनी घबराहट क्यों दिखाते हो? हा-हा-हा!" न जाने क्यों; उस सुनसान पहाड़की प्रतिध्वनिमें उसकी यह हँसी बड़ी ही विकट जान पड़ी। उसे सुनके हम तीनो कांप उठे!

फिर भी; हमलोग आगे बढ़ते ही गये। अन्तमें हमें पहाड़की कमरपर एक विशाल गड्ढा दिखाई दिया। यह गड्ढा गोल था; नीचे ढालुआ था; इसकी गोलाई कोई पाव कोसकी और गहराई कमसे कम कोई तीन सौ फीटकी होगी। हम तीनो इस गड्ढेको जब बड़ी हैरतके साथ देख चुके, तब मैंने सर हेनरीसे पूछा,—"जानते हैं, यह गड्ढा काहेका है?"

उनके इनकार करनेपर मैंने कहा,—"तब जान पड़ता है, कि आपने किम्बरलीकी हीरेकी खानि कभी नहीं देखी। यह जो

गड्ढा आपके सामने है; यही सुलैमानकी हीरेकी खानि है। देखिये! जैसी हरी मिट्टी इस गड्ढे के पेंदेमें है; वैसी ही हरी मिट्टी यहां जगह-जगह पड़ी हुई दिखाई देती है। अगर हमलोग इस गड्ढे में उतरके जांच करेंगे, तो हमें इसके अन्दर बहुतेरे गड्ढे और सुरङ्गें दिखाई देंगी। वह सामने बहते हुए सोतेके किनारे जमाये हुए बहुतेरे चौरस पत्थरके टुकड़ोंको देखिये; इन्हीं टुकड़ों-पर पानीके सहारे मिट्टी धोके हीरा निकाला जाता था।"

इस गड्ढेके किनारेतक पहुंचके सुलैमान-राह दो भागोंमें विभक्त होके गड्ढेके दोनो किनारोंकी परिक्रमा करती हुई पहाड़के उसपार मिल गई थी। इस जगह यह राह पत्थरके टुकड़ोंसे नहीं; पत्थरके फर्शसे बनी हुई थी। जान पड़ा, कि उस गड्ढेका किनारा पायदार बनानेके लिये ही यह व्यवस्था की गई थी। उस नकशेमें भी इस गड्ढेकी जगह बनाई गई थी। हमलोग इस गड्ढेकी परिक्रमा करनेपर जब आगे बढ़े, तब हमें अपने सामनेके दीवारजैसे खड़े पहाड़की देहपर तीन विशाल मूर्त्तियां दिखाई दीं। कुकुवाने इन्हीं तीनो मूर्त्तियोंको अपने देशके तीन देवता या 'तीन जादूगरनी' समझते थे।

उनके समीप पहुंचके हमने देखा, कि एक काली चट्टानकी वेदीपर बीस-बीस कदमके फासिलेपर तीन बैठी हुई विशाल मूर्त्तियां पहाड़की देह काटके बनाई गई थीं। यह तीनो मूर्त्तियां बैठी थीं; बैठनेपर भी इनकी उंचाई बीस फीटसे कम न होगी। बीचकी मूर्त्ति स्त्रीकी थी और दाहने-बायेंकी पुरुषोंकी। स्त्री-मूर्त्ति नङ्गी थी; उसके चेहरेसे कठोरता दिखाई देती थी। फिर भी; सदियोंके मौसमने उसका चेहरा बहुत कुछ मिटा दिया था। दोनो पुरुष-मूर्त्तियां कपड़े पहने हुई थीं। दोनोंके चेहरे बड़े ही भयानक थे। विशेषतः हमारे दाहनेकी मूर्त्तिका चेहरा, जो विशा-

बका बेहरा जान पड़ता था। दोनोंकी आकृतिसे कठोर शान्ति दिखाई देती थी। यह तीनो मूर्त्तियां अपनी वेदीपर बैठके सारे कुकुवाना देशको देखती हुई जान पड़ती थीं।

हमलोग अभी इन मूर्त्तियोंको देख ही रहे थे; ऐसे समय वहां इनफादूस आया। उसने पहले अपना बर्छा उठाके उन मूर्त्तियोंको प्रणाम किया; पीछे हमलोगोंसे पूछा, कि आपलोग 'मौतके कमरे'में अभी जायेंगे या खाना खानेके बाद; गगूल आपलोगोंको वहां ले जानेके लिये तय्यार है। उस समय दिन ग्यारह बजे थे और वहांका रहस्य देखनेके लिये हम तीनो ही बहुत उत्सुक थे; इसलिये मैंने इनफादूससे कहा, कि हमलोग बिना भोजन किये ही गुफाकी सैर किया चाहते हैं। मैंने यह भी कहा, कि हमलोग अपना खाना अपने साथ ले लेंगे; अगर हमलोगोंको गुफा देखनेमें देर लगेगी, तो हम वहीं खा-पी लेंगे। गगूलकी डोली वहीं मंगाई गई। वह बाहर निकली और हमलोगोंको लेके पहाड़के ऊपर चढ़ने लगी।

हमारे सामनेका पहाड़ दीवारकी तरह सीधा खड़ा था। उसके ऊपर ढालू भूमि थी और उसके भी ऊपर बरफसे ढकी हुई चोटी। कुछ ही कदम ऊपर चढ़नेपर हम उस दीवारजैसे पहाड़के सामने पहुंचे। वहां हमें खानिके मुंहजैसा एक दहाना दिखाई दिया। इसके सामने खड़े होके गगूलने अपनी उसी पिपिहरीजैसी आवाजमें कहा,—"क्यों, चन्द्रलोकके रहनेवालो! आगे बढ़नेके लिये तय्यार हो न? राजाकी आज्ञाके अनुसार मैं तुम्हें इस गुफामें ले जाने और इसमें भरे हुए चमकीले पत्थर दिखानेके लिये तय्यार हूं। हा-हा-हा!"

"हां! हमलोग तय्यार हैं।

गगूल। ठीक है; ठीक है। लेकिन इस गुफामें तुमलोग जो कुछ देखोगे, उसे देखनेके लिये अपनी छातियां अभीसे मजबूत बना लो। क्यों इनफाडूस! नमकहराम! तू भी इनके साथ गुफामें आयेगा?

इनफाडूसने तेवरपर बल डालके कहा,—"सुन, चुड़ेल! मुझे यहीं पहरा देनेकी आज्ञा मिली है; इसलिये मैं इनके साथ चल नहीं सकता। फिर भी; यह बात न भूल जाइयो, कि तू इन्हें जिसतरह ले जा रही है; उसीतरह सही-सलामत यहां लौटाके ले आ। तेरी शैतानीसे अगर इनका एक बाल भी बांका होगा, तो एक गगूलकी तू पचास गगूल बनेगी, तो भी मेरे हाथसे जान बचा न सकेगी। सुनी तूने मेरी बात?"

गगूल। सुन लो, इनफाडूस! बड़ी-बड़ी बातें बघारनेकी तेरी आदत है। जब तू बच्चा था, तो अपनी माको धमकाया करता था। लेकिन भय न कर; मैं राजाकी आज्ञा पूरी करूंगी। मैंने एक नहीं; बहुतेरे राजोंकी आज्ञाके अनुसार काम किया है। हा! हा! हा! आज मैं उन सबके दर्शन करूंगी। त्वालाका मुंह देखूंगी। चले आओ; चले आओ, गोरे आदमियो! जरा ठहरो; मैं मशाल जला लूं।"

गगूल जब मशाल जलाने लगी, तो कप्तान गुडने सड़ी-गली कुकुवाना भाषामें फौलतासे पूछा,—"क्यों फौलता! साथ चलोगी न?"

फौलता। मुझे डर लगता है, सरकार!

गुड। तो तुम यहीं ठहरो। खानेकी पोटली मुझे दे दो।

फौलता। नहीं, सरकार! जहां तुम चलोगे, वहां मैं भी चलूंगी।

मैंने मन ही मन कहा,—"तो धूलेरे जन्मभर। कम्बख्त जान दिया चाहती है; लेकिन गुडको छोड़ा नहीं चाहती।"

मशाल जलाते ही, बिना कुछ कहे-सुने, गगूल उस गुफाके मुंहमें घुस पड़ी। हमलोग भी बातें छोड़के उसके पीछे चले। गुफामें दो आदमियोंके बराबरसे चलने लायक राह थी और वह बड़ी ही अंधेरी थी। ऐसे समय हवामें सन्नाटा हुआ और परोंके फटफटानेकी आवाज सुनाई दी!

गुड। हैं! यह क्या है? मेरे मुंहपर तमाचा किसने जड़ दिया?

मैं। चमगीदड़ हैं, चमगीदड़! बढ़े चलिये।

कोई पचास कदम आगे बढ़नेपर हमें अपनी उस राहमें धुंदला-धुंदला प्रकाश दिखाई दिया। कुछ ही कदम और आगे बढ़नेपर हमें एक ऐसा विचित्र स्थान दिखाई दिया; जैसा सारे संसारमें ढूंढे भी मिल न सकता था।

उस राहको समाप्त करनेपर हम जिस स्थानमें पहुंचे, वह एक बहुत ही विशाल मण्डप या 'हाल' था। उसकी छत कोई एक सौ फुट ऊंची थी। छतके किनारे-किनारे जगह-जगह बड़े-बड़े सूराख थे, जिनसे हवा और रोशनी आ रही थी। उस रोशनीके प्रभावसे नीचेके उस हालमें भी धुंदला-धुंदला उजेला फैला हुआ था। यह विशाल हाल आदमीका बनाया नहीं; कुदरतका बनाया हुआ था। इस हालकी लम्बाई-चौड़ाईसे भी अधिक विचित्र, इसमें ओरसे छोरतक कई पंक्तियोंमें बनी हुई, इसकी खम्भोंकी पंक्तियां थीं। इनमें हरेक खम्भा बरफका बना हुआ जान पड़ता था; किन्तु असलमें वह 'स्टैलैकटाइट्स' बरफके गला-बका था। इन खम्भोंकी विशालता; सौन्दर्य और सफेदीका ठीक-ठीक वर्णन कठिन है। इनमें किसी-किसी खम्भेकी जड़का

गर्भसूत्र बीस फीटसे कम न होगा। यह सब नीचे मोटे और ऊपर क्रमशः पतले होते हुए उस विशाल छतसे जाके मिल गये थे। कितने ही खम्भे अभी बन रहे थे। उस हालके सङ्गीन फर्शपर वह बनते हुए खम्भे किसी खण्डरके टूटे हुए खम्भेकी तरह कुछ फीट बनके खड़े थे। उनके ठीक ऊपर छतपर बरफकी एक-एक विशाल नोक झुकी हुई दिखाई देती थी।

हमलोग जिस समय अपने चेहरे ऊपर उठाके बरफकी एक विशाल नोक या सुईकी तरफ देख रहे थे; उसी समय उससे थोड़ासा जल टपकके उसके नीचेके बनते हुए खम्भोंके माथे-पर आ पड़ा। हमने देखा, कि अधिकांश बनते हुए खम्भोंके माथेपर हर दूसरे या तीसरे मिनट ऊपरकी उस बरफकी सुईसे एक या दो पाव जल आ गिरता था। यही जल सूखके उन बनते हुए खम्भोंको बनाता और बढ़ाता था। मैं सोचने लगा, कि इस हिसाबसे दस फीट गर्भ-सूत्रके और कोई अस्सी फीट ऊंचे खम्भेके बननेमें कितना समय लगेगा। ऐसे समय मेरी निगाह एक अधूरे खम्भेपर पड़ी, जिसमें फर्शसे कोई पांच फुटकी ऊंचाईपर किसी मिश्री कारीगरने मिश्री मूर्त्तियां खोदी थीं। इसमें सन्देह नहीं, कि जिस समय वह खानि खोदी गई होगी; जिस समय वह राह तय्यार की गई होगी; उसी समय; यानी कोई तीन हजार वर्ष पहले—किसी नौजवान और निकम्मे कारी-गरने खिलवाड़में वह मूर्त्तियां बना दी होंगी। उन मूर्त्तियोंके खुद-नेके बाद उसके ऊपर कोई तीन फीट खम्भा तय्यार हुआ था। इससे मैंने हिसाब लगाया, कि वह खम्भे एक हजार सालमें एक फुट या सौ सालमें एक इञ्चके हिसाबसे तय्यार हुए और होते होंगे। हमें सुनाई और दिखाई दिया, कि कुदरत कारीगर पानी

टपका-टपकाके उन खम्भोंके बनानेके काममें बराबर लगा हुआ था।

जिस जगह छतसे आता हुआ बरफका पानी कुछ समयतक एक जगह गिरके बन्द हो गया था; उस जगह चित्र-विचित्र बरफ-जैसी सफेद और चूनेजैसी कठोर सूरतें तय्यार हो गई थीं। कहीं टेबुल तय्यार हो गये थे; कहीं चित्र-विचित्र पशु-पक्षी बन गये थे; एक जगह दीवारमें एक विशाल पंखेकी सूरत तय्यार हो गई थी।

इस विशाल हालकी चारो ओर छोटी-छोटी गुफायें थीं और उनमें भी छतसे टपकते हुए बरफके पानीके खम्भे आदि बने या बन रहे थे। कोई-कोई गुफा बहुत ही छोटी थी; गुड़ियाके घरौंदेके बराबर। इसमें भी कुदरत अपनी वही कारीगरी दिखा रही थी।

हमलोग गगूल चुड़ैलकी जल्दबाजीके कारण इस गुफामें होता हुआ कुदरतका यह तमाशा जी भरके देखने न पाये। फिर भी; इतनी बात मेरी समझमें आ गई, कि उस विशाल गुफाकी छतके ऊपर पहाड़की चोटीका बरफसे ढंका हुआ भाग था। उसीके गिरते हुए जलसे उस गुफामें यह तिलस्मात तय्यार हो रहा था। हम-लोगोंने स्थिर किया, कि लौटते समय हम इस गुफाको और अच्छी तरह देखेंगे।

जिस राहसे हमलोग इस गुफामें आये थे; उसके ठीक विप-रीत ओर दीवारमें सम्भवतः मिश्री कारीगरोंका बनाया हुआ एक चौखूटा दरवाजा था। इसके सामने पहुंचके गगूलने मानो हमें डरानेके अभिप्रायसे अपनी उसी पिपिहरीजैसी आवाजमें पूछा,—"क्यों, गोरे आदमियो! मौतके कमरेमें चलनेके लिये तय्यार हो?"

गुड। क्यों नहीं, मेरी डट्टो! तुम राह तो दिखाओ।

इसमें सन्देह नहीं है, कि हम सभी डरते थे; फिर भी, आगे बढ़नेपर तय्यार थे। एक बेचारी फौलता मारे डरके कमान गुडके बाजूसे चिमटी जाती थी। सर हेनरीने उस द्वारके अन्दर फैले हुए घोर अन्धकारको कुछ देरतक देखके कहा,—"अलान साहब! यहांका रहस्य तो चक्करदार होता हुआ नजर आता है। फिर भी; बुजुर्गोंको आगे बढ़ना चाहिये। आप देर न कीजिये; बुड्ढी इन्तजार कर रही है।" यह कहके उन्होंने मेरा हाथ पकड़के आहिस्तेसे उस द्वारकी ओर बढ़ा दिया। सर हेनरीकी इस हरकतसे उनके लिये मेरे मनमें जो कुछ आया; इसमें सन्देह नहीं, कि वह आशीर्वाद न था। फिर भी; मैं उस दरवाजेके पास पहुंचके ठिठक गया।

गुड। यारो! गगूल आगे चली जाती है। यहां रुके रहोगे, तो वह बहुत आगे निकल जायेगी।

यह सुनके मैं उस दरवाजेमें घुसा। मेरे साथी पीछे-पीछे चले। कोई बीस कदम आगे बढ़नेपर हमलोगोंने अपनेको एक बड़े ही मनहूस कमरेमें पाया। कमरा कोई चालीस फीट लम्बा; तीस फीट चौड़ा और कोई तीस ही फीट ऊंचा होगा। यह कमरा कुदरतके हाथोंका बना हुआ नहीं; कारीगरोंके हाथोंका बनाया हुआ था। इसमें उस पीछे छोड़े हुए खम्भोंवाले कमरेजैसा उजेला भी न था। यहां उस कमरेसे बहुत अधिक अंधेरा था। इसमें पहुंचनेपर हमें इसके बीचमें पत्थरका एक लम्बा टेबुल दिखाई दिया, जिसके एक किनारे एक बहुत बड़ी सफेद मूरत खड़ी थी और जिसके गिर्दागिर्द आदमीके कद-कामतकी बहुतेरी सफेद मूर्त्तियां बैठी हुई थीं। इसके बाद ही मुझे उस टेबुलके बीचोंबीच एक भूरी चीज बैठी हुई दिखाई दी। इस अव-

सरमें मेरी आंखोंकी चकाचौंध मिटी; मुझे वहांकी चीजें साफ-साफ दिखाई देने लगीं। जैसे ही मैंने देख लिया, कि वहां क्या-क्या चीजें थीं; वैसे ही मेरे छक्के छूट गये। मैं पलटा और बहुत जोरसे उस द्वारकी ओर वापस भागा।

मैं भूत-प्रेत माननेवाला कमजोर तबीयतका आदमी नहीं हूं। उससे पहले मैंने बड़े-बड़े भयानक दृश्य देखे थे। फिर भी; यह बात मैं साफ दिलसे कहता हूं, कि वहांके भयानक दृश्यने मेरी सारी हिम्मत पतली कर दी। और मैं बड़ी तेजीसे भागा। अगर सर हेनरी झपटके मुझे पकड़ न लेते और खींचके वापस न ले जाते, तो मैं वहांसे निश्चय ही निकल भागता। किसी खानिसे निकले हुए हीरोंके ढेरके ढेरका भी लोभ मुझे वहां ठहरा न सकता। किन्तु सर हेनरीकी वज्र मुट्ठी मुझे पकड़े हुई थी और मैं वहांसे भाग न सकता था। दूसरे ही क्षण उनकी भी आंखें वहांके अंधेरेमें काम करने लगीं और उन्होंने वहां जो कुछ देखा, उससे उनके माथेपर पसीना आ गया। उन्होंने मुझे छोड़के अपना पसीना पोंछना आरम्भ किया। गुड साहब गालियोंपर गालियां देने लगे। बेचारी फौलता चीखके गुड साहबकी देहसे चिमट गई। सिर्फ गगूल खड़ी-खड़ी हमारी घबराहट देखके आनन्द लेती और अपनी भयानक हंसी हंसती रही।

बड़ा ही भेतावली दिखावा था। उस पत्थरके लम्बे टेबुलके छोरपर अपनी ठठरीके हाथमें सफेद लम्बा बर्छा लिये हुई स्वयं मौतकी मूर्त्ति बैठी थी। युरोपवाले आदमीकी ठठरीके रूपको यमराजका रूप मानते हैं। मौतकी वह विशाल ठठरी कमसे कम कोई पन्द्रह फीट ऊंची होगी। उसका एक उठा हुआ हाथ बर्छा ताने हुआ था; मानो फेंकके मारा ही चाहती हो। दूसरा हाथ टेबुलपर इसतरह रखा हुआ था; मानो वह टेबुल टेकके उठा

ही चाहती थी। उसकी गर्दन आगे निकल आनेके कारण; उसका भयानक खोखला चेहरा हमारे सामने हो गया था। हमें ऐसा जान पड़ता था, मानो उसकी गड्ढे जैसी आंखें हमारे ऊपर जमी हुई हों और उसकी दांतोंकी पंक्तियोंके बीचका खुला हुआ भयानक मुंह कुछ कहा चाहता हो।

मैं। हे भगवन्। यह क्या लीला है?

गुड। और यह इस टेबुलके किनारे बैठे हुए कौन हैं?

हेनरी। और इस टेबुलके बीचमें वह भूरी चीज क्या है?

गगूल। हा-हा-हा! जो लोग इस मौतके कमरेमें आते हैं; वह अकाल मौतसे मरते हैं। हा-हा-हा; ही-ही-ही! आ, गोरे हाथी! मेरे साथ आ और उसे देख, जिसे तूने लड़ाईमें मारा है।

यह कहके उस चुड़ैलने सर हेनरीके कोटका एक किनारा पकड़ लिया और उन्हें उस टेबुलकी ओर ले चली। हमलोग उन दोनोंके पीछे-पीछे चले। गगूल उस टेबुलके बीचमें रखी हुई उस भूरी चीजके पास जाके ठहर गई। सर हेनरी उस चीजको देखके घबराके पीछे हटे। घबराहटकी बात ही थी। वह भूरी चीज और कुछ नहीं;—ट्वालाकी नङ्गी लाश थी। वह लाश बैठी हुई थी; उसकी गोदमें उसका कटा हुआ सिर रखा हुआ था। हां; एक बात नई दिखाई दी। वह यह, कि ट्वालाकी लाशपर झिल्लीजैसी कोई सफेद चीज चढ़ गई थी, जिससे वह लाश और भी भयङ्कर दिखाई देती थी। वह सफेद चीज क्या थी? ऐसे समय आवाज हुई टप! टप! टप! पानीके कई बूंद छतकी एक सूराखसे आके ट्वालाकी कटी हुई गर्दनपर गिरे और वहांसे उसके सारे बदनपर बह गये। लाशके सामने ही टेबुलमें एक सूराख था; लाशसे बहके आनेवाला पानी उसी सूराखमें समा गया। अब मैं उस झिल्लीका कारण समझ गया। ऊपरसे टपकते हुए पानीके सहारे ट्वालाकी लाश जमाई

जाके बरफजैसी सफेद और चूनेजैसी कठोर बनाई जा रही थी।

उस टेबुलके किनारे पत्थरके बेञ्चपर बैठी हुई उन मूर्त्तियोंको देखके मुझे अपनी इस धारणाका विश्वास हो गया। वह सब भी पहले लाशें ही थीं; किन्तु उसी टपकते हुए पानीके प्रभावसे जमके बरफजैसे रङ्गकी कठोर मूर्त्तियां बन गई थीं। इसतरह कुकुवाने प्राचीनकालसे अपने राजोंकी लाशोंको रक्षित रखते आते थे। वह उन्हें जमा देते थे। नहीं जानता, कि जमानेके लिये उनपर सिवा पानी टपकानेके कुकुवाने और भी कोई प्रक्रिया किया करते थे या नहीं।

उस टेबुलके गिर्द सब मिलाके सत्ताईस राजोंकी मूर्त्तियां बैठी थीं। अन्तिम मूर्त्ति इगनोसीके बापकी थी। मानो राजा मौतके दरबारमें वह सब बैठी हुई थीं। अगर हरेक राजाका शासनकाल पन्द्रह-पन्द्रह वर्षका मान लिया जाये, तो भी कोई सवा चार सौ सालसे, लाशोंको जमाके रक्षित रखनेकी प्रथा, कुकुवानोंमें चली आ रही थी।

लेकिन वह मौतकी मूर्त्ति और भी पुरानी थी। मैं समझता हूं, कि जिन कारीगरोंने बाहरकी वह तीनो मूर्त्तियां बनाई थीं; उन्होंने स्टेलेकटाइट काटके वह मूर्त्ति या ठठरी भी तय्यार की थी। आदमीकी ठठरीका मर्म समझनेवाले कप्तान गुडका कहना था, कि आदमीकी असली ठठरी और उस विशाल ठठरीमें कोई भी फर्क न था।

मेरी समझमें मौतकी वह ठठरी किसी पुराने कारीगरकी अपूर्व कारीगरी थी और उसे पाके कुकुवानोंने अपने राजोंकी लाशोंको भी वहां रखना आरम्भ किया होगा। या यह भी सम्भव है, कि हीरेके खजानेसे चोरों और लुटेरोंको दूर रखनेके लिये

यह मौतकी ठठरी बनाई और वहां बैठाई गई हो। मेरी समझमें इतना ही आता है; आगे जो कुछ समझना हो; उसे विचारशील पाठक आप समझ लें।

ऐसा ही वह मौतका कमरा था।

सत्रहवां बयान।

हीरोंका खजाना।

जिस समय हमलोग अपनी घबराहट दबाके एकबार फिर शान्त हो रहे थे और मौतके कमरेकी विचित्रताओंको ध्यानपूर्वक देख रहे थे; उस समय गगूल एक दूसरे ही धन्देमें लगी हुई थी। इस समय वह अपनी निर्बलता दूर हटाके जवानोंजैसी तेजी और फुरती दिखा रही थी। सबसे पहले वह त्वालाकी लाशके पास पहुंची; उसे उसने ध्यानपूर्वक देखा। इसके बाद उसने टेबुलके किनारेका चक्कर लगाके हरेक मृत कुकुआना-राजसे धीरे-धीरे इसतरह बातें कीं; मानो वह सब जीते हों। इसके भी बाद वह टेबुलकी बगलमें मौतकी ठठरीके पैरोंके नीचे बैठके उसकी पूजा करने लगी। यह देखके हमारी घृणा और क्षोभकी सीमा न रही। वहांके प्रभावमें जोरसे बोलना कठिन था। मैंने गगूलकी पूजामें बाधा देके धीरेसे कहा,—"गगूल! उठ! हमारा समय न गंवा।"

यह सुनते ही गगूल अपनी जगहसे उठी। उसने मेरे पास आके मेरी आंखोंसे आंखें मिलाके पूछा,—"गोरे आदमी! तुझे डर नहीं मालूम होता?"

मैं। ले चल उस खजानेके कमरेमें।

"बहुत अच्छा; बहुत अच्छा!" कहती हुई गगूल मौतकी ठठरीके पीछे पहुंची। वहां उसने मशाल एक किनारे रख दी और वहांकी सङ्गीन दीवारसे टिकके बोली,—"यही उस खजानेका दर्वाजा है।"

मैंने अपने पासकी दियासलाईसे एक बत्ती जलाई। द्वार देखनेके लिये चारो ओर निगाहें दौड़ाईं; किन्तु मुझे वहां सिवा ठोस चट्टानोंके और कुछ भी दिखाई न दिया। गगूलने हंसके कहा,—"यही द्वार है; यही द्वार है!"

मैंने कठोरतासे कहा,—"मुझसे हंसी?"

गगूल। मेरे हंसीके दिन चले गये, गोरे आदमी! यह देख!

उसके एक और उंगली उठानेपर मुझे दिखाई दिया, कि एक बड़ी चट्टान वहांके फर्शसे उठके बहुत ही धीरे-धीरे ऊपरकी किसी खोखली जगहमें समा रही थी। वह उठती हुई चट्टान किसी बड़े दर्वाजेकी लम्बाई-चौड़ाईकी होगी। उसकी ऊंचाई कोई दस फीटकी; चौड़ाई पांच फीटकी और मोटाई कोई चार फीटकी होगी। इसमें सन्देह नहीं, कि उसका वजन कई सौ मनका होगा और वह तराजूके कायदेके अनुसार दीवारके अन्दर छिपे हुए किसी वैसे ही वजनी पत्थरके नीचे झुकनेकी वजह ऊपर उठ रही थी। नहीं जानता, कि किस तरकीबसे वह दर्वाजा उठाया जा सकता था; कारण, गगूल हमें वह तरकीब दिखाया न चाहती थी। फिर भी; वह तरकीब बड़ी ही आसान होगी। कोई लोहेका कील-कांटा दबानेसे तराजूजैसे दूसरे पत्थरका वजन थोड़ा बढ़ जानेके कारण वह नीचे उतरता होगा और यह दर्वाजेका पत्थर ऊपर चढ़ता होगा।

बहुत ही धीरे-धीरे वह विशाल चट्टान उठके ऊपरकी किसी खोखली जगहमें समा गई और अब उसकी जगह एक ऊंचा और चौड़ा दर्वाजा दिखाई दिया। उसे देखके हमलोगोंकी उत्तेजनाकी हद न रही। मेरी सारी देह थर-थर कांपने लगी। क्या सचमुच ही यह दर्वाजा हीरोंके खजानेका ही दर्वाजा था? क्या सचमुच ही उसमें इतने हीरे भरे थे, जो हमलोगोंको दुनियाके सबसे बड़े धनी बना सकते थे? क्या सचमुच ही सिलवेस्ट्राने अपने कागज़में उसी खजानेका हाल लिखा था? दो ही चार मिनट बाद मेरे इन सब सवालोंका जवाब मिलनेको था!

गगूलने उस दर्वाजेमें घुसके कहा,—"आओ! गोरे आदमियो! लेकिन अन्दर आनेसे पहले मेरी बात सुन लो। इस खजानेमें जो चमकीले पत्थर तुम पाओगे, वह उसी गड्ढेसे निकाले गये हैं, जिसे तुम उन तीनों मूर्त्तियोंके सामने देख आये हो। नहीं जानती, कि उन्हें खोदके निकालनेवाले कौन थे। फिर भी; इतना जानती हूं, कि इस खजानेकी खबर दूर-दूरतक पहुंची। देश-विदेशके बहुतेरे आदमियोंने इसमें घुसनेका यत्न किया; किन्तु किसीको भी सफलता न हुई; क्योंकि इस दर्वाजेका हाल कोई भी जान न सका। अन्तमें एक गोरा आदमी शेबा-पहाड़के उसपारसे आया और उस समयके कुकुआना-नरेशने उसका बड़ा आदर-सत्कार किया। मौतके टेबुलके किनारे वह जो पांचवीं मूर्त्ति देखते हो, वह उसी राजाकी है। अन्तमें वह गोरा आदमी इस देशकी एक स्त्रीके साथ यहांतक आया। न जाने कैसे, वह स्त्री, इस दर्वाजेके खोलनेकी तरकीब जानती थी। उस गोरे आदमीने अपने साथकी उस स्त्री सहित इस खजानेमें घुसके अपने भोजनके थैलेमें जवाहरात भरे। खजानेसे निकलते समय उसने एक बड़ा चमकीला पत्थर अपनी मुट्ठीमें दबा लिया।"

इतना कहके गगूल चुप हो गई। मैंने बड़ी ही बेताबीसे पूछा,—"आगे कहो। जोशेका क्या हुआ?"

गगूलने कुछ चौंकके कहा;—"तुम्हें उसका नाम भी मालूम है? आगे नहीं कह सकती, कि क्या हुआ। सिर्फ इतना जानती हूं, कि वह गोरा आदमी बड़ी ही घबराहटके साथ अपना हीरोंका थैला फेंकके इस कोठरीसे भागा। उसके हाथमें सिर्फ वही एक हीरा रह गया, जिसे लेके कुकुआना-राजने अपने माथेपर लटकाया। यह वही हीरा है, जिसे तुमने ट्वालके माथेसे तोड़के इगनोसीको दिया था।"

मैं। तो क्या इस घटनाके बादसे इस कोठरीमें और कोई आदमी नहीं आया?

गगूल। कोई नहीं। नये राजा इसके दर्वाजेतक आते हैं; लेकिन अन्दर नहीं घुसते। क्योंकि यह बात सुनिश्चित है, कि जो इसके अन्दर घुसता है, वह मर जाता है। तुमने इसमें घुसनेवाले उस गोरे आदमीकी लाश पहाड़पर देखी ही होगी। हा—हा—हा!

यह बातें सुनके हम तीनोंके उत्साह ठण्डे पड़ गये। हम एक दूसरेका मुंह देखने लगे।

गगूल। आओ, गोरे आदमियो! अगर मैं सच्ची हूं, तो तुम्हें चमड़ेके थैलेमें भरे हुए हीरे इस खजानेमें मिलेंगे। रह गई मौत; उसे भी तुम जल्द ही देखोगे। हा-हा-हा!

यह कहके वह मशाल लेके उस दर्वाजेके अन्दर चली। हममें कोई भी आगे बढ़ना न चाहता था। अन्तमें कप्तान गुडने दो-चार गालियां बकनेके बाद कहा,—"ओह! मैं उस चुड़ेलके डराने से डर नहीं सकता। कोई चले या न चले; मैं तो उसके पीछे चला।" यह कहके वह उस दर्वाजेमें घुसे। डरसे कांपती हुई

फौलता भी उनके पीछे-पीछे चली । लाचार होके हमलोग भी उन दोनोंके पीछे चले ।

दर्वाजेके अन्दरकी संकरी राह चट्टानोंको काटके बनाई गई थी । एक बड़ी चट्टानसे पीठ लगाये गगूल खड़ी थी और हम-लोगोंकी राह देख रही थी । हमें अपने सामने पाते ही उसने कहा,—"देखो, गोरे आदमियो ! जिन कारीगरोंने यह खजाना बनाया था; वह भी अपना काम छोड़के यहांसे जान लेके भागनेके लिये लाचार हुए थे ।"

हमलोगोंने देखा, कि सचमुच ही वहां राह नीचेसे ऊपरतक चुन देनेके लिये पत्थरकी एक दीवार खड़ी की जा रही । पत्थरके टुकड़ोंसे कोई दो फोट ऊंची दीवार बन भी गई थी । उसके पास ही बहुतेरे पत्थरके टुकड़े और चूना आदि मसाला भी रखा हुआ था । दीवारके पास ही कारीगरोंके छोड़े हुए दीवार बनानेके औज़ार करनी, बसुली आदि पड़े थे, जो आजकलके औजारोंसे मिलते-जुलते थे ।

इस जगह पहुंचके फौलताने साफ़-साफ़ कह दिया,—"मेरा माथा चकरा रहा है । मैं आगे जा नहीं सकती । जबतक आपलोग न लौटेंगे, तबतक मैं यहांसे न हटूंगी ।" हमलोगोंने उसे उस अधबनी दीवारपर बैठा दिया । उसकी बगलमें वह खानेका टोकरा रख दिया । हमलोगोंको विश्वास था, कि हमारे लौटते-लौटते उसके होश-हवास ठिकाने आ जायेंगे ।

उस राहसे कोई पन्द्रह कदम आगे बढ़नेपर हम एकाएक लकड़ीके एक रङ्गीन द्वारके सामने पहुंच गये । उसके पट खुले हुए थे । वहां आनेवाले अन्तिम आदमीको उन्हें बन्द करनेका या तो समय ही न मिला; या वह उन्हें बन्द करना भूल गया था ।

उस लकड़ीके द्वारके अन्दर आगे ही चमड़ेका एक थैला पड़ा हुआ था, जो छोटे-बड़े गोल-गोल पत्थरोंसे भरा हुआ जान पड़ता था। उसे देखते ही गगूलने हँसना आरम्भ किया,—"ही-ही-ही! देखा, गोरे आदमियो! चमकीले पत्थरोंसे भरा हुआ यह वही थैला है, जिसे फेंकके वह गोरा आदमी यहांसे भागा था।"

गुडने उस द्वारमें घुसके वह थैला उठा लिया, जो बड़ा ही वजनी था और उसके अन्दरसे स्फटिकके टकरानेजैसी आवाज आती थी। उन्होंने बहुत ही धीरेसे कहा,—"सचमुच ही इसमें हीरे ही मालूम होते हैं।"

ऐसे समय सर हेनरी गगूलके हाथसे मशाल लेके उस दर्वाजेके अन्दर घुसे और वहांका दृश्य देखनेके लिये उन्होंने अपने हाथकी रोशनी ऊंची की। मैं भी अन्दर गया। मैंने देखा, कि हमलोग हीरोंके खजानेकी सङ्गीन कोठरीके अन्दर खड़े थे।

वह कोठरी दस-दस फीट लम्बी, चौड़ी और ऊंची थी। छीली हुई ठोस चट्टानोंको काटके बनाई गई थी। उसमें एक ओर फर्शसे छततक बड़े-बड़े हाथीदांत चुने हुए थे। उनकी गिनती लगाना कठिन था। फिर भी; वह सब पांच या छः सौसे कम न होंगे और हरेक हाथीदांत लाजवाब होनेकी वजह बड़ा ही कीमती था। इन हाथीदांतों हीसे हमलोग अपनी सारी जिन्दगीके लिये धनी हो सकते थे। शायद इन्हीं हाथीदांतोंसे सुलेमान बादशाहने अपना वह मशहूर हाथीदांतका तख्त बनवाया था।

कोठरीमें दूसरी ओर बीस या पचीस सन्दूक रखे हुए थे। यह सब बहुत बड़े न थे। इनपर गहरा लाल रङ्ग चढ़ा हुआ था। मैंने उत्तेजनासे व्याकुल होके कहा,—"हीरे! हीरे! रोशनी इधर लाइये!"

सर हेनरी मशाल लिये हुए उन सन्दूकोंके पास जा खड़े हुए। पहले सन्दूकका ढकना टूटा हुआ था। जान पड़ता था, कि जोशेने उसे तोड़ा था। मैंने अपना हाथ ढकनेके अन्दर डालके मुट्ठी भरके कोई चीज निकाल ली। रोशनीमें दिखाई दिया, कि उस सन्दूकमें हीरे नहीं; विचित्र ढङ्गकी बहुत बड़ी-बड़ी अशरफियां थीं। उनपर 'हिब्रू' अक्षरोंसे मिलते-जुलते अक्षरोंमें कुछ छपा हुआ था।

मैंने उन अशरफियोंको उसी सन्दूकमें छोड़के कहा,—"अशरफियां ही सही। खाली हाथ तो यहांसे न लौटेंगे? इन सन्दूकोंमें हजारों अशरफियां भरी हुई हैं। जान पड़ता है, कि कारीगरोंको मजदूरी देनेके लिये यह सब यहां लाई गई थीं।"

गुड। मैं समझता हूं, कि हीरे जोशेने उस थैलेमें भर लिये और यह अशरफियां ज्योंकी त्यों छोड़ दीं।

गगूलने हमारी निगाहोंसे हमारे मनका भाव पहचानके कहा,—"घबराओ नहीं, गोरे आदमियो! उस अंधेरे कोनेमें जाके देखो। वहां तुम्हें पत्थरके तीन सन्दूक मिलेंगे। इनमें एक सन्दूक खुला हुआ है; बाकी दो सन्दूकोंपर मुहर लगी हुई है।"

मैं। लेकिन तूने तो कहा था, कि उस गोरे आदमीके बाद यहां कोई आया ही नहीं; फिर तूने इन सन्दूकोंका हाल कैसे जाना?

गगूल। गोरे आदमी! हर बातके जाननेका यत्न न कर। क्या तू समझता है, कि तेरी तरह मैं भी सिर्फ चेहरा देख सकती हूं; दिल देख नहीं सकती? हा-हा-हा!

मैं। आइये, सर हेनरी! हमलोग वह कोना देखें!

हम दोनोंके पहुंचनेसे पहले कप्तान गुड कूदके वहां पहुंचे और चीखके बोले,—"ओहो! यह कोना तो बड़े तमाशेका कोना है।"

हमलोगोंने वहां पहुंचके देखा, कि वह कोना एक तरहकी अलमारीके आकारका बना हुआ था। ऊपर एक छोटी मेहराब थी। उस अलमारीमें दीवारसे लगाके तीन पत्थरके सन्दूक रखे थे। हरेक सन्दूक कोई दो वर्ग फीटका था। दो सन्दूकोंपर पत्थरके ढकने बैठे हुए थे। तीसरे सन्दूका ढकना उसकी बगलसे लगाके रखा हुआ था। सन्दूकका मुंह खुला हुआ था।

"देखो! देखो!" कहके गुडने सर हेनरीके हाथका मशाल इसतरह ऊंचा किया, कि उस खुले हुए सन्दूकमें रोशनी पड़े। एक क्षणतक हमें उसमें केवल चमक दिखाई दी और कुछ भी दिखाई न दिया। जब हमारी निगाहें स्थिर हुईं, तो हमें दिखाई दिया, कि वह सन्दूक तीन चौथाई, बड़े-बड़े बेतराशे हीरोंसे भरा हुआ था। मैंने झुकके कुछ हीरे निकाल लिये। इसमें सन्देह नहीं, कि वह सब हीरे थे और बड़े ही दामी हीरे थे। मैंने वह हीरे धीरेसे उस सन्दूकमें रख दिये। उस समय मेरी छाती धड़क रही थी; माथा चकरा रहा था।

अन्तमें मेरे मुंहसे बात निकली,—"इतना धन! इतनी दौलत! दुनियामें हमसे बड़ा अमीर और कौन हो सकता है?"

गुड। जरा विलायत तो लौटने दो। सारे युरोपके दरबारोंको हीरोंसे न भर दूं, तो मेरा नाम गुड नहीं।

सर हेनरी। पहले इन हीरोंको युरोपतक पहुंचा तो लीजिये!

इसके बाद बहुत देरतक हमलोगोंके मुंहसे कोई बात न निकली। धड़कती हुई छाती और फटी हुई आंखोंसे हम एक दूसरेके मुंह और सन्दूकमें भरे हुए उन हीरोंकी चमक देखते रहे। अन्तमें हमारे पीछे खड़ी होके हमारा तमाशा देखनेवाली गगूल अपनी वही भयानक हँसी हँसने लगी,—"हा-हा-हा! लो—लो! जिन चमकीले पत्थरोंके लिये तुम मरे जाते थे; उन्हें जी भरके

हो! अबसे रोटियोंके बदले उन्हींको खाओ; पानीके बदले उन्हींको पिओ। हा-हा-हा!"

उसकी यह बेहूदी बात सुनके मैं हंस पड़ा। मेरी हंसी सुनके मेरे साथी भी हँसने लगे। हमारी हँसीसे वह कमरा और उस कमरेके आगेकी वह राह गूंजने लगी। हीरे; सोना; हाथी-दांत;—करोड़ोंकी सम्पत्ति हमारे पैरोंतले लोट रही थी। हमारे आनन्दकी कोई सीमा न थी!

अन्तमें हमारे आनन्दका वह वेग रुका। गगूलने कहा,—"बाकीके दोनो सन्दूक भी खोल डालो। उसमें भी चमकीले पत्थर ही भरे हुए हैं। इसके बाद भरो;—भरो! अपनी जेबोंमें भरो; थैलोंमें भरो; जहांतक तुमसे भरते बने; वहांतक भरो! हा-हा-हा!"

इसतरह उभारे जानेपर हमलोग उन दोनो बन्द सन्दूकोंके खोलनेपर उद्यत हुये। उनके ढकने खोलनेपर हमें दिखाई दिया, कि दोनों ही सन्दूक हीरोंसे लबालब भरे हुए थे। उन्हें अभागा जोशे खोल न सका था। उनमें कितने ही हीरे कुछ पीले पानीके भी थे। वह सब हंसके अण्डेजैसे बड़े थे। हम मायाके इन्हीं खिलोनोंके निरखनेमें लगे रहे। हमें इन खिलोनोंसे भी अधिक जरूरी गगूलके देखनेकी सुध न रही। हम यह देख न सके, कि अपना अन्तिम भयानक ताना देनेके बाद वह कब चुपकेसे, सांपकी तरह उस दर्वाजेके अन्दरसे बाहर निकल गई!

*   *   *   *   *

यह क्या! जिस राहसे हमलोग आये थे; वह राह चीखपर चीख होनेकी वजह प्रतिध्वनित क्यों होने लगी। यह चीख फौल-ताकी थी। उसने चीखके कहा,—"बौगवान! बौगवान! दौड़ो! दौड़ो पत्थरका द्वार बन्द हो रहा है।"

गुड। चलो!-चलो—फौलता—

इतनेमें फौलताने फिर चीखके कहा,—"दौड़ो ! दौड़ो! मैं मरी !"

उस समय हमलोग दौड़ते हुए फौलता हीकी ओर जा रहे थे। मशालकी रोशनीमें हमें दिखाई दिया, कि वह द्वारको बन्द करनेवाली चट्टान बहुत कुछ नीचे आ गई थी। द्वारका निचला भाग कोई तीन फीट खुला रह गया था। इस बन्द होते हुए द्वारके समीप फौलता और गगूलमें हाथापाई हो रही थी। फौलताकी देहसे खूनका फव्वारा निकल रहा था; फिर भी, वह गगूलको छोड़ नहीं रही थी। गगूल भी शेरनीकी तरह फौलतासे लड़ रही थी। वह देखो! गगूलकी विजय हुई। फौलता गिरी और गगूल जमीनपर लेटके सांपकी तरह सरकके उस बन्द होते हुए द्वारके नीचेसे निकल जानेपर तय्यार हुई। लेकिन कहां जा सकती थी? द्वार बहुत कुछ बन्द हो चुका था। जैसे ही रेंगती हुई गगूल उसके नीचे पहुंची; वैसे ही द्वारके पत्थरका बोझ उसके ऊपर आया। गगूल उस गिरते हुए पत्थरके नीचे दबके फँस गई। अपनी बेबसी और उतरते हुए पत्थरके दबावसे घबराके वह बहुत जोरसे चीख उठी; किन्तु उपाय क्या था। वह सैकड़ों मनका बोझ धीरे-धीरे नीचे उतरने लगा; गगूल भी छटपटा-छटपटाके पिसने और चीखपर चीख मारने लगी। अब हम-लोगोंको उसकी पुरानी हड्डियोंके चूर-चूर होनेकी आवाज सुनाई देने लगी। उस समय गगूलके मुंहसे ऐसी भयानक चीखें निकलने लगीं; जैसी उससे पहले हमलोगोंने कभी नहीं सुनी थीं। अन्तमें दलदलमें कोई बड़ा पत्थर फेंकनेजैसा एक शब्द हुआ और वह विशाल पत्थर द्वारके बीच बैठ गया। अभागी गगूल सदाके लिये चुप हो गई। यह सारी घटना हमलोगोंके वहां पहुंचते-पहुंचते कोई चार पलमें हो गई। हमलोगोंने वहां

पहुंचते ही उस बन्द होनेवाली चट्टानपर धक्केपर धक्के लगाये; किन्तु वह टससे मस न हुई।

अब हमलोगोंने फौलताकी ओर ध्यान दिया। गगूलने उस बेचारीकी छातीमें छुरी घुसेड़ दी थी; इसलिये उसके बचनेकी आशा न थी। हमें अपने पास पाके उसने बड़ी कठिनतासे कहना आरम्भ किया,—"चन्द्रलोकके देवताओ! मैं मरती हूं। मेरा सर चकरा रहा था; मैं आंखें बन्द किये और सर पकड़े हुए बैठी थी। न जाने कब गगूल मेरे सामनेसे निकलके बाहर गई और उसने द्वारके पत्थरको नीचे गिराना आरम्भ किया। इसके बाद वह गिरते हुए द्वारके नीचेसे घुसके यहां आई; अब मेरी आंखें खुलीं और मैं चिल्लाई। मेरे चिल्लाते ही उसने मेरी छातीमें छुरी घुसेड़ दी। मैं मरती हूं, बौगवान!"

बेचारे गुड क्या कर सकते थे। वह 'हाय-हाय' करते हुए फौलताके पास बैठके लगे उसके हाथ-पैर सुहलाने। कुछ देर बाद फौलता फिर बोली,—"बौगवान!—बौगवान! तुम कहां हो? तुम्हारे साथी वह शिकारी साहब कहां हैं? हाय! मेरी आंखोंमें अंधेरा छा रहा है! मैं देख नहीं सकती हूं!"

मैं। फौलता! मैं तुम्हारे पास ही खड़ा हूं।

फौलता। तो मेरे साहब! मैं मरनेसे पहले बौगवानसे जो कुछ कहा चाहती हूं; उसे उन्हें सुना दीजिये। वह हमारी भाषा समझते हैं; लेकिन अच्छी तरहसे नहीं समझते।

मैं। ऐसा ही होगा।

फौलता। बौगवानसे कह दो, कि मैं उन्हें जी-जानसे प्यार करती हूं और मरनेसे मुझे तकलीफ नहीं होती; आराम मिल

रहा है। क्योंकि मुझे मालूम है, कि मुझ काली स्त्री और उस गोरे आदमीके बीच विवाह हो नहीं सकता!

ज़रा दम लेनेके बाद फौलता फिर बोली,—"कह दो, कि जिस दिनसे मैंने उन्हें देखा; उसी दिनसे मैं समझती थी, कि इस प्यारका नतीजा मौत है। अन्तमें मेरी मौत ही हुई। मेरा माथा; हाथ-पैर सब ठण्डे हो रहे हैं; फिर भी, प्रेमसे भरा हुआ मेरा दिल ठण्डा नहीं हुआ है। कह दो, कि अगर मैं उनसे इस जन्ममें नहीं मिल सकी, तो अगले जन्ममें जरूर मिलूंगी। नहीं—नहीं और कुछ न कहो; सिर्फ इतना कह दो, कि मैं उन्हें प्यार—प्यार! आह—आह! भगवान! आह!"

गुड फौलताका हाथ छोड़के उठ खड़े हुए। उनकी दोनो आंखोंसे आंसू बह रहे थे। बड़ी कठिनतासे उन्होंने केवल इतना कहा,—"मर गई!"

हेनरी। लेकिन, भाई! इसके लिये तुम इतना दुःखी क्यों होते हो?

गुड। क्या?

हेनरी। मेरे कहनेका मतलब यह है, कि जहां फौलता गई है; वहीं जानेके लिये हमलोग भी तय्यार बैठे हैं। भलेआदमी! देखते नहीं, कि हमलोग जीते जी इस सुरङ्गकी कब्रमें गाड़ दिये गये हैं?

अभीतक हमलोग फौलताकी मौतके दुःखमें अपनी दशा भूले हुए थे; किन्तु सर हेनरीकी यह बात सुनते ही हमें अपनी भी भयानक मौत सामने दिखाई देने लगी। सर हेनरीने हमें सोतेसे जगा दिया। वह विशाल चट्टान शायद सदाके लिये उस द्वारमें बैठ गई; क्योंकि उसको उठानेकी हिकमत जिसे मालूम थी; वह उसी चट्टानके बोझसे पिसके सुरमा हो चुकी थी। वह चट्टान सिवा

नये ढङ्गकी 'डाइनामाइट' बारूदके उड़ न सकती थी। सबसे बड़ी कठिनता यह थी, कि उस चट्टानके उठानेका कील-कांटा, उस मौतके कमरेमें था और हमलोग उसके बाहर खजानेकी कोठरीकी राहमें बन्द थे।

मौतके डरसे सूखके हमलोग फौलताकी लाशके पास कुछ देरतक खड़े रहे। हमारी सारी मर्दी हमें छोड़के भाग गई थी। भूख और प्यासकी धीमी मौतके डरसे हमपर सन्नाटा छा गया था। चुड़ैल गगूलने पहले हीसे हमारे फंसानेके लिये यह जाल तय्यार कर रखा था। वह चाहती थी, कि हम तीनों गोरे आदमी हीरोंकी कोठरीमें भूख और प्यासकी धीमी मौतसे मरें। उसका वह हीरे खाने और पीनेका ताना अब मेरी समझमें आया। जान पड़ता है, कि बेचारे जोसेके साथ भी ऐसी ही दगा की गई थी और वह हीरेका थैला छोड़के अपनी जान सलामत लेके भागा था।

सर हेनरीने भर्राई हुई आवाजमें कहा,—"खड़े रहनेसे काम न चलेगा। मशाल बहुत जल्द बुझ जायेगी। उसके प्रकाशमें हमें इस चट्टानके उठानेका कील-कांटा ढूंढना चाहिये।"

मैं। इस बातका विश्वास रखिये, कि आप उसे इस ओर न पायेंगे। अगर वह कांटा यहीं होता, तो गगूल गिरती हुई चट्टानके नीचेसे निकल जानेका यत्न न करती।

सर हेनरीने कठोरताकी हंसी हँसके कहा,—"गगूलको अपनी करनीका फल हाथों-हाथ मिल गया। लेकिन उसकी मौतसे कहीं भयानक मौत हमलोगोंके सामने है। जब इस चट्टानको हम उठा नहीं सकते, तो आइये खजानेकी कोठरीकी ही ओर चलें।"

जिस समय हम वह अधबनी दीवार पार करने लगे; उस समय मेरी निगाह खानेके टोकरेपर पड़ी। बेचारी फौलता उसे उठाके लाई थी। मैं उस टोकरेको उठाके अपने साथ उस लानती

खजानेकी कोठरीमें लाया। यही कोठरी हमारी कब्र बननेको थी। इसके बाद हमलोग फौलताकी लाश बड़े ही हलके हाथोंसे उठा लाये। अशरफियोंके सन्दूकके आगे उसे आखिरी जगह मिला। इसके बाद हमलोग हीरोंसे भरे हुए उन पत्थरके सन्दूकोंसे पीठ लगाके बैठ गये।

हेनरी। अब हमलोगोंको थोड़ा-थोड़ा खाना खा लेना चाहिये। ऐसी कोशिश हो, जिससे यह खाना जल्द खतम न हो।

लेकिन हमारे टोकरेमें खाना था कहां? फौलता हमलोगोंके सिर्फ एक वक्तका खाना लाई थी। खूब किफायत करनेपर भी हम उस खानेको दो दिनसे ज्यादा चला न सकते थे। कुशल इतनी ही थी, कि फौलता सूखे हुए मांसके साथ-साथ एक काठके पात्रमें थोड़ासा पीनेका पानी भी लेती आई थी।

खाना चुना जानेपर सर हेनरीने कहा,—"भाइयो! यह खाना खाके मरनेकी तय्यारी करो।" हममें हरेकने कुछ निवाले मांसके खाये और दो-दो घूंट पानी पिया। खानेसे पहले हमें भूख न मालूम होती थी; लेकिन खाना खाते ही हममें एक नया बल आ गया। इसके बाद ही हमलोगोंने कोई चोर-दरवाजा पानेकी आशासे उस कोठरीका कोना-कोना देखना और ठोंकना आरम्भ किया।

किन्तु इस यत्नका कोई फल न हुआ। खजानेमें चोर-दर-वाजे बनाये नहीं जाते। उधर वह मशाल भी धुंदली हुई। अब वह बुझने लगी!

हेनरी। अलान साहब! देखिये, तो आपकी घड़ीमें क्या बजा है?

मैंने अपनी घड़ी निकालके देखी। उस समय छः बजे थे। हमलोग दिन ग्यारह बजे उस गुफामें घुसे थे। मैंने कहा,—"इन-

फारूस हमें यों न छोड़ेगा। अगर आज रातको हमलोग वापस न लौटेंगे, तो सवेरेसे ही वह हमारी ढूंडाई शुरू करेगा।

हेनरी। इससे हमारा क्या फायदा होगा? वह उस पत्थरके दर्वाजे और उसके खोलनेकी तरकीबको क्या जाने? सिवा गगूलके और कोई भी उसका हाल जानता न था। फिर; अगर इनफारूस उस पत्थरके द्वारको पा भी गया, तो वह उसे तोड़ नहीं सकता। चार या पांच फीट चौड़ी चट्टानको सारी कुकुवाना फौज भी मिलके तोड़ नहीं सकती। दोस्तो! इस समय सिवा प्रभुको यादके हमारे लिये और कोई भी उपाय नहीं। इस खजानेके लिये बहुतेरे लोगोंने अपनी जानें दी हैं; हमलोगोंकी भी गिनती उन्हींमें होगी।

मशाल और भी धीमा हुआ। इसके बाद ही वह बड़े वेगसे जल उठा। मैंने उसके प्रकाशमें उस कोठरीमें रखे हुए हाथीदांत देखे; फौलताकी लाश देखी; हीरोंसे भरा हुआ थैला देखा; हीरोंकी धुंदली चमक देखी; और भूख-प्यासकी मौतका इन्तज़ार करते हुए अपने दोनो साथियोंके सूखे हुए चेहरे देखे!

इसके बाद ही मशालकी ज्योति घटी और मिट गई।
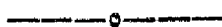
अट्ठारहवां बयान।

आशा छूटी।

वह डरावनी रात जिस तकलीफसे कटी; उसका पूरा हाल लिखना कठिन है। कुशल इतनी ही थी, कि उस यमराजको दाढ़में भी हमारे थके हुए शरीर रह-रहके अपना धर्म्म पालन करते रहे; हमें समय-समयपर नींद आती रही। किन्तु अधिक

सोना कठिन था। उस भयानक सन्नाटे और सङ्गीन कोठरीमें मौतकी तलवार हम तीनोंके माथेपर झूल रही थी। दुनियाके पर्देपर भी सन्नाटा मिलता है; लेकिन वह किसी न किसी तरहकी आवाजके होनेसे टूटता रहता है। लेकिन यहांका सन्नाटा अटल था—अचल था। हमलोग एक पहाड़की बरफसे ढकी हुई चोटीके पेटमें गड़े हुए थे। हमारे ऊपर उस चोटीसे टकराती हुई हवा बह रही होगी; लेकिन उसकी हलकीसे भी हलकी आवाज वहांतक पहुंच न रही थी। एक विशाल चट्टानने हमें मौतके डरावने कमरेसे भी जुदा कर दिया था। सारी दुनियाकी तोपोंके एकसाथ दगनेपर भी उनकी आवाज हमारी उस कब्रतक पहुंच न सकती थी। हमलोग कहनेको जीते थे; लेकिन दुनियासे मर चुके थे!

किस्मतका खेल देखिये! उस समय हमारी चारों ओर इतना धन जमा था, कि उससे हम एक बादशाहत खरीद सकते थे; लेकिन उसी अटूट धनको हम अपने छुटकारेके बदलेमें खुशी-खुशी दे देनेपर तय्यार थे। छुटकारेकी कौन कहे; कुछ ही घण्टोंके बाद हम उस समूचे धनको एक ग्रास भोजन और एक घूंट पानीके बदलेमें दे सकते थे। इसमें शक नहीं, कि आदमी जिस धनके लिये जीवनभर यत्न करता है; अन्तकालमें वह धन उसके किसी भी काम नहीं आता।

सवेरा होनेपर सर हेनरीने बड़ी ही भयानक आवाजमें कहा,—"गुड! तुम्हारे दियासलाईके बकसमें अब कितनी सलाइयां रह गई हैं?"

गुड। आठ!

हेनरी। तो एक सलाई जलाओ; समय देखा जाये।

उनकी सलाईकी रोशनीकी चकाचौंधने हमलोगोंको कुछ क्षणके लिये अन्धा बना दिया। मेरी घड़ीमें सवेरेके पांच बजे थे।

हमारे कैदखानेके माथेपर सुन्दर सवेरेका गुलाबी उजेला फैल रहा होगा; हवाके मन्द-मन्द झोंके जङ्गलके ताजा खिले हुए फूलोंको बार-बार चूम रहे होंगे।

मैंने कहा,—"हमलोगोंको कुछ खा-पीके ताकतवर तो हो जाना चाहिये।"

गुड। व्यर्थ है, खाना-पीना। अब तो भूखे-प्यासे रहके मर जाना ही भला जान पड़ता है।

हेनरी। लेकिन जबतक सांस, तबतक आस!

हमलोगोंके थोड़ा-थोड़ा खा-पी चुकनेपर सर हेनरीने कहा, कि इस समय हमें उस चट्टानके दर्वाजेके पास पहुंचके खूब शोर करना चाहिये; शायद मौतके कमरेमें हमें ढूंढनेवालोंको वह आवाज सुनाई दे। इसपर कप्तान गुडने उस द्वारके पास पहुंचके वह शोर किया, कि सारी सुरङ्ग और वह कोठरी हिल गई; लेकिन उसका कोई फल न हुआ। हां; यह हुआ, कि चिल्लाते-चिल्लाते उन्हें बड़ी प्यास मालूम हुई और वह बहुतसा पानी पी गये। पानी खर्च हो जानेके डरसे हमलोगोंने चिल्लाना छोड़ दिया।

हमलोग फिर उन्हीं तीनों हीरोंके सन्दूकोंसे लगके बैठ गये। उस समय मेरा जी भर आया। मैं सर हेनरीके चौड़े कन्धेपर सिर रखके रो दिया। सर हेनरीकी दूसरी बगल बैठे हुए कप्तान गुडने भी ऐसा ही किया। किन्तु इसके बाद ही उन्हें अपने रोनेपर लज्जा आई और वह लगे अपनी इस हरकतपर अपने हीको गालियां देने।

उस समय सर हेनरीकी सच्ची दृढ़ता हमें दिखाई दी। वह अपनी दुर्दशाको भूलके लगे हमें दिलासा देने। पहले उन्होंने उन लोगोंकी कहानियां सुनाईं, जो बड़ीसे बड़ी मुसीबतमें पड़के भी अन्तमें बच गये थे। उन कहानियोंसे हमारा सन्तोष न होनेपर

उन्होंने कहा, कि मरना तो है ही; फिर मौतको देखके घबरानेकी क्या जरूरत है। अन्तमें उन्होंने कहा, कि भगवान्‌का नाम विपद्-भञ्जन है; आओ हम लोग उनसे प्रार्थना करें, कि वह हमारी यह महाविपद् दूर करें।

सर हेनरीका चरित्र एक ओर फूलकी तरह कोमल, तो दूसरी ओर वज्रकी तरह कठोर भी था।

इन्हीं बातोंमें दिन बीता; रात आई। या यह कहनेकी जरूरत क्या है; क्योंकि उस जगह रात ही रात थी; दिनकी रोशनीका नामोनिशान भी न था। मैंने दियासलाईकी रोशनीमें देखा, कि मेरी घड़ीमें सात बजे थे। एकबार फिर हमलोग खा-पीके ताजादम हुए।

ऐसे समय मेरे मनमें एक नई बात आई। मैंने कहा,—"साहबो! जब यह जगह चारो तरफसे बन्द है, तो हमें ताजा हवा कहांसे मिल रही है? आपलोग भी देखें, कि यहांकी हवा गाढ़ी है सही; लेकिन उसमें ताजगी है।"

मेरी बात सुनते ही कप्तान गुड उछल पड़े। उन्होंने कहा,—"वाह, अलान साहब! वाह! अच्छी बात पैदा की आपने। ताजा हवा उस पत्थरके दर्वाजेसे आ नहीं सकती; क्योंकि उसमें जरा भी सन्धि नहीं। उसके आनेकी जरूर कोई राह होगी। अगर ताजा हवा न आती होती, तो अबतक हमलोगोंके दम घुट गये होते। पता लगाना चाहिये।"

इस जरासी आशाने हमलोगोंकी दशा बदल दी। दूसरे ही क्षण हमलोग घुटनोंके बल रेंगते हुए अपनी उंगलियोंसे, आती हुई हवाकी जगह ढूंढने लगे। एकाएक मेरा हाथ किसी ठण्डी चीजपर जा पड़ा। यह और कुछ नहीं; बेचारी फौलताकी लाशका चेहरा था।

कोई एक घण्टेतक हमलोग इसी काममें लगे रहे। अन्तमें मैंने और सर हेनरीने हार मानके हवाके स्थानका ढूंढना छोड़ दिया।

सच तो यह है, कि टटोलते-टटोलते हमारी उंगलियां और दीवारों तथा सन्दूकोंसे टकराते-टकराते हमारे सिर बहुत ही चुटीले हो गये थे। लेकिन गुडने हार न मानी। उन्होंने कहा, कि चुपचाप बैठे रहनेके बदले वह जगह क्यों न ढूंढी जाये।

अन्तमें उन्होंने दबी हुई आवाजमें कहा,—"जरा यहां तो आना, भाइयो!" उनकी यह बात सुनते ही हम उनके पास झपटके पहुंचे।

गुड। अलान साहब! जरा इस जगह हाथ लगाइये; आपको कुछ मालूम होता है?

मैं। मैं समझता हूं, कि यहांसे हवा आ रही है।

गुड। अब जरा ध्यान देके सुनिये!

यह कहके उन्होंने उस जगह दो-चार लातें कस-कसके जमाई। नीचेसे पोली आवाज आई। हमलोगोंके दिल आशासे उछल पड़े।

हमारे पास तीन दियासलाइयां बच गई थीं। मैंने कांपते हुए हाथसे एक दियासलाई जलाई। यह उस कोठरीका पिछला भाग था और यही वजह थी, कि पहलेकी ढूंढाईमें हमलोग उस जगहको पा न सके थे। दियासलाईकी रोशनी होनेपर हमने उस जगहको अच्छी तरहसे देखा। उस कोठरीके ठोस पथरीले फर्शपर वहां पत्थरका एक टुकड़ा जड़ा हुआ था। इतना ही नहीं, उस पत्थरके टुकड़ेके बीचोंबीच पत्थर हीका एक कड़ा भी बना था। यह सब देखके हमलोग सन्नाटेमें आ गये। हमारे मुंहसे बात न निकली। उस समय प्रबल आशासे धड़कते हुए हमारे दिल मुंहसे बात निकलने न देते थे। गुडके पास एक ऐसी छुरी थी, जिसके पीछे घोड़ेकी सुमके अन्दर घुसनेवाले कङ्कड़-पत्थर निकालनेका अङ्कुश बना हुआ था। उन्होंने वह अङ्कुश खोलके पहले उस

कड़ेके गिर्दका कूड़ा-करकट साफ किया। इसके बाद उन्होंने वह अङ्कुश उस कड़ेमें अटकाके उसे उठानेका यत्न आरम्भ किया। कुछ ही देरमें वह कड़ा हिला। वह अगर पत्थरका होनेके बदले लोहेका होता, तो कई सदियोंका मोर्चा उसे समूचा चाट गया होता। कुछ ही देरकी मिहनतमें वह कड़ा सीधा हो गया। इतना कर चुकनेपर गुड साहब चढ़ाके आस्तीन और लगाके दोनो हाथोंको उंगलियां उस कड़ेके अन्दर लगे जोरपर जोर मारके वह पत्थरका टुकड़ा उभारने। किन्तु उनके लाख-लाख जोर मारनेपर भी वह अपनी जगहसे टससे मस न हुआ।

वह टुकड़ा कोठरीके कोनेमें था। उस जगह दो आदमी एक साथ खड़े होके जोर न लगा सकते थे। इसलिये मैंने गुडको वहांसे हटाके खुद जोर लगाना आरम्भ किया। जोर लगाते-लगाते मैं पसीने-पसीने हो गया; लेकिन वह टुकड़ा अपनी जगहसे हिलनेको था न हिला।

अन्तमें सर हेनरीके भी जोर लगानेका कोई फल न हुआ।

यह देखके कप्तान गुडने अपने चाकूसे उस टुकड़ेके चारो तरफकी वह सन्धि साफ की, जिससे होके हवा आती थी। यह सफाई समाप्त होनेपर आपने कहा,—"अब हेनरी! लगाओ अपना भरपूर जोर; क्योंकि दो आदमियोंके बराबर तुम अकेले हो। या जरा ठहर जाओ।" यह कहके आपने अपने गलेसे एक बड़ा ही सुन्दर और साफ रेशमी रूमाल निकाला और उसे उस कड़ेमे पिन्हाके उसके दोनो छोर सर हेनरीकी मुट्ठीमें दे दिये; साथ ही मुझसे बोले,—"अलान साहब! जरा आप सर हेनरीके पीछे जाके दोनो हाथोंसे उनकी कमर तो थाम्ह लीजिये और जैसे ही मैं 'हां' कहूं; वैसे ही सर हेनरी इस पत्थरके टुकड़ेको खींचें और आप सर हेनरीकी कमर अपनी ओर खींचें। आपकी कमर मैं खींचूंगा।"

कप्तान गुडकी 'हाँ'पर हमलोगोंने किचकिचाके अपना मिला हुआ ज़ोर लगाया। सर हेनरीने हांपते हुए कहा,—"आहिस्ते! पत्थर उभर रहा है।" इसके बाद ही हमें उनकी चौड़ी पीठकी नसें चटाचट बोलती हुई सुनाई दीं। इसके भी बाद ही दो पत्थरोंके आपसमें रगड़ खानेकी आवाज हुई और एकाएक तेज हवाके झोंके कोठरीमें आने लगे। साथ ही हम तीनों धड़ाधड़ चित गिरे। सबके नीचे गुड; उनके ऊपर मैं; मेरे ऊपर सर हेनरी और सर हेनरीके भी ऊपर वह पत्थरका टुकड़ा गिरा। सर हेनरीकी भुजाओंकी महाशक्तिसे यह मुश्किल आसान हुई!

जैसे ही हमलोग उठके दम लेने लायक हुए; वैसे ही सर हेनरीने कहा,—"अलान साहब! ज़रा सावधानीके साथ दियासलाई तो जलाइये।"

मैंने दियासलाई जलाके उसकी रोशनीमें देखा, कि उस हटे हुए पत्थरके टुकड़ेके नीचेसे एक चौखूटा जमीन्दोज दर्वाजा निकल आया था और उस दर्वाजेके अन्दर नीचे जानेवाली किसी सीढ़ीका पहला डण्डा दिखाई दे रहा था।

गुड। अब क्या करना चाहिये?

मैं। भगवान्का नाम लेके इस सीढ़ीसे उतरना चाहिये।

हेनरी। लेकिन इससे भी पहले हमें वह बचा हुआ मांस और पानी साथ ले लेना चाहिये।

मैंने जाके खाना और पानी उठाया। उन्हें लेके लौटते समय मेरे मनमें एक विचार आया। गत चौबीस घण्टेसे हमलोग हीरोंको बिलकुल ही भूले हुए थे। सच तो यह है, कि उनका ध्यान मनमें आते ही हमारी छाती जल उठती थी; क्योंकि उन्हींके लिये हम इस मुसीबतमें फंसे थे। किन्तु इस समय मेरे मनमें आया, कि कुछ हीरे मैं अपनी जेबोंमें क्यों न भर लूं: शायद

हमलोगोंको छुटकारा मिल ही जाये। यह सोचके मैंने हीरोंके पहले सन्दूकसे हीरे निकाल-निकालके अपने पुराने शिकारी कोटकी जेबोंको ठूस-ठूसके भर लिया। अन्तमें दो मुट्ठी बड़े-बड़े हीरे उस तीसरे सन्दूकसे भी निकालके अपनी जेबमें ठूस लिये।

इतना कर चुकनेपर मैंने अपने साथियोंको आवाज दी,—"क्यों साहबो! कुछ हीरे भी साथ क्यों नहीं लेते चलते? मैंने तो अपनी जेबें भर लीं!"

सर हेनरी। हटाइये इस झगड़ेको। यहां जानकी पड़ी है और आप हीरोंके पीछे पड़े हैं।

कप्तान गुडने कोई जवाब ही न दिया। मैं समझता हूं, कि उस समय वह अभागी फौलताकी लाशसे अन्तिम विदा ले रहे थे। आराममें बैठके यह उपन्यास पढ़नेवाले हमारे पाठकोंको हमारे हीरोंके छोड़नेकी बात खटक सकती है; किन्तु मुझे विश्वास है, कि हमलोगोंकी तरह अगर वह लोग भी उस भयानक स्थानमें चौबीस घण्टे नाममात्रके खाने और पानीके साथ बन्द रहते; अगर वह लोग भी वह भयानक स्थान छोड़के पातालकी ओर जाते हुए एक अंधेरे कुंएमें उतरनेपर तय्यार होते; तो हमारी तरह वह भी हीरोंकी परवा न करते। प्राण-सङ्कट आनेपर आदमी दुनियाकी बहुमूल्यसे भी बहुमूल्य चीजकी परवा किया नहीं करता। रह गया मैं। जङ्गलोंमें जिन्दगी काटनेके कारण नौजवानी हीसे मुझे जरूरी चीजोंको अपने साथ ले लेनेका अभ्यास हो गया था; इसी अभ्यासके कारण मैंने वह हीरे ले लिये; नहीं तो हेनरी और गुडकी तरह मैं भी उन्हें छोड़ देता।

इस अवसरमें सर हेनरी उस ज़मीन्दोज दर्वाजेकी पहली सीढ़ीपर जा खड़े हुए। उन्होंने वहींसे आवाज दी,—"आइये, क्वाटर्मेन साहब! मैं आगे चलता हूं।"

मैं। हर कदम संभालके रखियेगा। कहीं ऐसा न हो, कि राहमें कोई बड़ा गड्ढा हो; और आप उसमें जा पड़ें।

हेनरी। मैं तो समझता हूं, कि इस सीढ़ीके बाद हमें कोई दूसरा कमरा मिलेगा।

यह कहके वह हर डण्डेको गिनते हुए नीचे उतरने लगे। पन्द्रहवें डण्डेपर पहुंचके वह ठहर गये। उन्होंने कहा,—"लीजिये! सीढ़ी समाप्त हो गई। मैं समझता हूं, कि हमारे सामने कोई राह है। आइये, आपलोग भी चले आइये।"

सर हेनरी के पीछे गुड थे और उनके पीछे मैं था। सीढ़ी समाप्त करनेपर दियासलाई जलानेकी जरूरत हुई। दो दियासलाइयां रह गई थीं; उनमें एक मैंने जलाई। उसके प्रकाशमें मुझे दिखाई दिया, कि हमलोग सीढ़ीसे उतरके एक संकरी सङ्गीन सुरङ्गमें खड़े थे। यह सुरङ्ग सीढ़ीके दाहने और बायें दोनो ओर कुछ दूरतक जाके किसी ओर मुड़ गई थी। इससे ज्यादा देखनेका मौका न मिला; मेरी उंगलियां जलने लगीं; मैंने दियासलाईका जरासा भाग अपनी उंगलियोंसे छोड़ दिया। अब उस अंधेरेमें यह जरूरी सवाल पैदा हुआ, कि हमलोग किस ओर जायें; दाहने या बायें। इसमें शक नहीं, कि हमें उस सुरङ्गका हाल मालूम न था; न हम यही जानते थे, कि वह कहां जाती थी। फिर भी: सम्भव था, कि एक सुरङ्ग छुटकारेकी और दूसरी बरबादीकी ओर जाती हो। हम बड़ी ही कठिनतामें थे; इतनेमें गुड साहबने कहा, कि जिस समय तुमने दियासलाई जलाई थी; उस समय हवा बायेंसे आ रही थी; क्योंकि दियासलाईकी लपटें दाहने झुकी जाती थीं। उन्होंने कहा,—"हमें हवाके रुख चलना चाहिये; क्योंकि वह बाहरसे जरूर आती है; अन्दरसे बाहर नहीं जाती।"

हमलोगोंको भी यही बात पसन्द आई। दोनो हाथोंसे दीवा-रोंका सहारा लेते हुए और हर कदम संभाल-संभालके रखते हुए हमलोग उस लानती खजानेकी कोठरीकी सीढ़ी छोड़के बायें सुरङ्गमें चले। सम्भावना तो बहुत ही कम है; लेकिन हमारे पीछे अगर कभी कोई आदमी उस खजानेकी कोठरीमें घुसेगा, तो खुले हुए हीरोंके सन्दूकों; जले हुए मशाल और अभागी फौलताकी ठठरीके रूपमें हमारे छोड़े हुए निशान अवश्य पायेगा।

हमलोग आगे बढ़ने लगे। वह सुरङ्ग घूमके दूसरी सुरङ्गमें मिल गई थी; दूसरी तीसरीमें मिल गई थी। सुरङ्ग देखनेमें एक ही थी; किन्तु वह जगह-जगह मुड़के दूसरी सुरङ्गमें मिली हुई थी। घण्टोंतक हम आगे बढ़ते रहे और घण्टोंतक हमें सुरङ्गपर सुरङ्ग मिलती गई। मानो हमलोग सुरङ्गोंकी भूलभुलय्यामें घूम रहे थे; जो किसी भी खास जगहकी ओर न जाती थी। मेरी समझमें यह सुरङ्गं और कुछ नहीं; हीरेकी खानिके अन्दरकी राहें थीं। जिधर-जिधर हीरे मिलते थे; कारीगर उधर ही उधर सुरङ्गें बनाते थे।

अन्तमें हमलोग थकके ठहर गये। हमारी सारी आशाओंपर ठण्डा पानी फिर गया। भूख और प्याससे हमलोग और भी अधमरे हो गये थे। हमने अपना अन्तिम भोजन समाप्त किया। बचे हुए थोड़ेसे पानीसे अपने चिटखते हुए कण्ठ सींच लिये। हमें ऐसा ज्ञान पड़ा, कि उस खजानेकी कोठरीमें मरनेसे हमलोग इसलिये बचे थे, कि सुरङ्गोंकी भूलभुलय्यामें मरें। खा-पीके जैसे ही हमलोग फिर खड़े हुए; वैसे ही मुझे एक आवाज सुनाई दी। मैंने अपने साथियोंसे भी उसे सुननेके लिये कहा। आवाज धीमी थी सही; बहुत दूरसे आ रही थी सही; फिर भी, थी वह लगातार

होती हुई आवाज थी । मेरे साथियोंने भी उसे सुना । इतने घण्टेके बाद उस भयानक सन्नाटेमें उस आवाजके सुननेसे हमलोगोंको जो आनन्द हुआ; उसका यथार्थ वर्णन कठिन है।

गुड । भाइयो ! यह तो पानीके बहनेकी आवाज है। बस; चले आओ; मेरे पीछे-पीछे !

इस बार हमलोग दोनो हाथोंसे दीवारें टटोलते हुए उस आवाजकी ओर चले। जैसे-जैसे हम आगे बढ़े; वैसे-वैसे वह आवाज ऊंची होती गई । अन्तमें वह बड़े वेगसे सुनाई देने लगी। हमलोग बराबर आगे बढ़ते गये। इसमें सन्देह नहीं, कि वह दौड़ते हुए पानी हीकी आवाज थी । लेकिन उस पहाड़के पेटमें दौड़ता हुआ पानी कहांसे आया ? अब हमलोग उसके बहुत ही पास पहुंच गये और कप्तान गुडने कसम खाके कहा, कि वह पानी सूंघ रहे थे।

सर हेनरी । गुड ! गुड ! धीरे चलो, भाई ! पानी पास ही है।

ऐसे समय बड़े जोरका छपाका हुआ और साथ ही गुडके मुंहसे एक लम्बी चीख निकल गई। हमलोगोंने मारे डरके अधीर होके आवाज दी,—"गुड ! गुड ! कहां हो ?" साथ ही पानीसे भरे हुए मुंहसे गुडने कोई जवाब दिया। उसे सुनके हमें कुछ धीरज हुआ। इतनेमें गुडने साफ आवाजमें कहा,—"घबराओ नहीं; मैं एक चट्टानसे चिपका हुआ हूं। दियासलाई जलाके देखो तो सही, कि माजरा क्या है।"

मैंने फुर्तीसे अन्तिम दियासलाई जलाई। इसकी धुंधली रोशनीमें हमें अपने पैरोंके नीचे काले रङ्गका पानी कलकल नादके साथ बहता हुआ दिखाई दिया। इस पानीका दूसरा किनारा हम देख न सके; फिर भी, हमने इतना देख लिया, कि हमसे कुछ ही

फीटकी दूरीपर पानीसे निकली हुई एक चट्टानसे हमारे साथी गुड साहब चिपके हुए थे।

गुड। देखना, यारो! मुझे पकड़ लेना। मैं तैरके तुम्हारे पास आता हूं।

इसके बाद ही हमें फिर एक छपाका और पानी चीरनेकी आवाज सुनाई दी। दूसरे ही क्षण गुडका हाथ सर हेनरीके फैले हुए हाथमें पड़ गया। हम दोनोंने खींच-खांचके गुडको अपनी बगलमें खड़ा कर दिया।

गुडने कांपते हुए कहा,—"उफ्फोह! कैसी मुसीबतमें फँस गया था। अगर मुझे वह चट्टान न मिल जाती; या मैं तैरना न जानता होता, तो अबतक कहांसे कहां पहुंच गया होता। यह पाजी पानी गहरा भी है और आंधीकी तरह बह भी रहा है।"

गुडकी रक्षा होनेके बाद हमलोगोंने डगडगाके पानी पिया और जी भरके अपने हाथ-मुंह धोये। पानी मीठा और ताजा था। इसके बाद हमलोग अपने पानीके पात्र भरके वहांसे चलनेपर तय्यार हुए। पानीके किनारे-किनारे चलनेसे अन्धकारमें पैर फिसलने और पानीमें गिरनेका डर था; इसलिये हमलोग जिस राहसे वहां पहुंचे थे; उसीसे वापस लौटे। पानी टपकाते हुए गुड हम सबके आगे थे। अन्तमें हमलोग एक ऐसी सुरङ्गमें पहुंचे, जो दाहने जाती थी।

सर हेनरीने रुकताके कहा,—"आइये, हमलोग इसी राहसे चलें। इस अन्धकारमें हमारे लिये सभी सुरङ्गें समान हैं। फिर भी; तबतक हमलोगोंको चलना ही चाहिये, जबतक हम चलते-चलते गिर न पड़ें।"

अब सर हेनरी आगे-आगे चले और हमलोग उनके पीछे-पीछे। हम घण्टोंतक चलते रहे। चलते-चलते हमारे पैरोंमें छाले

पड़ गये; हमारे पैर डगमगाने लगे। ऐसे समय सर हेनरी एकाएक ठहर गये। मैं उनकी पीठसे और गुड मेरी पीठसे टकरा गये।

हेनरी। देखो! वह सामने देखो! मेरी आंखें मुझे धोखा दे रही हैं या सचमुच ही वह सामने रोशनी दिखाई देती है?

हमलोग आँखें फाड़-फाड़के देखने लगे। सचमुच ही दूर—बहुत दूर—किसी मकानके छोटे झरोखेजैसी रोशनी दिखाई दे रही थी। वह इतनी धुंदली थी, कि अगर हमलोग इतने घण्टोंसे उस अन्धकारमें न होते, तो हमें हरगिज दिखाई न देती।

धड़कती हुई छातीसे हमलोग आगे बढ़ने लगे। पांच ही मिनट बाद सारा सन्देह मिट गया। सचमुच ही वह रोशनी ही थी। दो-ही चार मिनट बाद साफ हवाके झोंके हमारे चेहरोंपर पंखा झलने लगे। हमलोग और भी आगे बढ़े। दो ही चार कदम आगे बढ़नेपर हमें वह सुरङ्ग और भी संकरी होती हुई दिखाई दी। सर हेनरी खड़े होके चल न सकते थे; वह हाथ-पैरके बल चलने लगे। आगे चलके सुरङ्ग और भी सँकरी हो गई। हमें ऐसा जान पड़ता था, मानो हम सुरङ्गमें नहीं; किसी बड़े पशुके बिलमें जा रहे हों। चट्टानें पीछे छूट गई थीं; अब वहां हमें अपने चारों ओर मिट्टी दिखाई देती थी।

कुछ रेल-पेल और जोर लगानेके बाद पहले सर हेनरी उस बिलके बाहर निकले। उनके पीछे मेरा और गुडका भी उद्धार हुआ। उस बिलके बाहर निकलनेपर हमें चमकीले तारे आस्मानमें दिखाई दिये; खेलती हुई हवासे पृथिवी आनन्दमयी दिखाई दी। ऐसे समय हमारे पैरोंके नीचेकी जमीन खिसकी और हम तीनों गीली मिट्टी; नर्म घास और छोटी-छोटी झाड़ियोंके ऊपरसे लुढ़कते हुए नीचे चले।

बहुत दूरतक लुढ़कनेके बाद अन्तमें मैं एक बड़ी झाड़ी पकड़के बैठ गया और लगा गला फाड़-फाड़के अपने साथियोंको बुलाने। पहले सर हेनरीने जवाब दिया। आप मुझसे कुछ ही नीचे एक सम-भूमिपर खड़े थे। मैं खिसकता हुआ उनके पास पहुंचा। उन्हें चोट-चपेट न आई थी; लेकिन उनका दम फूल रहा था। अब हम दोनो गुडको ढूंडने लगे। हमसे कुछ ही दूरपर वह भी एक चट्टानकी दो निकली हुई भुजाओंके बीचमें पड़े थे। वह भी बहुत कुछ बेदम हो गये थे; फिर भी; कोई पाव घण्टेमें उनके भी होश-हवास दुरुस्त हो गये।

हम तीनो वहांकी नर्म घासपर बैठ गये। स्थिति एकाएक बदल जानेके आनन्दसे हम तीनोंकी आंखोंसे आंसू बहने लगे। बड़े खतरेसे हमारी रक्षा हुई था। दयामय भगवान् ही हमें उस सुरङ्गके छोरपर बने हुए स्यारकी मांदसे बाहर निकाल लाये। ऐसे समय पूर्वके आकाशमें प्रकाश फैलने लगा। काली रात बीती, सवेरा अपनी झलक दिखाने लगा।

जरा रोशनी बढ़नेपर हमें दिखाई दिया, कि हमलोग उन तीनो विशाल मूर्त्तियोंके सामनेके उस विशाल गड्ढेके तलदेशमें बैठे हुए थे। वह तीनो विशाल मूर्त्तियां हमें अपने सामने दिखाई देती थीं। इसमें शक नहीं, कि रातभर हम जिन सुरङ्गोंमें भटके थे, वह हीरेकी खानिकी ही सुरङ्गें थीं। रह गई नदी; उसके बारेमें हम कुछ भी समझ न सके। वह न जाने कहांसे आती और कहां जाती थी। मुझे उसके जाननेकी चिन्ता भी न थी।

धीरे-धीरे दिनका प्रकाश बढ़ा। अब हमलोग एक दूसरेको देख सके। ऐसी बेहूदी सूरतें हमने जन्मभरमें देखी न थीं। हमारे गाल बैठे हुए थे, आंखें धंसी हुई थीं; सिरसे पैरतक धूलि और कीचड़ पुता हुआ था; हमारी खराशों और चोटोंसे खून बह रहा

था; यमराजकी दाढ़में रहनेका भयानक भय हमारे चेहरे झलक रहा था। इसमें सन्देह नहीं, कि हमारी सूरतें देखके सुन्दर सवेरेका नर्म प्रकाश डर गया होगा। लेकिन इतना भी कप्तान गुडकी एक आंखका चश्मा अपनी जगह बैठा था। शायद उन्होंने उसे सारी रात उतारा ही न था। मौतके डरने; भयानक अन्धकारने; सुरङ्गोंकी भूलभुलय्यांने; पानीके छपाकेने; फिर अन्तमें उस गड्ढेके अन्दरकी लुढ़काईने; किसीने भी; गुडको उनके चश्मेसे जुदा न किया।

अन्तमें हमलोग उठे और बड़ी कठिनतासे उस गड्ढेमें ऊपर चढ़ने लगे; क्योंकि हमें भय था, कि अधिक बैठनेसे हमारी मांस-पेशियां ठण्डी होके कड़ी हो जायेंगी। कोई एक घण्टेतक हम घासोंकी जड़ें और झाड़ियोंकी शाखायें पकड़के ऊपर खुले आकाशकी ओर चढ़ते रहे। अन्तमें हम गड्ढेसे निकलके उन तीनों मूर्त्तियोंके सामनेकी सुलैमान-राहपर जा खड़े हुए।

वहांसे कोई एक सौ गज दूर एक झोपड़ेके सामने आग जल रही थी और उस आगके किनारे कितनी ही सूरतें बैठी हुई थीं। हमलोग लड़खड़ाते और एक दूसरेको सहारा देते हुए उन सूरतोंकी ओर बढ़े। अन्तमें एक सूरत खड़ी हो गई; उसने गौरसे हमें देखा; इसके बाद वह मारे डरके जमीनपर गिर गई।

मैं। इनफादूस! इनफादूस! डरो मत। हम और कोई नहीं: तुम्हारे वही मित्र हैं।

वह इनफादूस ही था। मेरी बात सुनते ही वह उठा और दौड़के हमारे पास आया। वह अभीतक डरसे कांप रहा था।

इनफादूस। साहबो! साहबो! आपलोगोंने दूसरा जन्म पाया है।

इसके बाद ही वह बूढ़ा सेनापति हमें अपने गलेसे चिपका-चिपकाके रोने लगा।

उन्नीसवां बयान।

इगनोसीसे बिदा।

उस यादगार सवेरेके दसवें दिन हमलोग लूके अपने उसी पुराने झोपड़ेमें पहुंच गये और बड़ा आश्चर्य्य इस बातका है, कि सही-सलामत पहुंच गये। हां; इतना अवश्य हुआ, कि उस गुफामें घुसनेसे पहले मेरे बाल जितने सफेद थे; बाहर निकलनेपर उससे कहीं अधिक सफेद हो गये थे और फौलताकी मौतके बादसे कप्तान गुडकी जिन्दादिली बहुत कुछ भाग गई थी। मेरी समझमें, तो फौलताकी मौत ही अच्छी थी; कारण, उसका और कप्तान गुडका विवाह कभी हो न सकता और शानदार फौलता बिना विवाहके कप्तान गुडके हाथ जन्मभर रहना स्वीकार न करती।

यह कहनेका प्रयोजन नहीं, कि हमलोग उस हीरेके खजानेकी कोठरीमें फिर पहुंच न सके। इनफादूसके उस झोपड़ेमें कोई अड़तालीस घण्टे विश्राम करनेके बाद हमलोग उस स्यारकी मांदका मुंह ढूंढनेके लिये उस विशाल गड्ढेमें उतरे। इससे पहले पानी बरस जानेके कारण हमारे बनाये हुए सारे निशान मिट गये थे और उस गड्ढेमें चींटियोंके, भालुओं और स्यारोंके इतने मांद थे, कि उन सबमें उस विशेष मांदका ढूंढ निकालना कठिन हो गया। दूसरे दिन सवेरेसे सन्ध्यातक हम उस मांदको ढूंढते रहे; फिर भी, कोई नतीजा न निकला। लौटनेके दिन सवेरे हमलोग उस गुफामें घुसके मौतके कमरेतक पहुंचे। वहां भी हमने उस

चट्टानके द्वारके ढूंढनेका बड़ा यत्न किया। किन्तु न तो हमें वह द्वार ही मिला; न उस द्वारको उठानेवाला कल-कांटा ही। बहुत झक मारनेके बाद अन्तमें अपनेसे मुंह लेके हम वापस लौट आये। उन हीरोंकी ओरसे हम निराश हो गये। शायद महाप्रलयतक फौलताकी हड्डियां और वह हीरे उस कोठरी हीमें रहेंगे।

बड़ी ही निराशाके साथ हमलोग लूकी ओर लौटे। सन्तोषकी बात इतनी ही थी, कि खजानेकी कोठरीसे निकलते समय जो हीरे मैंने अपनी जेबोंमें भर लिये थे, वह मेरे पास थे। उस मांदसे निकलनेपर लुढ़कके गढ़्ढ़ेमें गिरनेके समय बहुतेरे हीरे मेरी जेबसे गिर गये थे। मैंने अपनी जेबमें बड़े-बड़े हीरे ऊपर ही रखे थे और दुःखकी बात है, कि अधिकांश बड़े ही बड़े हीरे मेरी जेबसे गिर गये थे। फिर भी; मेरे पास जो हीरे थे, वह कम न थे। वह मुझे और गुड साहबको अगर बहुत बड़ा धनी नहीं, तो जन्मभरके लिये धनी जरूर बना सकते थे। इसतरह हमारी यह सारी दौड़-धूप निष्फल नहीं गई।

हमारे लू पहुंचनेपर इगनोसीने बड़ी धूमधामके साथ हमारा स्वागत किया। वह हालकी लड़ाईमें निर्बल होनेवाली अपनी फौजोंको पुष्ट करने और अपने सामन्त-सरदारोंको अपना मित्र बनानेके यत्नमें लगा था। उसने हमारी यात्राकी सारी बातें ध्यानपूर्वक सुनीं। गगुलकी मौतका समाचार पाके उसे बड़ा आनन्द हुआ। उसने कहा, कि मैंने यहांके बड़े-बूढ़ोंसे सुना है, कि वह चुड़ैल इतनी बुड्ढी थी, कि उसकी उम्रका आन्दाजा इस कुकुवाना देशका कोई भी अधिवासी लगा न सकता था; आजन्म वह खून-खराबी ही करती रही; बड़े आनन्दकी बात है, कि वह मरके इस देशकी छाती हलकी कर गई।

अन्तमें मैंने इगनोसीसे कहा—"राजा, इगनोसी! दोस्त इगनोसी! अब हमलोग कुकुवाना देशसे जाया चाहते हैं; क्योंकि हमें अपने देशकी याद व्याकुल बना रही है। तुम नौकर होके इस देशमें आये थे; और आज राजा बनके सारे देशका शासन कर रहे हो। भगवान्ने तुमपर जब इतनी दया दिखाई है, तब तुम भी भगवान्‌को सदा याद रखना और कुकुवाना देशमें किसी तरहकी भी व्यर्थकी खून-खराबी और अत्याचार होने न देना। इसके फलसे तुम सदा सुखी रहोगे। कल सवेरे, इगनोसी! हमलोग तुमसे विदा होंगे। तुम शीबा-पहाड़ पार करा देनेके लिये हमारे साथ कुछ आदमियोंके भेजनेका बन्दोबस्त कर देना।"

यह सुनके इगनोसीके चेहरेका रङ्ग उड़ गया। उसका गला इतना भर आया, कि वह कुछ देरतक मेरी बातका जवाब दे न सका। अन्तमें उसने बड़ी ही भर्राई हुई आवाजमें कहा,—"मेरे दोस्त! तुम्हारी इस बातसे मेरी छातीपर चोट हुई है। मैंने तुमलोगोंका क्या बिगाड़ा है, कि तुम मुझे इतना कठोर दण्ड दिया चाहते हो? धन, जन, मवेशी, भूमि जो कुछ मांगो; मैं देनेको तय्यार हूं; लेकिन तुम लोग मुझे छोड़के यहांसे न जाओ।"

मैं। लेकिन हमलोगोंको इन सब चीजोंका प्रयोजन नहीं।

इगनोसी। तो क्या तुमलोग सिर्फ चमकीले पत्थरोंके लिये ही यहां आये थे?

मैं। मेरे प्यारे इगनोसी! जब तुम जूलू या नेटालमें भटक रहे थे, तब क्या तुम्हारे मनमें भी अपनी जन्मभूमि देखनेकी इच्छा होती नहीं थी?

इगनोसी। होती क्यों नहीं थी?

मैं। तो इसी तरह हीरोंके पानेके कारण नहीं; अपनी जन्मभूमि देखनेकी इच्छाके कारण हमलोग इस देशसे जाया चाहते हैं।

यह सुनके इगनोसी कुछ देरतक चुप रहा। अन्तमें उसने धीरे-धीरे कहना आरम्भ किया,—"जब तुम्हारा ऐसा ही विचार है, दोस्तो! तो मुझे मेरी किस्मतपर छोड़के तुम लोग अपने देश वापस जाओ। लेकिन अपने गोरे भाइयोंसे यह बात कह देना, कि अगर वहलोग यहां आयेंगे, तो मैं उन्हें अपने देशमें घुसने न दूंगा। वह अगर चमकीले पत्थरोंके लोभमें फौज लायेंगे, तो मैं अपनी फौजोंसे उनका सामना करूंगा। मैं उस गुफाको और उस खजानेको तुड़वाके मिट्टीमें मिलवा दूंगा; लेकिन विदेशियोंको यहां बैठने न दूंगा। हां, तुम तीनोंकी बात और है। तुम मेरे मित्र हो और मेरी भुजायें तुम्हारा स्वागत करनेके लिये सदा खुली रहेंगी।

"कल सवेरे मेरे चाचा इनफाडूस अपनी पूरी फौजके साथ तुम्हें शैबा-पहाड़के उस पारतक पहुंचाने जायेंगे। मेरे चाचाको उस पहाड़के पार करनेकी एक दूसरी राह भी मालूम है; इससे तुमलोग और भी आसानीसे वह पहाड़ तय कर सकोगे। विदा! मेरे प्यारे मित्रो। मेरे वीर गोरे भाइयो; विदा! अब मैं तुमसे विदा होते समय न मिलूंगा; क्योंकि इससे मुझे और भी दुःख होगा। तुम्हारी वीरताके गीत सारा कुकुवाना देश गायेगा; तुम्हारी यादपर मेरी आंखें सदा आंसू बरसायेंगी। मेरी आन्तरिक कामना है, कि तुमलोग सदा सुखी रहो।"

यह कहके इगनोसीने हम तीनोंसे बारी-बारीसे हाथ मिलाया। इसके उपरान्त कुछ देरतक हमें देखते रहनेके उपरान्त वह रो पड़ा। हम तीनो भी अपनी आंखोंके आंसू संभाल न सके। बिना कुछ बोले-चाले हम एक दूसरेसे सदाके लिये जुदा हुए।

दूसरे दिन सवेरे इनफाडूस और पूरी भूरी फ़ौजके साथ हमने लू परित्याग किया। लू शहरके अन्दर हमारी राहकी दोनों ओर

हमारा विदा-सम्मान करनेके लिये सिपाहियोंकी पंक्तियां और उनके पीछे नगरके स्त्री पुरुषोंकी भीड़ जमा थी। सिपाही हमारी सलामियां उतारते थे; स्त्रियां हमपर फूलोंकी वर्षा करती थीं। उनके इस सम्मानसे हमारे भरे हुए दिल और भी भर आये।

राहमें हमलोगोंसे इनफादूसने कहा,—"अबसे कोई दो साल पहले कुकुवाना सिपाहियोंके सरोंपर खोंसे जानेवाले परोंका संग्रह करनेके लिये हमारे बहुतेरे सिपाही शैबा-पहाड़के उसपार शुतरमुर्गका शिकार खेलने गये। शिकार खेलते-खेलते वह सब बयाबानमें भटक गये और लगे प्याससे व्याकुल होके तड़पने। अन्तमें उन्हें एक मरुद्वीप मिला, जिसकी हरियालीमें भरे हुए पानीके डबरोंसे अपनी प्यास बुझाके वह सब एक नई राहसे इस देशमें लौटे। वह नई राह और वह पानीसे हरा-भरा मरुद्वीप सुलैमान-राहके बहुत उत्तर है। इस देशसे जानेके लिये आप-लोगोंको वही राह दिखाई जायेगी।"

चौथे दिन सन्ध्याको हमलोग कुकुवाना-देश और उस बया-बानके बीचकी कुदरती दीवार शैबा-पहाड़के माथेपर पहुंचे। जिस जगह हमारा पड़ाव हुआ; वह जगह सुलैमान-राह या दोनो शैबा-स्तनसे कोई साढ़े बारह कोस उत्तर था। हमारे आगे पहाड़के नीचे वह बयावान था। बयावानके बीचोबीच द्वीपकी तरह वृक्षोंका एक विशाल झुण्ड खड़ा दिखाई देता था।

दूसरे दिन बड़े सवेरे हमने इनफादूस और भूरी फौजसे विदा ली। इनफादूस हमें विदा करते समय रो दिया। उसने कहा,—"आप तीनो गोरोंजैसे वीर मैंने अपने-जीवनमें कभी देखा न था। विशेषतः इन गोरे हाथीका बल अपूर्व और असाधारण है। ट्वालाकी गर्दनपर पड़नेवाली इनके कुल्हाड़ेकी चोटको मैं इस जीवनमें कभी न भूलूंगा।" हमलोग भी इनफादूससे अन्तिम विदा

लेते समय बहुत ही दुःखी हुए। कप्तान गुडके पास दोनो आंखोंका एक चश्मा था। चलते समय उसे उन्होंने इनफादूसको दिया और वह उसे आंखोंपर लगाके फूले अङ्ग न समाया।

भूरी फौजकी 'कूम' सलामीके गर्जनके साथ-साथ हम असबाबसे लदे हुए अपने पांच कुकुवाना कुलियोंको लेके शैबा-पहाड़के नीचे उतरे। वहां कोई नियमित राह न होनेके कारण हमें पहाड़से उतरनेमें बड़ी तकलीफ हुई। अन्तमें यह कठिनता समाप्त हुई। सन्ध्या समय हम शैबा-पहाड़ छोड़के उस रेगके बयाबानके किनारे पड़ाव डालके ठहरे। राहका भोजन समाप्त करनेपर सोनेसे पहले सर हेनरीने शैबा-पहाड़की ओर देखके कहा,—"दोस्तो! मुसीबतें मैंने बहुतेरी सही हैं; भयसे भी बहुतेरे बार सामना कर चुका हूं; लेकिन जैसी उत्तेजनापूर्ण घटनायें कुकुवाना देशमें दिखाई दीं; वैसी घटनायें मैंने अपने जीवनमें कभी देखी न थीं।"

इसपर गुड साहबने एक ठण्डी सांस खींचके कहा,—"मेरा बश चलता, तो मैं कुकुवाना देश कभी न छोड़ता।"

हमलोग उस बयाबानमें दो दिनतक बराबर आगे बढ़ते गये। हमारे कुलियोंके पास पानी बहुत था; इसलिये इस सफरमें हमें कोई तकलीफ न हुई। तीसरे दिन तीसरेपहर हम उस मरुद्वीप या रेगस्तानके बीचके उस हरे-भरे वृक्षोंके झुण्डमें पहुंच गये। वहां पहुंचते ही हमें पानीके लहरानेकी ठण्डी आवाजें सुनाई देने लगीं। उन्हें सुनके हमारी आत्मा शान्त हो गई।

बीसवां बयान ।

मिलाप ।

यह कैसी विचित्र घटना ? उन सदाबहार वृक्षोंके झुण्डमें घुसनेपर मैं अपने साथियोंके आगे-आगे उस सोतेके किनारे-किनारे आगे बढ़ रहा था; जो उस मरुद्वीपसे निकलके मरुभूमिमें पहुंचनेपर सूख जाता था; ऐसे समय मुझे एक बड़ा ही अनूठा दृश्य दिखाई दिया। मुझसे कोई बीस गज दूर बड़े ही रमणीय स्थलमें; उस सोतेके किनारे लगे हुए अञ्जीरके बड़े-बड़े वृक्षोंके बीच एक बड़ा झोपड़ा दिखाई दिया। काफिरोंके झोपड़ोंमें द्वार नहीं होते; हाथ-पैरके बल घुसने लायक सूराख होते हैं; लेकिन इस विचित्र झोपड़ेमें सूराखके बदले दरवाजे और खिड़कियां बनी हुई थीं।

उसे देखके मैंने मन ही मन कहा, कि यह विचित्र झोपड़ा किसका हो सकता है। ऐसे समय उस झोपड़ेका द्वार खुला और उसके अन्दरसे लंगड़ाता हुआ एक 'गोरा' आदमी निकला। उसके कपड़े चमड़ेके थे और उसकी दाढ़ी और बाल बहुत ही बढ़े हुए थे। मैं सोचने लगा, कि कहीं मेरी आंखें मुझे धोखा तो नहीं दे रही थीं; भला उस बयाबानमें गोरा आदमी कैसा ? ऐसे समय गुड और हेनरी भी मेरे पास पहुंच गये।

मैं। देखिये, वह सामने गोरा आदमी ही है न; या मेरी अक्ल मारी गई है ?

सर हेनरी और गुड उस गोरे आदमीको देखने लगे। उधर वह भी हमलोगोंको देखने लगा। ऐसे समय उसने बहुत जोरकी एक चीख मारी और लंगड़ाता हुआ हमलोगोंकी तरफ

बैठा। इधर सर हेनरीने झपटके उस गोरे आदमीको अपनी छातीसे लगाके कहा,—"भाई! भाई!"

ऐसे समय एक काला आदमी बन्दूक हाथमें लेके झोपड़ेसे निकला। उसने मुझे देखते ही कहा,—"वाह! क्या आप मुझ जिमको बिल्कुल ही भूल गये?"

मैं। जिम-जिम! तू यहां कहां? पाजी! नालायक!

अब हमलोग सर हेनरी और उनके भाई नेविल्लेके पास जा खड़े हुए। सर हेनरीने कहा,—"नेविल्ले! मैं तुम्हारी खोजमें कुकुआना देशतक ही आया हूं।"

नेविल्ले। मैं भी वहां जाया चाहता था; लेकिन पहाड़पर चढ़ते समय मेरे पैरपर एक चट्टान आ पड़ी। मैं लंगड़ा हो गया। मैं आगे भी जा न सका; पीछे भी लौट न सका। लाचार; यहीं झोपड़ा बनाके रहने लगा।

मैं। क्यों नेविल्ले साहब! आप मुझे भी पहचानते हैं?

नेविल्ले। कौन, अलान साहब? और यह कौन;—गुड; कप्तान गुड? उफ! इतने दोस्तोंका एक साथ मिलन? मेरा सर चकराता है।

हमलोग नेविल्लेके झोपड़ेमें गये। राबिनसन क्रूसोके झोपड़ेकी तरह यह झोपड़ा भी जीवनोपयोगी सभी सामानसे सजा हुआ था। नेविल्ले दो वर्षसे उसी झोपड़ेमें रहते और शिकारपर अपना गुजारा करते थे। सारे दिन नेविल्ले सर हेनरीको और सर हेनरी नेविल्लेको; अपनी-अपनी बीती सुनाते रहे।

उस दिन सन्ध्याको सोनेसे पहले मैंने अपने कुल हीरे सर हेनरीके सामने रखे और उनसे प्रार्थना की, कि आप इसके चार हिस्से करें और हम चारोंमें बांट दें। सर हेनरी और नेविल्लेने उन हीरोंके लेनेसे साफ इनकार किया। सर हेनरीने कहा, कि

प्रभुने मुझे बहुत कुछ दिया है और मैं अपने भाईको किसी तरहकी भी तकलीफ होने न दूंगा। इतना कहके उन्होंने वह हीरे दो हिस्सोंमें बांट दिये। एक हिस्सा कप्तान गुडको मिला और दूसरा मुझे।

* * * *

इसके बाद और भी कुछ कहना है? हमलोग उस मरुद्वीपसे सीतान्दा क्रालतक सकुशल वापस पहुंचे। राहमें हमें अधिक क्लेश न हुआ। हां; लँगड़े नेविल्लेको सहारा देके चलानेमें हम-लोगोंको बड़ी दिक्कत हुई।

सीतान्दा क्रालमें हमने उस बुड्ढे काफिरसे अपनी बन्दूकें वापस लीं। वह पाजी हमलोगोंको सही-सलामत देखके आनन्दित होनेके बदले बड़ा ही दुःखी हुआ; क्योंकि वह सोचा करता था, कि अगर हमलोग वापस न लौटेंगे, तो हमारी सारी बन्दूकें उसकी हो जायेंगी। सीतान्दा क्रालसे लौटते समय हमने अपने वह जमीनमें गड़े हुए हाथीदांत भी अपने साथ ले लिये।

सीतान्दा क्रालसे हमलोग दरबन लौटे। मेरे मकानमें कुछ दिनोंतक विश्राम करनेके उपरान्त सर हेनरी, निविल्ले और कप्तान गुड मुझसे विदा होके जहाजकी सवारीसे इङ्गलेण्ड वापस गये।

कुछ समयके बाद दरबनमें मुझे सर हेनरीकी इङ्गलेण्डसे भेजी हुई एक चिट्ठी मिली। उसका देखने लायक मर्म इसतरह है;—

"प्यारे अलान!

मैं अपने पहले पत्रमें अपनी पहुंचका समाचार लिख चुका हूं। मेरे भाई नेविल्लेके पैरकी चोट अच्छी हो रही है। इन दिनों यहां कप्तान गुड बहुत ही बन-ठनके बाहर निकला करते हैं। जब मैं अपने

दोस्तोंसे उनके बड़े पैर और आधी दाढ़ीका हाल कहता हूं, तो वह मुझपर बहुत नाराज हुआ करते हैं।

"कल मैं गुडके साथ यहांके कितने ही बड़े-बड़े जौहरियोंसे मिला। उन लोगोंने इन हीरोंका जो लम्बा-चौड़ा दाम लगाया है; उसे सुनके मैं दङ्ग रह गया हूं। वह सब धीरे-धीरे यह सब हीरे खरीद लेनेपर तय्यार हैं। कप्तान गुडके हिस्सेका चौथाई हीरा कोई तीस लाख रुपयेपर बिकेगा। मेरी विनय है, कि आप भी अपने हीरे लेके लौटते डाक-जहाजसे यहां आ जायें, तो यह सौदा अच्छी तरहसे हो जाये। मैं खरीद-फरोख्तका काम नहीं जानता। कप्तान गुड दिनभर अपने शृङ्गारमें लगे रहते हैं। इसलिये यहां आपकी बड़ी जरूरत है।

"मैं यह भी चाहता हूं, कि यहां आके और अपने हीरे बेचके अब आप अपनी इस मातृभूमिमें एक मकान खरीद लें। आप बहुत दिनोंतक दक्षिण-अफरिकामें रह चुके। मेरी जमीन्दारीके पास ही एक बड़ी ही सुन्दर जमीन्दारी मय मकानके बिकनेको है। आप आके उसे भी देख लें और पसन्द आये, तो खरीद लें। आपके बेटेके स्कूलमें छुट्टी होनेके । छुट्टीपर वह मेरे ही साथ रहेगा। कप्तान गुड और नेविल्ले भी आपको बहुत याद करते हैं।

"मुझे विश्वास है, कि यह चिट्ठी समाप्त करते ही आप यहां आनेकी तय्यारी करेंगे।

आपका हेनरी।"

आज मङ्गलवार है। शुक्रवारको डाकका जहाज इङ्गलेण्ड जायेगा। मैंने उसी जहाजसे इङ्गलेण्ड पहुंचके सर हेनरी, नेविल्ले, अपने बेटे और कप्तान गुडसे मिलनेका इरादा कर लिया।

इति शुभम्।

एच० के० जौहर द्वारा

हिन्दी प्रेस, मामूरगञ्ज, बनारस-सिटीमें मुद्रित और प्रकाशित

काशी प्रेस, ...